मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 60 | अंक : 08 | फरवरी, 2020 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

चित्र वीथिका

माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर

गणतंत्र दिवस समारोह-2020

दुनिया को अपना सर्वश्रेष्ठ दीजिए और आपके सर्वश्रेष्ठ लौटकर आएगा।

–स्वामी दयानंद सरस्वती

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 60 | अंक : 8 | माघ शु.– फाल्गुन शु. २०७६ | फरवरी, 2020

प्रधान सम्पादक
हिमांशु गुप्ता

वरिष्ठ सम्पादक
अनिल कुमार अग्रवाल

सम्पादक
मुकेश व्यास

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 011
दूरभाष : 0151–2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **–वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- परीक्षा : मूल्यांकन सभी का 5

आलेख
- गाँधी जीवन : आदर्शों की प्रयोगशाला 6
  शबनम भारतीय
- महात्मा गाँधी विषयक प्रकाशन 7
  कृष्ण वीर सिंह सिकरवार
- युग प्रवर्तक : स्वामी दयानंद 9
  लखन पाल सिंह
- सरल जीवन के सात सरल नियम 10
  बिग्रेडियर करण सिंह चौहान
- क्रिया कलाप आधारित शिक्षण में शिक्षक और समुदाय की भूमिका 13
  डॉ. राम निवास
- हम भी करें – शिक्षा में नवाचार 17
  जुगराज राठौर
- जीवन एक चुनौती है 18
  नवनीत जैन
- स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र प्रगति के लिए राष्ट्रीय पहल 19
  चैनाराम सीरवी
- एक ही संकल्प : प्लास्टिक हटाना 20
  राकेश
- सफलता का रहस्य : आत्मविश्वास 21
  मेघाराम थाकण
- स्वास्थ्य और परीक्षा 22
  डॉ. श्याम सिंह राजपुरोहित
- कलरव, कुरजां और खोटा सिक्का 32
  डॉ. मदन गोपाल लढ़ा
- बालिका शिक्षा की महत्ता 34
  सालगराम परिहार
- पाठ्य सहगामी क्रियाएँ
  रवि कुमार गुप्ता
- जैसलमेर यात्रा के अनुभव 36
  जीताराम
- संयुक्त निदेशक कार्यालय चूरू की अनुकरणीय पहल 37
  अभिनव सरोवा

रपट
- विभागीय मंत्रालयिक खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता सम्पन्न 8
  आनन्द सिंह
- युवा पीढ़ी स्वामी विवेकानन्द के आदर्शों को अपनाएँ 39
  सवाई सिंह
- 17 वर्ष छात्र–छात्रा वर्ग में राजस्थान को 4 गोल्ड व 2 सिल्वर मेडल 39
  सत्यपाल गोदारा
- राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल 'मीरा' एवं 'एकलव्य' पुरस्कार 40
  मोहन गुप्ता मितवा

स्तम्भ
- पाठकों की बात 4
- आदेश–परिपत्र 23–31
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 31
- पञ्चाङ्ग (फरवरी, 2020) 31
- बाल शिविरा 43–44
- शाला प्रांगण 45–48
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50

पुस्तक समीक्षा 41–42
- रेत में नहाया है मन 41
  लेखक : डॉ. नीरज दइया
  समीक्षक : डॉ. सत्य नारायण
- अन्तर्यात्रा एक योगी की 42
  लेखक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
  समीक्षक : प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

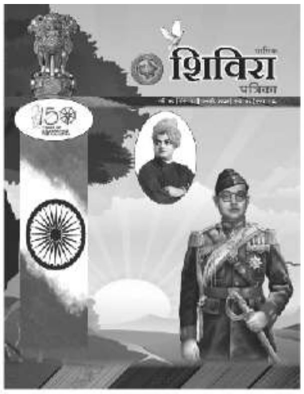

▼ चिन्तन

मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यों मित्रारिपक्षयोः।
सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः सा उच्यते।।

भावार्थः जो मान और अपमान में सम है, मित्र तथा वैरी में भी सम है एवं सम्पूर्ण कर्मों में कर्तापन के अभिमान से रहित है, वह पुरुष गुणातीत कहा जाता है।

पाठकों की बात

- सादर वन्दे ! शिविरा के दिसम्बर 2019 के अंक का आवरण पृष्ठ उद्देश्यपरक एवं चित्ताकर्षक था। मानवाधिकार दिवस को केन्द्र में रखकर सज्जा प्रेरणास्पद- बहुत सारे शब्दों के बिना बात कह दी गई। शैक्षिक चिन्तन शृंखला के अन्तर्गत डॉ. डी.डी. गौतम का आलेख 'औपचारिक शिक्षा की बुनियाद-गुणवत्तापूर्ण पूर्व प्राथमिक शिक्षा' प्रभावोत्पादक था। डॉ. गौतम ने पूर्व प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता, उद्देश्य एवं वर्तमान स्थिति पर सूक्ष्म दृष्टि से प्रकाश डाला है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा बीते वर्षों में शायद इतनी आवश्यक नहीं रही होगी जितनी आज आवश्यक एवं प्रासंगिक है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता उन बच्चों को तो है ही जिनके अभिभावक अशिक्षित है, मजदूरी करते हैं साथ ही शिक्षित एवं नौकरीपेशा अभिभावकों के बच्चों को भी इसकी जरुरत समान रुप से है। इसी दिशा में शिक्षा विभाग के प्रयास सतत जारी है। शीघ्र ही सरकारी स्कूल में अध्ययन की इच्छा रखने वाले बच्चों को पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्रशिक्षित शिक्षकों से प्राप्त होगी। शिविरा का स्थाई स्तंभ दिशा कल्प सदैव की तरह प्रेरणास्पद था।

डॉ. श्याम बिहारी शर्मा,राजसमन्द

- माह जनवरी, 2020 की शिविरा अंक मुझे समय पर मिला। शिक्षा विभागीय राज्यस्तरीय मंत्रालयिक एक सहायक कर्मचारी को सम्मानित कार्मिक को देखकर मन प्रसन्नचित्त हुआ। निदेशक महोदय जी ने कहा कि हमें अपनी ऊर्जा का शत-प्रतिशत देते हुए दृढ़ संकल्पित होकर कार्य करना चाहिए। शिविरा में पिछले कुछ वर्षों से लेख अच्छे छप रहे हैं। मैं शिविरा के सम्पादक महोदय की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ और आशा करता हूँ कि अच्छे लेखकों के लेख पढ़ने को मिलेंगे। मेरा निवेदन रहेगा वरिष्ठ सम्पादक महोदय जी से लेखकों का मानदेय बहुत कम, महंगाई को देखते हुए मानदेय कम से कम 500 रुपये या अधिक मिलना चाहिए। आशा करता हूँ कि आप मेरे इस प्रस्ताव पर गौर अवश्य करेंगे।

सन्तोष शर्मा, बीकानेर

- माह जनवरी, 2020 का शिविरा मुखपृष्ठ वाला अंक प्राप्त हुआ। दिशाकल्प के माध्यम से निदेशक महोदय ने शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को नई ऊर्जा से कार्य करने की प्रेरणा प्रेषित की है। हमारा संविधान आलेख ज्ञानोपयोगी रहा। महिला सुरक्षा के दृष्टिकोण हेतु आत्मरक्षा के टिप्स लेख सामाजिक सुरक्षा एवं महिला सशक्तीकरण का बेहतर उपाय समझा गया। सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद।

महेश आचार्य, नागौर

- माह जनवरी 2020 का शिविरा अंक मिला। सुन्दर व बेहतरीन आवरण के साथ वह भी समय पर। दिशाकल्प के माध्यम से निदेशक महोदय ने 'नई ऊर्जा और नए संकल्प' के माध्यम से हम सभी को प्रेरित किया। शिक्षा निदेशालय के नवीन निदेशक महोदय जी का परिचय शिविरा में प्रकाशित करना महत्त्वपूर्ण रहा। शिविरा में संग्रहित आलेखों में देवेन्द्र पण्ड्या का 'उस त्याग को नमन', शंभूदयाल अग्रवाल का 'विश्व की महान विभूति है गाँधी' वृद्धिचंद गोठवाल का 'विद्यालय वातावरण का मूल्यांकन, चैनाराम सीरवी का 'स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक चिन्तन तथा वेद प्रकाश कुमावत का 'गाँधी महाप्रयाण' शैक्षिक चिन्तन को और अधिक प्रभावी बनाने में सहायक है। इसी प्रकार परीक्षाओं को लेकर हरीश कुमार वर्मा का 'माध्यमिक शिक्षा बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु सार्थक प्रयास' राजकुमार तोललिया का बोर्ड परीक्षाओं में अच्छे अंक कैसे प्राप्त करें तथा बृजेश कुमार सिंह का 'रसायन विज्ञान : ट्रिक आधारित शिक्षण छात्रों व शिक्षकों के लिए समयानुकूल है। तेलवाल उपाध्याय का 'राज्य शैक्षिक अधिकारी संस्था : आर.एस.सी.ई. आर.टी. के बारे में जानकारी देकर महत्त्वपूर्ण शिक्षा संस्थान का परिचय करवाकर सम्पादक मण्डल धन्यवाद का पात्र है। शिविरा में प्रकाशित स्थाई स्तंभ में शाला प्रांगण, बाल शिविरा नए रंग रूप में की जा रही प्रस्तुति शाला की गतिविधियों एवं छात्र-छात्राओं की सृजनशीलता को प्रोत्साहित करती है। हमारे भामाशाह में प्रकाशन से भामाशाहों का योगदान राजकीय विद्यालयों में बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। सम्पूर्ण सम्पादक मण्डल के कठिन परिश्रम व सूझबूझ से शिविरा का यह अंक संग्रहणीय बन पाया है। जिसके लिए सम्पादक मण्डल के सदस्यों को धन्यवाद।

भगवान सहाय मीणा, बीकानेर

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

सत्यमेव जयते

हिमांशु गुप्ता
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

परीक्षा : मूल्यांकन सभी का

शिक्षा शक्ति प्रदायिनी है। शिक्षा से मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों का प्रकटन होता है उसकी जीवन-दृष्टि विकसित होती है, व्यवहारगत परिवर्तन आता है। हमारा सौभाग्य है कि शिक्षा के माध्यम से हमें राष्ट्र सेवा का सुअवसर मिला है। हम चाहे विद्यालयों में कार्य कर रहे हैं अथवा कार्यालयों में, हमारी प्रतिबद्धता है कि राज्य के प्रत्येक विद्यार्थी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले।

वर्तमान शिक्षा-सत्र में सत्रपर्यन्त शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा किए गए अध्ययन-अध्यापन के सुपरिणाम आने का समय आ गया है। मार्च माह में बोर्ड परीक्षा है। परीक्षा मूल्यांकन का माध्यम है। यह मूल्यांकन केवल विद्यार्थी का नहीं हम सभी का है। विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक सभी श्रेष्ठ परिणामों से प्रोत्साहित होते हैं, जिस विद्यालय के विद्यार्थी उच्चतम अंकों के साथ सफलता अर्जित करते हैं उस विद्यालय का मान पूरे क्षेत्र में बढ़ता है।

मुझे आशा है कि गुरुजन मेरा विद्यालय और मेरा विद्यार्थी सर्वश्रेष्ठ हो इस दृढ़ संकल्प के साथ 'परीक्षा परिणाम उन्नयन अभियान' को बहुत ही प्रभावी रूप से क्रियान्वित कर रहे हैं। बोर्ड परीक्षा से पूर्व विद्यार्थियों को श्रेष्ठ उत्तर-पुस्तिकाओं का अवलोकन करवाकर प्रश्नोत्तर देने के सही तरीके समझाएँ, गत वर्षों के प्रश्न-पत्रों को हल करवाएं, प्री-बोर्ड परीक्षा के संचालन तथा विषय विशेष की कठिनाइयों के निवारण हेतु अतिरिक्त कक्षाएँ लगाएँ इससे परीक्षा परिणामों में न केवल संख्यात्मक अपितु गुणात्मक रूप से भी उत्कृष्टता आएगी।

विद्यार्थियों को मेरा स्पष्ट संदेश है कि वे स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए अपने अध्ययन को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। बिना किसी भय और तनाव के आनन्दमय रहते हुए परीक्षा दें। अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करें।

इसी माह 28 फरवरी विज्ञान दिवस है। यह एकदिवसीय उत्सव मात्र नहीं, हमारे जीवन में निरन्तर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने को दृढ़ संकल्पित होने का अवसर है। हमें रूढ़ियों से मुक्त होकर दैनन्दिन कार्यों को अधिकतम वैज्ञानिक सोच के साथ संपादित करना चाहिए।

सभी अपना कर्त्तव्य पालन पूर्ण मनोयोग और श्रेष्ठ रूप में करें। आपके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना के साथ.........

(हिमांशु गुप्ता)

"वर्तमान शिक्षा-सत्र में सत्रपर्यन्त शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा किए गए अध्ययन-अध्यापन के सुपरिणाम आने का समय आ गया है। मार्च माह में बोर्ड परीक्षा है। परीक्षा मूल्यांकन का माध्यम है। यह मूल्यांकन केवल विद्यार्थी का नहीं हम सभी का है। विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक सभी श्रेष्ठ परिणामों से प्रोत्साहित होते हैं, जिस विद्यालय के विद्यार्थी उच्चतम अंकों के साथ सफलता अर्जित करते हैं उस विद्यालय का मान पूरे क्षेत्र में बढ़ता है।"

गाँधी 150वीं जयन्ती

गाँधी जीवन : आदर्शों की प्रयोगशाला

❐ शबनम भारतीय

दिव्य पुरुष महात्मा गाँधी युग द्रष्टा ही नहीं भविष्य द्रष्टा भी थे। अलौकिक शक्ति के पर्याय बन अपने समय में हर व्यक्ति की श्रद्धेय भावनाओं के केंद्र बन गए थे। उनके विराट बहुआयामी व्यक्तित्व जीवन के हर पहलू पर प्रभाव डाला है।

सत्य अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी ने अपना संपूर्ण जीवन आदर्शों के आधार पर जिया या फिर हम दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि जो कहा वही जिया। नैतिकता, सदाचार, सहिष्णुता, सत्य, अहिंसा, असहयोग, सविनय अवज्ञा, सदाचार, लोकमंगल, प्रेम, शक्ति, करुणा, सर्वधर्म-समभाव, ब्रह्मचर्य, आत्मानुशासन, आत्मनिरीक्षण, संयम, सादगी, बुनियादी शिक्षा, नारी सशक्तीकरण, सर्वोदय, सहिष्णुता, रामराज्य जैसे अनगिनत आदर्शों को उन्होंने अपने जीवन में उतारा। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व में कोई अंतर नजर नहीं आता है। वे भारतीय धर्म संस्कृति के अनुयायी थे। उन्होंने आध्यात्मिक मूल्यों को जीवन में स्थापित किया। वे सदैव सनातनी मूल्यों के पक्षधर रहे। शांति दूत मानवता के प्रहरी महात्मा गाँधी ने सत्य, अहिंसा, नैतिकता जैसे अमोघ हथियारों से देश को दासता के पाश से मुक्त करवाया। सत्याग्रह पर उनका सर्वाधिक विश्वास था और कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने सत्य का पथ नहीं छोड़ा। अपना जीवन सत्याग्रह को समर्पित कर देश सेवा के क्षेत्र में उतरे और अंत समय तक उस पर कायम रहे। वे अहिंसा परमो धर्म के सिद्धांत को मानते थे। अंगेजों की गोली और गोला बारूद का सामने उन्होंने अहिंसा और सत्याग्रह जैसे आध्यात्मिक अस्त्रों से किया और प्रमाणित कर दिया कि जंग हमेशा हथियारों से ही नहीं जीती जाती।

उनके द्वारा लिखी गई पुस्तक 'माय एक्पीरियंस विद टुथ' मैं इसके बारे में विस्तार से उल्लेख मिलता है। वे छुआछूत के प्रबल विरोधी थे और अपना काम यहाँ तक कि अपना मेला भी स्वयं उठाते थे। समाज में अछूत समझी जाने वाली जातियों को उन्होंने हरिजन कहकर गले लगाया। सविनय और अवज्ञा जैसे आदर्शों को भी उन्होंने राजनीतिक दृष्टि से उपयोग कर अंग्रेजों को झुकने के लिए विवश कर दिया। हमेशा हिंदू-मुस्लिम एकता के पक्षपाती रहे और सबको साथ लेकर चलते थे।

ब्रह्मचर्य में उनकी प्रबल निष्ठा थी और अपने जीवन में उन्होंने अनेक अवसरों पर ब्रह्मचर्य के प्रमाण प्रस्तुत कर एक आदर्श प्रस्तुत

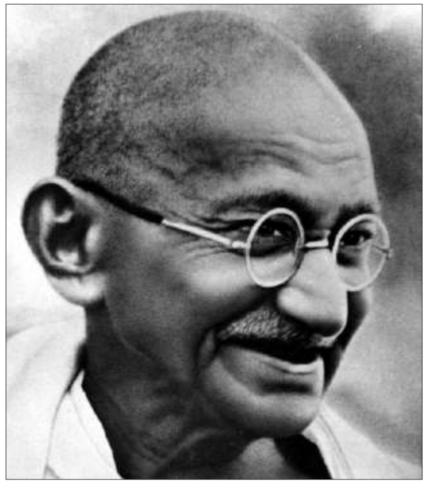

किया। उनके आदर्श भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत थे। उनके सिद्धांत न सिर्फ प्रेरणादायी बल्कि अनुकरणीय भी है। गाँधीजी के तीन बंदर जो अक्सर लोगों के द्वारा उपहास का पात्र बना लिए जाते हैं। गाँधीजी के आदर्श जीवन के परिचायक हैं और हमें अच्छा देखने, अच्छा करने और अच्छा सुनने की प्रेरणा देते हैं। नैतिकता, सर्वधर्म समभाव, संयम, सादगी, सहिष्णुता की शिक्षा देने वाला उनका जीवन मानवीय धर्म का प्रतिबिंब था। जियो और जीने दो बुराई का विरोध करो, व्यक्ति का नहीं जैसे आदर्श आज जन जन के लिए आदर्श सिद्धांत बन गए हैं। अपरिग्रह, सर्वोदय, पीड़ितों की सेवा उन्होंने अपने जीवन का ध्येय बना लिया था और अपने व्यक्तिगत जीवन से अनेक उदाहरण प्रस्तुत कर उन्होंने दूसरों को भी सदाचारी बनाने में अहम भूमिका निभाई।

जैन धर्म के तीर्थंकर महावीर स्वामी के जीवन से त्याग की भावना उन्होंने अपने अंतरतम की गहराइयों में न सिर्फ उतारी बल्कि संपूर्ण जीवन सादगी पूर्ण तरीके से बिताया। उनका व्यवहार आशावादी था और उनका आचरण प्रयोजनवादी रहा। महान समाज सुधारक होने के साथ-साथ उच्च कोटि के प्रखर राजनीतिज्ञ भी थे और एक शोषण विहीन धर्म राज्य जिसमें लोकमत का आदर हो किसी के साथ किसी प्रकार का अन्याय ना हो एकसा संविधान आधारित रामराज्य वह चाहते थे जिसका किसी विशिष्ट धर्म या संप्रदाय से कोई आशय नहीं था।

ग्राम स्वराज, नर नारी समानता के वे अनन्य उपासक थे स्त्रियों को अपने साथ राजनीति में लाए और नारी सशक्तीकरण की राह हमवार की। ग्राम स्वराज्य की दृष्टि से उन्होंने पंचायत राज की अवधारणा प्रस्तुत की जो कि आज गाँव-गाँव के लिए संजीवनी बूंटी का काम कर रही है। शिक्षा के क्षेत्र में बुनियादी शिक्षा की वकालत करते थे। उनका कहना था कि शिक्षा कौशल और उद्योग आधारित होनी चाहिए अर्थात शिक्षा कौशल विकास की फैक्ट्री बने जहाँ से स्किल्ड युवा बाहर निकले। इस अवधारणा को मद्देनजर रखते हुए उन्होंने शिक्षा की हिमायत की ताकि शिक्षित युवा नौजवान बेरोजगारी की भीड़ का हिस्सा न बन परिवार समाज और देश के लिए उपयोगी बन सके। उनके आदर्श कर्म रूपी भट्टी में तपे हुए होते थे इसलिए सीधा ह्रदय पर प्रभाव डालते थे और हर इंसान को अपना अनुयायी बना लेते। अस्त्र शस्त्र युद्ध की अपेक्षा शांति, करुणा के पक्षधर थे उनके आदर्श विश्व को करुणा, शांति का प्रेम का संदेश देते हैं यही कारण है कि वे एक युगांतर पुरुष कहलाते हैं एवं आज के परिप्रेक्ष्य में भी उतने ही प्रासंगिक है जितने की कल थे।

नेल्सन मंडेला ने उनसे प्रेरणा प्राप्त कर अफ्रीका में रंगभेद की लड़ाई लड़ी और सफलता अर्जित की जिस कारण से उनको अफ्रीका का गाँधी कहा जाता है। बराक ओबामा उन्हें अपनी असली जिंदगी का हीरो मानते हैं। उनके अहिंसा सिद्धांत की महत्ता को स्वीकार कर ही संयुक्त राष्ट्र संघ 2007 से 2 अक्टूबर को प्रतिवर्ष विश्व अहिंसा दिवस मनाता है। गाँधी जयंती अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाई जाती है आज के अस्त्र शस्त्रों की अंधी दौड़ में उनके आदर्श और सिद्धांत पथ प्रदर्शन कर शांति का मार्ग दिखाते हैं। उनके आदर्श पूर्ण जीवन को आदर्शों की प्रयोगशाला कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

राजकीय उ.प्रा.विद्यालय मंडेला छोटा,
फतेहपुर, सीकर (राज.)
मो: 9887483059

गाँधी 150 वीं जयन्ती

महात्मा गाँधी विषयक प्रकाशन

❒ कृष्ण वीर सिंह सिकरवार

2 अक्टूबर, 2019 को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का 150 वाँ जन्म जयन्ती वर्ष देश भर में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर देश भर में स्कूलों और दफ्तरों में तरह-तरह के कार्यक्रम आयोजित किए गए। कहा जा सकता है कि अहिंसा आंदोलन के दम पर देश को आजादी दिलाने वाले बापू आज भी लोगों के दिलों में जिंदा है। गाँधीजी के प्रयासों के चलते आज हम आजाद है। महात्मा गाँधी भारत की उन चंद हस्तियों में सबसे आगे हैं जिनकी सीख व विचार उनकी मृत्यु के इतने वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद भी हमारे बीच आम है। गाँधीजी का जीवन लोगों के लिए प्रेरणादायक है। बापू के विचार और उनकी जीवन शैली ने उन्हें एक आम आदमी से महात्मा बना दिया था। कहा जाता है कि उन्होंने अपने जीवन भर में कभी भी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया था।

हमारे देश में माननीय प्रधानमंत्री का स्वच्छता अभियान महात्मा गाँधी के सपनों से ही प्रेरित है, क्योंकि महात्मा गाँधी ने अपने आसपास के लोगों को स्वच्छता बनाए रखने संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था। उन्होंने 'स्वच्छ भारत' का सपना देखा था, जिसके लिए वह चाहते थे कि भारत के सभी नागरिक एक साथ मिलकर देश को स्वच्छ बनाने के लिए कार्य करें। इसी प्रेरणा को लेकर गाँधी जयन्ती के दिन ही माननीय प्रधानमंत्री ने वर्ष 2014 में 'स्वच्छ भारत अभियान' की शुरूआत की थी। जो देशभर में सफलता की नई-नई ऊँचाइयाँ छू रहा हैं। जिसकी सफलता ही अब आम जनमानस का ध्येय बन चुका है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के 150वें जन्म वर्ष पर इन्हीं विचारों और संदेशों को जन-जन तक पहुँचाने की दृष्टि से देश भर की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं ने अपने-अपने स्तर से महात्मा गाँधी विशेषांकों व परिशिष्टों का प्रकाशन किया। ये विशेषांक कहीं-कहीं आंशिक रूप से एवं कहीं पूर्ण रूप से प्रकाशित होकर पाठकों के समक्ष उपस्थित हुए। प्रस्तुत आलेख में इन्हीं पत्रिकाओं के विशेषांकों का एक परिचय पाठकों के सम्मुख रखने का प्रयास किया गया है।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा से अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान, भाषा शिक्षण तथा साहित्य चिंतन के रूप में प्रकाशित त्रैमासिक शोध पत्रिका 'गवेषणा' का (अंक-115) जनवरी-मार्च, 2019 अंक 'महात्मा गाँधी विशेषांक' के रूप में प्रकाशित हुआ। स्पष्ट है कि यह अंक प्रकाशन की दृष्टि से बहुत ही विलंब से प्रकाशित हुआ है। पत्रिका के संपादक प्रो. महेन्द्र सिंह राणा एवं प्रधान संपादक प्रो. नंदकिशोर पाण्डेय है। पत्रिका की संरक्षकता प्रेमचंद साहित्य विशेषज्ञ के रूप में प्रसिद्ध डॉ. कमल किशोर गोयनका जी संभाल रहे हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'गवेषणा' पत्रिका हिन्दी साहित्य में शोध की दृष्टि से अपना एक अलग मुकाम हासिल किए हुए हैं। लगभग तीन सौ पृष्ठों में बत्तीस लेखकों एवं विचारकों ने अपनी लेखनी से इस पत्रिका को वाकई में शोध पत्रिका के रूप में स्थापित कर दिया है।

पाठकों की सुविधा हेतु पत्रिका में संकलित कुछ आलेख की जानकारी इस प्रकार है-गाँधी की पत्रकारिता : प्रबंधन का स्वरूप कमल किशोर गोयनका, सांस्कृतिक बहुलता और गाँधीजी -रमेश चन्द्र शाह, गाँधी जी के स्वाधीनता संग्राम की विशिष्टताएँ-एम. ज्ञानम, भारत का स्वराज- पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु', गाँधी जी और राष्ट्रभाषा हिंदी-परमानन्द पांचाल, महात्मा गाँधी की पत्रकारिता-सभापति मिश्र, गाँधी जी के आध्यात्मिक विचार-आशीष सिसोदिया, महात्मा गाँधी और नमक सत्याग्रह-आदर्श मिश्र, गाँधीजी की शक्ति थी कस्तूरबा गाँधी-आकांक्षा यादव आदि आलेख महात्मा गाँधी के जीवन की सम्पूर्ण झाँकी प्रस्तुत करते हैं। पत्रिका में गाँधीजी की पत्रकारिता को केन्द्रित चार से पाँच आलेख संकलित किए गए हैं जो गाँधी की पत्रकारिता के क्षेत्र में किए गए महत्त्वपूर्ण योगदान का महत्त्व परिलक्षित करते हैं। इस प्रकार से पत्रकारिता पर केन्द्रित यह आलेख महात्मा गाँधी को कुशल पत्रकार के रूप में स्थापित करते हैं। कुल मिलाकर कहा जा सकता हैं कि किसी छात्र को गाँधी साहित्य पर शोध करना है उनके लिए 'गवेषणा' का यह अंक प्रेरणास्रोत का काम कर सकता है। अंक में प्रकाशित सामग्री ऐतिहासिक एवं पठनीय है। इस अंक की कीमत मात्र 40/-रुपये है।

इतिहासकार-कथाकार प्रियवंद के संपादन में विचारशीलता और बौद्धिक हस्तक्षेप का उपक्रम के रूप में अकार प्रकाशन, सिविल लाइंस, कानपुर से प्रकाशित पत्रिका 'अकार' का अगस्त 2019 (53वाँ अंक) 'गाँधी अंक' के रूप में प्रकाशित हुआ। लगभग 205 पृष्ठ की इस पत्रिका में गाँधीजी विभिन्न पक्षों को विस्तार के साथ प्रस्तुत किया गया। वैसे भी अकार पत्रिका लघु पत्रिकाओं की भीड़ में अपना एक अलग मुकाम रखती है। यह पत्रिका अपने विचारोत्तेजक लेख और धारदार संपादकीय के रूप में प्रसिद्ध है। पत्रिका में कुल 16 आलेख संकलित किए गए हैं जिनमें से सात शोध आलेख, दो संस्मरण, दो साक्षात्कार, कविताएँ, गाँधीनामा डायरी एवं स्मृति कथा के तहत संकलित सामग्री गाँधी जी विशाल, साहित्यिक यात्रा का परिचय कराती है। कुल मिलाकर यह अंक पाठकों के लिए गाँधी साहित्य की अभूतपूर्व झाँकी प्रस्तुत करता है। इस अंक की कीमत मात्र 50/- रुपये है।

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर (राजस्थान) से प्रकाशित मासिक पत्रिका 'मधुमती' का (वर्ष-59, संयुक्तांक 9-10) सितम्बर-अक्टूबर, 2019 अंक आंशिक रूप से प्रकाशित होकर पाठकों के समक्ष उपस्थित हुआ है। पत्रिका के संपादक ब्रजरतन जोशी द्वारा लगभग 200 पृष्ठ की इस पत्रिका में महात्मा गाँधी के ऊपर 5 शोध आलेखों को संकलित किया गया है। जिनमें प्रमुख आलेख इस प्रकार है- 'गाँधीः प्रबुद्ध अराजकतावादी, लेखक-नंदकिशोर आचार्य, गाँधी और दिल्ली, लेखक- कुमार प्रशांत, महात्मा गाँधी : एक पुनरावलोकन, लेखक-पवन कुमार गुप्त, स्वच्छता का मानवाधिकार एवं गाँधी दृष्टि, लेखक- वरुण कुमार आदि लेख पत्रिका को पठनीय बनाते हैं। इस अंक की कीमत मात्र 40/- रुपये है।

सृजन की उड़ान के रूप में देशभर में अपनी पहचान बनाने वाली उत्तर प्रदेश से प्रकाशित प्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'पाखी' (वर्ष-12, अंक-2) अक्टूबर, 2019 अंक में

संपादक अपूर्व जोशी ने महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती पर विशेष रूप से 'चिट्ठी आई है' के तहत कौशल किशोर, अजित कुमार राय एवं सुरेश अनियाल द्वारा दी गई जानकारी पाठकों के लिए बहुमूल्य है। इस अंक की कीमत मात्र 35/- रुपये है।

भारतीय भाषा परिषद् से प्रकाशित मासिक पत्रिका 'वागार्थ' का (वर्ष-25, अंक-291) अक्टूबर, 2019 अंक 'विशेषतः गाँधी' के रूप में प्रकाशित हुआ है। पत्रिका के संपादक शंभूनाथ ने राजमोहन गाँधी द्वारा लिखित महात्मा गाँधी की विरासत नामक लेख को संकलित किया है। राजीव रंजन गिरि की प्रस्तुति में 'गाँधी की आवाज' शीर्षक से एक परिचर्चा को संकलित किया है जिसमें नंदकिशोर आचार्य, सौरभ वाजपेयी, उदयन वाजपेयी, प्रमोद कुमार, कुमार प्रशांत, सुजाता चौधरी, राधा भट्ट आदि रचनाकारों की परिचर्चा पत्रिका को पठनीय बनाती है। कुल मिलाकर पत्रिका आंशिक रूप से ही सही, किन्तु गाँधी साहित्य को प्रस्तुत करती है। इस अंक की कीमत मात्र 30/- रुपये है।

साहित्य अकादमी, भोपाल मध्यप्रदेश से प्रकाशित मासिक पत्रिका 'साक्षात्कार' का संयुक्तांक (478-479-480) अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर, 2019 'महात्मा गाँधी विशेषांक' के रूप में प्रकाशित होकर पाठकों के समक्ष आया। लगभग 400 पृष्ठीय इस विशेषांक में देश के सुपरिचित आलोचक एवं चिंतकों की लेखनी ने गाँधी के सिद्धांतों व विचारों की एक लंबी श्रृंखला प्रस्तुत कर 'साक्षात्कार' पत्रिका के इस अंक को वाकई में एक ऐतिहासिक दस्तावेज बना दिया। साहित्य अकादमी इस योजना को पाठकों तक पहुँचाने के लिए वाकई बधाई की पात्र है। प्रस्तुत अंक में चालीस के करीब शोध आलेख संकलित किए गए है जो महात्मा गाँधी के जीवन एवं विचारों की श्रृंखला से पाठकों को परिचित कराता है। कुछ आलेख इस अंक में स्वयं महात्मा गाँधी जी एवं उनके समकालीन मित्रों द्वारा लिखे गए भी संकलित किए गए हैं, जो ऐतिहासिकता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण आलेख है। डॉ. राममनोहर लोहिया, दादा धर्माधिकारी, प्यारेलाल, विनोबा, रविन्द्रनाथ ठाकुर, जवाहरलाल नेहरु आदि के संकलित आलेख पाठकों को बरबस ही अपनी ओर खींच लेते हैं। इसके अलावा उदयन वाजपेयी, राधावल्लभ त्रिपाठी, नंदकिशोर आचार्य, वागीश शुक्ल, अशोक वाजपेयी, अनुपम मिश्र, कुमार प्रशांत, प्रदीप सरदाना, पुण्य प्रसून वाजपेयी, नवल शुक्ल आदि।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के 150 वें जन्म वर्ष पर जितने भी अंक विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुए, उन सब में 'साक्षात्कार' पत्रिका का यह अंक लम्बे समय तक पाठकों को याद रहेगा, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। इस अंक की कीमत मात्र 25/- रुपये है।

समग्रतः कहा जा सकता है कि राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के 150 वें जन्मदिवस पर हिन्दी साहित्य ने पत्र-पत्रिकाओं के अंक प्रकाशित कर उनके जीवन व विचारों को फिर से जीवंत कर दिया। पाठकों द्वारा भी इन अंकों को भरपूर सराहा गया। इन पत्रिकाओं के अलावा भी अन्य पत्रिकाओं ने महात्मा जी के विचारों को केन्द्रित कर अंकों का प्रकाशन किया गया होगा, इससे इंकार नहीं किया जा सकता। लेकिन उपर्युक्त पत्रिकाएँ कहीं न कहीं पाठकों के बीच अत्यंत लोकप्रिय रही, इस कारण उनकी जानकारी से पाठकों को परिचय कराने का एक छोटा सा प्रयास किया गया है। आशा करता हूँ कि किसी पाठक को इस जानकारी से लाभ हुआ तो मैं अपने श्रम को सार्थक समझूँगा।

आवास क्रमांक एच-3, राजीव गाँधी
प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, एयरपोर्ट रोड, गाँधी नगर,
भोपाल, (म.प्र.)- 462033
मो: 9826583363

रपट

47वीं राज्यस्तरीय प्रतियोगिता

विभागीय मंत्रालयिक खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता सम्पन्न

❒ आनन्द सिंह

47 वीं राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता 2019-20 दिनांक 27.12.2019 से 30.12.2019, राजकीय यशवन्त उच्च माध्यमिक विद्यालय अलवर में सम्पन्न हुई। प्रतियोगिता में निदेशालय, बीकानेर के दल नायक श्री भवानी शंकर हर्ष, सहायक निदेशक, संस्थापन सी-1, माध्यमिक शिक्षा के नेतृत्व में विभिन्न खेलों में प्रथम स्थान प्राप्त किया गया है जो निम्नानुसार है-

क्र. सं.	खेल/सांस्कृतिक प्रतियोगिता का नाम	संबंधित खिलाड़ी का नाम	खेल/सांस्कृतिक प्रतियोगिता में स्थान
1.	फुटबॉल	आनन्द सिंह, करणी सिंह, विक्रमजीत सिंह, महेन्द्र कुमार, गिरिराज छंगाणी, उमेश साध, किशन लाल, भवानी सिंह भाटी, मोहित बन, विनय गोस्वामी, प्रशांत पंवार, नटवर पुरोहित, रामनारायण मारू, श्यामप्रसाद, सेवग, सुनिल सिडाना	प्रथम स्थान (6 वर्ष पश्चात प्रथम स्थान प्राप्त निदेशालय द्वारा एवं फाइनल में चूरू संभाग को 2-0 से हराया)
2.	100 मी. दौड़ (40 वर्ष से अधिक)	अनिल पुरोहित	प्रथम स्थान
3.	400 मी. दौड़ (40 वर्ष से अधिक)	अनिल पुरोहित	प्रथम स्थान
4.	त्रिकूद	सुनिल सिडाना	प्रथम स्थान
5.	एकाभिनय	उमेश आचार्य	प्रथम स्थान
6.	ढोलक वादन	नवरतन जोशी	प्रथम स्थान
7.	गोला फेंक	श्रीनिवास पुरोहित	प्रथम स्थान
8.	त्रिकूद (40 वर्ष से कम)	राजकुमार	प्रथम स्थान

नोटः- फुटबॉल प्रतियोगिता में सर्वाधिक गोल (गोल की संख्या 9) सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी निदेशालय के विक्रमजीत सिंह रहें।

सहायक कर्मचारी, रोकड़ अनुभाग,
माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर
मो: 8769886709

जयन्ती

युग प्रवर्तक : स्वामी दयानंद

❒ लखन पाल सिंह

पृथ्वी के प्राकट्य से लेकर आज तक युगों से ये प्रवृत्ति रही है कि युगधर्म निभाने को बदलाव होते ही रहे हैं। ये बदलाव प्रकृति में मानव प्रवृत्ति में और संसार के आचार-विचार में, होते रहे हैं। परिवर्तन की बेला में कोई न कोई घटना या विचार अथवा कोई महापुरुष उस घटना का प्रवर्त्तक और संवाहक बना है। इसी क्रम में आधुनिक भारत के स्वामी दयानंद का नाम आता है।

स्वामी दयानंद का जन्म भाद्रपद कृष्णा नवमी, गुरुवार संवत 1881 (12 फरवरी, 1824) में मोरवी राज्य के टंकारा (वर्तमान में गुजरात के जिला-राजकोट) में श्री करसन जी तिवारी के घर हुआ। ये औदिच्य ब्राह्मण थे तथा इनका परिवार कट्टर शिव भक्त था। इनका जन्म मूल नक्षत्र में हुआ था अतः इनका नामकरण मूलशंकर किया गया। ये पाँच भाई बहिन थे।

मूलशंकर के पिताजी इन्हें परम शैव संस्कारों से ओत-प्रोत करना चाहते थे। जब वे पाँच वर्ष के थे तो उन्हें देवनागरी अक्षरों का ज्ञान कराया। आठवें वर्ष में उनका यज्ञोपवीत संस्कार कर गायत्री-दीक्षा दी गई। चौदह वर्ष की आयु होते होते उन्हें वेदों का भी ज्ञान कराया गया।

विभिन्न साधु-सन्त, मत-मतान्तरों के व्यक्यिों से मिलने के बाद स्वामी विरजानंद के रूप में उन्हें गुरु की प्राप्ति हुई। जब वे उन्हें गुरु दक्षिणा में लोंग देने लगे तो विरजानंद ने उनसे समाज में व्याप्त कुरुतियों के हटाने तथा सच्चे ज्ञान के प्रकाश करने को ही गुरु दक्षिणा में मांग लिया।

हिन्दी भाषा को योगदान : स्वामी दयानंद के समय में भारत पर अंग्रेजों का आधिपत्य जम रहा था। धीरे-धीरे अरबी व अंग्रेजी भाषा राजभाषा के रूप में प्रयोग की जाने लगी थी। दयानंद ने अपने प्रारंभिक जीवन में संवाद व वाद-विवाद संस्कृत भाषा में प्रारंभ किए लेकिन कलकत्ता प्रवास के समय ब्रह्मानंद केशवचन्द्र सेन और ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के सम्पर्क में आने पर उनके आग्रह पर देव भाषा संस्कृत के स्थान पर लोक भाषा हिन्दी में अपने विचार प्रकट करना प्रारंभ किया। वे प्रचलित लोक भाषा हिन्दी में लिखने और बोलने लगे। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में दो गुजराती भाषी स्वामी दयानंद व महात्मा गाँधी का अमूल्य योगदान है। 1873 से 1883 के काल में स्वामी दयानंद ने सारे पत्र व्यवहार, ग्रंथ लेखन तथा सभी शास्त्रार्थ हिन्दी भाषा में किए। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि हिन्दी ही वह भाषा है जिसके

माध्यम से देश की एकता को पिरोया जा सकता है। ये ही जनसंवाद की भाषा बन सकती है। उन्होंने जोधपुर नरेश को अपने पत्र में लिखा कि पहले देवनागरी भाषा (मातृभाषा) फिर संस्कृत तत्पश्चात् अंग्रेजी विषय को पढ़ाया जाए। आधुनिक त्रिभाषा सूत्र का प्रथम सूत्रपात वो भी इतने समय पहले, निश्चित ही आश्चर्य चकित करता है।

स्वदेशी के सम्बन्ध में विचार : स्वामी दयानंद वो प्रथम व्यक्ति थे जिन्होने स्वराज शब्द का न केवल प्रयोग किया वरन तत्कालीन वायसराय से स्पष्ट शब्दों में कहा कि मैं अपने देश को स्वतंत्र राज्य के रूप में देखना चाहता हूँ। बाल गंगाधर तिलक ने स्वामी जी के पश्चात् ही 'स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है' का नारा दिया। स्वामी ने स्पष्ट कहा कि स्वधर्म, स्वभाषा, स्वराष्ट्र, स्वसंस्कृति व स्वदेशोन्नति के बिना किसी भी प्रकार उन्नति नहीं हो सकती।

शिक्षा के क्षेत्र में योगदान : स्वामी दयानंद ने शिक्षा को मातृभाषा में दिए जाने पर जोर दिया। उन्होंने 'वेदों की ओर लौटो' कहकर संस्कृत व संस्कृति से जुड़ाव पर जोर दिया। आज कम्प्यूटर के लिए जब श्रेष्ठ भाषा का चयन किया जाता है तो मात्र संस्कृत ही इस कसौटी पर खरी उतरती है। स्वामी ने चारित्रिक दृढ़ता व शारीरिक सौष्ठव पर विशेष बल दिया। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ दिमाग रहता है यह उन्होंने स्वयं के उदाहरण से सिद्ध किया।

भाषा का चयन किया जाता है तो मात्र संस्कृत ही इस कसौटी पर खरी उतरती है। स्वामी ने चारित्रिक दृढ़ता व शारीरिक सौष्ठव पर विशेष बल दिया। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ दिमाग रहता है यह उन्होंने स्वयं के उदाहरण से सिद्ध किया।

नारी उत्थान में योगदान : तत्काल समय में बाल विवाह, विधवाओं की दुर्दशा, सती-प्रथा, नारी को शिक्षा से वंचित रखने जैसी कुरीतियाँ समाज में व्याप्त थी। स्वामी जी ने नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि यदि माता ही अज्ञानी रहेगी तो संतान किस प्रकार ज्ञानवान, चरित्रवान हो सकती है। राजा राम-मोहन राय के पश्चात् सती प्रथा के प्रबल विरोधी के रूप में दयानंद सरस्वती को गिना जा सकता है। उन्होंने कहा कि वेद, सद्ग्रंथ और अन्य संहिताओं का पठन-पाठन मात्र पुरुष वर्ग तक ही सीमित नहीं रखा जाना चाहिए। वे बाल-विवाह के भी प्रबल विरोधी थे। उनके अनुसार सबल और चरित्रवान माँ-बाप के श्रेष्ठ संतान जन्म लेती हैं। पर्दा प्रथा के भी वे विरोधी थे।

शिक्षा के क्षेत्र में योगदान : स्वामी दयानंद ने अपनी मातृभाषा में शिक्षा देना ही श्रेष्ठ बताया। आधुनिक त्रिभाषा सूत्र के वे जनक थे। उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग, पुरुष-नारी सभी को शिक्षा अनिवार्य बतायी। किसी भी वर्ग को जाति, धर्म, कुल या वर्ण के आधार पर शिक्षा से वंचित नहीं रखा जाए। शिक्षा पर सबका समान अधिकार होना चाहिए।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि स्वामी दयानंद उस काल में जन्में जब समाज को एक ध्वज वाहक और पथ-प्रदर्शक की विशेष आवश्यकता थी। उन्होंने कृण्वन्तों विश्वमार्यम् अर्थात संसार को श्रेष्ठ बनाओं का नारा दिया। शिक्षा, समाज सुधार, नारी-उत्थान और कुरीति निवारण में स्वामी जी का अविस्मरणीय योगदान रहा। उनकी बताई शिक्षाएँ आज भी उतनी ही उपयोगी हैं जितनी कि उनके समय थीं।

प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
सालाबाद, (भरतपुर)
मो: 8058689659

जीवन-दर्शन

सरल जीवन के सात सरल नियम

❐ बिग्रेडियर करण सिंह चौहान

आज के भौतिकवाद में हर व्यक्ति किसी न किसी कारणवश संशयों से घिरा हुआ है और उसकी अहं की मनोवृत्ति ने उसकी अन्तरात्मा की आवाज को पूर्णतया दबा दिया है। इस स्थिति का वर्णन मारसिलियों फिसिनों ने बहुत ही सुंदर ढंग से किया है-'क्योंकि हम जीवन में मानवीय गुणों को झूठे और अवगुणों को वास्तविक रूप से प्रस्तुत करते हैं, इसलिए आज हमारे जीवन में झूठापन और दुःखों में वास्तविकता आ चुकी है।'

इस स्थिति को ठीक करने के लिए क्या किया जाए? उल्टे घड़े में तो पानी भरा नहीं जा सकता है, अतः अपने जीवन को सार्थक, सुखी, आनंदमयी और उत्कृष्ट बनाने के लिए अतीत की समाधि से निकालना होगा तथा प्रतिपल प्रकृति से प्राप्त होने वाले अनुभवों से ज्ञान कराना होगा। प्रकृति की देन, यह जीवन आपका स्वयं का है और जब तक आप जीवित है और आप मरे नहीं है। जीवन अस्थाई हैं, जिसे स्थाई समझना बड़ी भूल है। जिस प्रकार एक व्यक्ति अस्थाई क्षणों से आनंद प्राप्त करता है, उसी प्रकार संपूर्ण जीवन से भी आनंद प्राप्त किया जाता है। प्रकृति का कितना अद्भुत करिश्मा है कि हर व्यक्ति एक ऐसी कहानी हैं जिसकी कथा अपने आप में अद्वितीय हैं। हर व्यक्ति कृति है, फिर क्या किसी व्यक्ति को और भी विशिष्टता प्राप्त करने के लिए विभिन्न नाटकीय प्रदर्शन करना आवश्यक है।

हर मनुष्य में इतनी क्षमता है कि यदि वह वैज्ञानिक विश्लेषण से अन्तर्निरीक्षण करें, तो वह ब्राउनिंग के कथन को चरितार्थ करेगा, 'हर व्यक्ति अपनी पहुँच से अधिक पा सकता है, क्योंकि नहीं तो वह स्वर्ग किसलिए हैं।' उनका संकेत मानवता, आनंद, भाईचारे की ओर था। मैकसिम गौरकीं ने एक बार किसानों के एक सम्मेलन में कहा कि विज्ञान ने मनुष्य को उड़ना एवं समुद्र की गहराई में मछली के समान रहना सिखाया है। तब एक किसान ने निवेदन करते हुए उनसे कहा कि श्रीमान आप ठीक कह रहे हैं,

लेकिन विज्ञान ने मनुष्य को यह नहीं सिखाया कि इंसान को किस तरह इस भूमि पर शांति और भाईचारे से रहना चाहिए। यदि हम चाहें, तो उत्कृष्ट जीवन जी सकते हैं। इसके लिए जीवन की इस यात्रा में हमें कुछ ऐसे नियमों का सहारा लेना पड़ेगा, जो सहायक सिद्ध हो सकते हैं और अनुभव के आधार पर निम्न उल्लिखित सात नियम आवश्यक कारगर होंगे।

1. स्वयं को व्यवस्थित करना- यदि आप किसी फ्रेम में पूर्णतया जकड़े हुए हैं, तो आप अपनी तस्वीर को नहीं देख पाएँगे। अतः बिना किसी दायित्त्व एवं मानसिक प्रवृत्ति के स्वयं का विश्लेषण कर व्यवस्थित करना आवश्यक हैं। चूँकि एक व्यक्ति एक समयबद्ध कार्यक्रम के तहत इस संसार में आता है, अतः समय का किसी भी प्रकार से बचाव न करते हुए उसका पूर्ण नियोजन किया जाए। हर पल आपके जीवन का एक अभिन्न अंग है तथा जो पल एक बार चला गया, तो लौटकर नहीं आएगा। हर अतिरिक्त मिनट की ओर गौर करें, कहीं वह बेकार न चला जाए। यदि आपके पास 'वेटिंग टाइम' है तो इसे 'वरकिंग टाइम' में बदलें। स्वयं को व्यवस्थित करने के लिए समय की पाबंदी, आज का कार्य आज करना, कार्य में वरीयता निर्धारित करना, कार्यालय का कार्य कार्यालय में ही करना। 'वैन यू लिव योर ऑफिस-लिव योर ऑफिस' आदि सहायक हैं।

जापान में एक कहावत हैं, 'यदि आप अच्छे दिखते हैं, तो अच्छा करते हैं। स्वयं के रखरखाव में यह जरूरी है कि आप अच्छे दिखाई दें। आपके शरीर, वेशभूषा, बोलचाल से स्वतः ही आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। हाल ही में एक अध्ययन में पाया गया कि यदि व्यक्ति की मेज पर अथवा घर में फालतू यानि जरूरत से अधिक समान हैं, तो उस व्यक्ति के दिमाग में भी अतिरिक्त या व्यर्थ सामग्री रखने की प्रवृत्ति होगी, जिसके कारण उसके निर्णय लेने की क्षमता में भी कमी आएगी। यदि कोई भी वस्तु गत तीन वर्षो से आपके किसी उपयोग में नहीं आई हैं, तो आप गंभीरता से विचार करें कि क्या वह आपके उपयोग की वस्तु है? स्वयं को व्यवस्थित करना जीवन की सफलता के लिए पहला एवं मुख्य बिन्दु हैं। इसके लिए प्रारम्भ में निम्नलिखित तीन बातें लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

- जीवन में जब कभी मुँह को बन्द रखने का अवसर प्राप्त हों, तो उसे कभी नहीं खोएँ।
- आप तब तक वेशभूषा पहन कर पूरी तरह तैयार नहीं है, जब तक आपने अपने चेहरे पर मुस्कान धारण नहीं की हैं।
- ईश्वर ने हमें दो कान और एक मुँह दिया है। अतः दो बार सुनना और एक बार बोलना, स्वयं को व्यवस्थित करने में अति आवश्यक है। सदियों के विश्लेषण से यह भी सिद्ध हुआ है कि यदि जीवन में कोई चीज गलत समय पर खुलती हैं, तो वह हमारा मुँह हैं।

2. क्षितिज से परे दृष्टिपात- यदि किसी मनुष्य की ऊँचाई 5 फुट 8 इंच हैं, तो वह इसे बढ़ाकर 5 फुट 11 इंच नहीं कर सकता। लेकिन ज्ञान से वह ऐसी सीढ़ी तैयार कर सकता है जिसकी सहायता से वह कितनी ही ऊँची मंजिलों को छू सकता है। एक अमरीकी दार्शनिक ने अपने शोध 'की टू माइन्ड्स मैन' में कहा है कि जीवन में कठिनाइयाँ वास्तविकता में

नहीं हैं, ये हमारी प्रगति में सहायक मील का पत्थर है। हम अपनी कठिनाइयों को बहुत हद तक कम कर सकते हैं, परन्तु समस्त कठिनाइयाँ समाप्त हो जाए और हमारे रास्ते में गुलाब बिछा दिया जाए, तो हम उन पर चलने योग्य नहीं रहेंगे। ऐसी स्थिति में हम अपना जीवन क्षितिज तक ही सीमित रख पाएँगे। इस बंधन को तोड़ने के लिए व्यवसाय के अतिरिक्त अन्य रुचियों जैसे नृत्य-संगीत, कविता, विज्ञान, अर्थशास्त्र, कुकिंग, ट्रैकिंग, हिलक्लाइम्बिंग, बर्ड वाचिंग, अध्ययन, चित्रकारी, फोटोग्राफी आदि को भी विकसित करें, ताकि आपके व्यक्तित्व में निखार आ सके एवं जीवन का रहस्य समझते हुए आनंद प्राप्त कर सकें। सोक्रेटीज जब फाँसी की सजा का इंतजार कारागृह में कर रहे थे, उनके पास के कक्ष में एक कैदी ने बहुत अच्छा गाना बजाया। तब सोक्रेटीज ने उससे निवेदन किया कि वह उन्हें वह गाना सिखा दें। उसने पूछा कि, अब जब वे फाँसी पर चढ़ रहे हैं, तो फिर यह गीत क्यों सीखना चाहते हैं। सोक्रेटीज ने कहा, फाँसी के पूर्व में एक ज्ञान और प्राप्त करना चाहता हूँ। किसी भी यात्रा के लिए कम सामान अत्यधिक सुखदायी होता हैं। इसी प्रकार जीवन-यात्रा में आप जितने हल्के हैं, संसार का स्वरूप उतना ही आनंदमयी होता हैं। कहा गया है कि 'वैन यू आर लाइटर वर्ड इज ब्राइटर।'

निस्वार्थ सेवा एक ऐसा कृत्य है, जिससे व्यक्ति की क्षितिज के परे प्राप्ति की क्षमता बढ़ जाती है। समर्पण के भाव से सेवा कर धन्यवाद प्राप्ति की भी अपेक्षा न करें। जब बरकेन हेड पोत डूब रहा था। अलेक्जेंडर रसल, जो सिर्फ 17 वर्ष के युवा अधिकारी थे, नौका द्वारा कुछ व्यक्तियों को बचाकर ले जा रहे थे। नौका में और जगह नहीं थी। थोड़े समय पश्चात् डूबते हुए एक व्यक्ति ने नौका में आने का आग्रह किया। उसी समय एक महिला चिल्लाई-'ये मेरे पति हैं, इन्हें बचाओ, रसल नौका से यह कहते हुए समुद्र में कूद गए कि भगवान तुम्हें सुखी रखें। यह एक उत्कृष्ट और आदर्श उदाहरण हैं। बिना किसी प्रलोभन के कुछ करना ही जीवन-पटल के रहस्य को खोलता हैं।

3. समस्याओं के समाधान करने की क्षमताः जब तक जीवन है, तब तक समस्याएँ हैं। इसके लिए आवश्यक हैं कि हम इन्हें मानें, स्वीकार करें, उनसे समायोजन करें, तत्पश्चात स्थिति को सुधारने का प्रयत्न करें। समस्याओं से आँखें मूँद लेना कमजोरी का द्योतक है। हर समस्या सकारात्मक संभावनाओं को जन्म देती हैं। समस्याओं का समाधान करने से मनुष्य गुणात्मक रूप से शक्तिशाली बनता हैं। यदि किसी परिस्थिति में समस्या का हल न निकल सके, उसका प्रबंध करें, जिसकी क्षमता हर व्यक्ति में पर्याप्त रूप से विद्यमान होती हैं। लौग फैलो ने लिखा है कि अगर वर्षा हो रही हो तो सबसे अच्छा विकल्प व्यक्ति के लिए यह है कि उसे होने दें। एक बार विसेन्ट पील को एक मित्र ने अपनी गंभीर समस्या सुनाई। सुनकर, पील ने कहा कि, 'आपकी व्यथा वास्तव में दुःखदायी है। मैं कुछ ऐसे लोगों को जानता हूँ जिनको कोई समस्या ही नहीं है। उन महानुभाव को पील कब्रिस्तान ले गए और वहाँ कब्रों को दिखाते हुए कहा कि इन व्यक्तियों की कोई समस्या नहीं हैं।

जिस प्रकार झरने के प्रवाह के मध्य आने वाली चट्टानों को हटा देने से झरने का सुगम संगीत प्राप्त नहीं हो सकता, उसी प्रकार मानव जीवन में से समस्त समस्याओं को हटा देने से जीवन का आनंद लुप्त हो जाता हैं।

4. सफलता एवं असफलता, एक ही सिक्के के दो पहलू- जीवन को संपूर्णता प्रदान करने के लिए असफलताओं का होना भी उतना ही आवश्यक हैं, जितना सफलताओं का। डॉ. एनीबेसेन्ट ने लिखा है कि असफलताएँ हमें अधिक शक्ति से विजय प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती हैं और हम उनके समाधान से शक्तिशाली बनते जाते हैं। इस संबंध में हर बार यह प्रश्न पूछना आवश्यक हैं कि क्या हम समस्याओं से आँख मूँद रहे हैं या उन पर विजय प्राप्त कर रहे हैं? इस संबंध में सकारात्मक सोच और कठिन परिश्रम की आवश्यकता है। प्रो. टॉम विट्टेकर का उल्लेख प्रासंगिक हैं, जो पर्वतारोहण में गहन रुचि रखते थे। 49 वर्ष की आयु में कृत्रिम पैर की सहायता से माउंट एवरेस्ट पर चढ़े। कठिन परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है, अतः परिश्रम करते रहना ही सफलता की कुंजी है।

यदि हम शैक्षणिक योग्यता के कारण असफलता की बात करें, तो कुछ उदाहरण हमारे लिए प्रेरणात्मक होंगे-

- नेपोलियन मिलिट्री एकेडमी में 24वें रैंक पर थे।
- अल्बर्ट आइन्सटाइन ने 4 वर्ष की आयु में बोलना और 7 वर्ष की आयु में पढ़ना सीखा था।
- इसाक न्यूटन स्कूल में बहुत ही कमजोर विद्यार्थी थे।
- विन्सटन चर्चिल छठी कक्षा में फेल हुए थे।
- थोमस एडीसन को उनके शिक्षकों ने 'स्टुपिड' करार दिया।
- अब्राहम लिंकन जीवन में 18 बार फेल होकर अमेरिका के राष्ट्रपति बने।

5. स्वस्थ शरीर- पंचतंत्र में लिखा है कि स्वास्थ्य से अच्छा दोस्त नहीं है और बीमारी से खराब कोई दुश्मन नहीं हैं। मानव जीवन एक अमूल्य धरोहर हैं और दूसरा स्थान स्वास्थ्य का है। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता हैं। शरीर को स्वस्थ रखना एक व्यक्ति का निजी दायित्व हैं। बीमारी की स्थिति में व्यक्ति न केवल स्वयं को, अपितु अपने परिवार का एवं स्वयं का और समाज का समय नष्ट करता है। आप किसी स्वास्थ्य पत्रिका पढ़े अथवा किसी चिकित्सक से परामर्श लें। अंत में यही सलाह दी जाती है कि स्वस्थ शरीर के लिए आप नियमित भोजन और व्यायाम करें।

यदि आप याद रख सकें, तो एक छोटा-सा सूत्र आपको बहुत सी बीमारियों से छुटकारा दिला सकता है- वस्तु प्रयोग में लाओ, अन्यथा नष्ट हो जाएगी (यूज इट ऑर लूज इट)। लाला हरदयाल ने अपनी पुस्तक'हिन्ट फार सैल्फ कल्चर' में लिखा है कि 'अच्छे स्वास्थ्य के बिना जीवन एक भार है। उन्होंने यह भी सलाह दी है कि यदि आप हरी सब्जियाँ खाएँ, कम खाएँ व रोज परिश्रम करें, तो आप स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकते है, '(ईट ग्रीन्स एण्ड रिमेन इन टीन्स)।' व्यायाम माँसपेशियों के नव निर्माण का मुख्य अभिकर्त्ता है।

स्वस्थ रहने के लिए हँसना आवश्यक है। यह एक ऐसा शान्ति प्रदान करने वाला कार्य है, जिसका कोई 'साइड इफेक्ट' नहीं है। यदि आप 20 सैकेण्ड हँसे तो इससे आपके हृदय को इतना व्यायाम प्राप्त होता है, जितना 3 मिनट नौका चलाने से प्राप्त होता है। जापान में एक कहावत

है कि जो समय हँसने में बिताया जाता है, वह समय भगवान के साथ बिताए जाने के बराबर है।' यदि आर्थिक दृष्टिकोण से भी विश्लेषण किया जाए, तो हँसने में सिर्फ 13 माँसपेशियाँ काम में आती है, जबकि गुस्सा होने या करने में 44 माँसपेशियाँ काम में आती है। नारमॅन कजिन्स ने अपनी पुस्तक 'एनाटॉमी ऑफ इलनैस' में यह संदेश दिया है कि गंभीर बीमारियाँ भी हँसकर, विटामिन सी के प्रयोग और सकारात्मक सोच से दूर की जा सकती है। मुस्कान एक दैनिक वरदान है, जिसके लिए हमें हर समय प्रयत्नशील रहना चाहिए। यहाँ तक कि यदि दिखावे के आवरण में हँस न सकें, तो कृत्रिम मुस्कान धारण करने का प्रयास अवश्य करना चाहिए। अधिकतम बच्चे स्वस्थ रहते हैं, क्योंकि वे दिन में औसतन 400 बार हँसते हैं, जबकि एक युवा दिन में औसतन 10-15 बार ही हँसता है।

6. मानसिक शान्ति का चमत्कार– कार्यसूची (प्रोग्रामिंग) एवं अनुकूलन (कंडीशन) से जीवन के वही उत्तर प्राप्त होंगे, जो कि पूर्व निवेशन (फीड) किए हुए हैं। इससे व्यक्ति का आकार सिर्फ गणितीय गणनाओं तक ही सीमित रह जाएगा। 18 वर्ष की आयु में हमको औसतन 1 लाख 48 हजार बार 'नो' (नहीं) सुनना पड़ता है, इसलिए हमारे व्यवहार में नकारात्मक प्रवृत्ति प्रोग्राम हो जाती है और इसी के कारण वैज्ञानिकों का यह कहना है कि हमारी सोच 75 प्रतिशत नकारात्मक हो जाती हैं। अतः मानसिक शान्ति के लिए हमें सर्वप्रथम प्रोग्रामिंग या कंडीशनिंग से बाहर निकालना होगा। इसके लिए ज्ञान, स्वाध्याय, ध्यान के अतिरिक्त व्यावहारिकता की आवश्यकता है। फ्रेंच कौच ने यू.एस. नेवल संस्थान की पत्रिका 'प्रसिडिंग्स' में प्रशिक्षण करते हुए दो युद्धपोतों का चित्रण इस प्रकार से किया है-'एक युद्धपोत समुद्र में प्रशिक्षण पर था, तभी उसे सामने रोशनी नजर आई। युद्धपोत के अधिकारी ने संदेश भेजकर आदेश दिया कि दूर हट जाओ। युद्धपोत के अधिकारी ने पुनः आदेश दिया कि 'मैं कैप्टन बोल रहा हूँ दूर हट जाओ।' इस पर सामने से जवाब आया 'मैं सी-मैन क्लास-टू बोल रहा हूँ, आप दूर हट जाओ।' अंत में कैप्टन ने गुस्से से कहा 'मैं अधिकारी हूँ। मैं एक युद्धपोत की कमान कर रहा हूँ। तुम दूर हट जाओ, तब सी-मैन ने कहा 'श्रीमान मैं एक लाइटहाउस (समुद्र में एक मजबूत स्तंभ) की कमान कर रहा हूँ।'

वास्तविकता की समझ शाँति प्राप्ति का प्रथम चरण है। शारदा माता ने शाँति प्राप्त करने के लिए बहुत ही सरल उपाय बताया है-'यदि तुम शाँति प्राप्त करना चाहते हो, तो दूसरों की गलतियों को ढूँढ़ना बंद कर दो, अपितु अपनी स्वयं की गलतियों को देखो।' नोबेल पुरस्कार विजेता टी.एस. इलियट ने अपनी कविता 'दी वेस्ट लैण्ड' में अंतिम पंक्तियों में संस्कृत के ही शब्दों का बहुत अच्छा प्रयोग किया है। 'दता (गीव), दया धयम (सिमपेथाइज), दमयता (कंट्रोल), शांति शांति शांति। शांति का तो एक ही अर्थ है, इसलिए इलियट ने अनुवाद नहीं किया।

7. श्रद्धा और धैर्य– प्रकृति और ईश्वर में श्रद्धा सहज रूप से आनन्द प्रदान कर जीवन को सुगम बना देती है। स्वयं में विश्वास से मनुष्य उन ऊँचाई तक पहुँच जाता है, जिसकी पालना उसने स्वयं भी नहीं की होती है। ऐसे कई उदाहरण है, जो जीवन का एक मुख्य अंग है। दादा वासवानी ने एक प्रसंग में श्रद्धा के बारे में बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है- एक बार एक समुद्री जहाज में एक परिवार सफर कर रहा था। इसमें एक छोटा बच्चा भी था। अचानक समुद्र में तूफान उठा और जहाज डूबने की स्थिति में आ गया। इससे सभी लोग घबरा गए, परन्तु वह छोटा बच्चा अपनी मस्ती में खेलता रहा। जब उससे पूछा गया कि क्या तुमको डर नहीं लग रहा है तो उसने जवाब दिया 'मेरी माँ मेरे साथ है, मुझे क्या डर।' इस प्रकार अटूट श्रद्धा से बड़ी से बड़ी कठिनाई का आसानी से सामना किया जा सकता है।

सत्य ही है कि 'श्रद्धावान लभते ज्ञानम्' और ज्ञान से ही जीवन का आनंद प्राप्त होता है, जिसे फ्रांस में 'जॉय दी विवेर' कहते हैं। एक उगते कोमल पौधे को प्रतिदिन बाहर निकालकर देखा जाए कि उसमें कितनी वृद्धि हुई है, तो वह पौधा सूख जाएगा। 'माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होए' से स्पष्ट होता है कि कुछ भी प्राप्त करने से लिए धैर्य अत्यन्त आवश्यक है। अंग्रेजी कवि की शैली का कथन 'इफ विन्टर कम्स कैन स्प्रिंग बी फॉर बिहाइन्ड' धैर्य का अनूठा चित्रण हैं।

भौतिक प्रगति तो सभी में निहित है, चाहे वह पौधा, पशु या मनुष्य हो, लेकिन मानसिक शक्ति के लिए प्रयास और दृढ़ निश्चय अत्यंत आवश्यक हैं। 'मैं तूफानों से नहीं डरता, क्योंकि मैं अपनी नाव खेना जानता हूँ।' जीवन में आनंद रूपी उड़ान भरने के लिए जिस प्रकार तितली चकपट्टी (कैटर पिल्लर) को तोड़कर ही उड़ सकती हैं, उसी प्रकार उपर्युक्त व्यावहारिक नियमों के सहारे जीवन में सफलता, उत्कृष्टता की प्राप्ति अवश्यंभावी हैं। जीवन एक ताजा गिरती बर्फ के समान है। इस पर जैसे भी चला जाए, निशान अवश्य ही छूटते है। विश्वविख्यात हेलन केलर, जो जन्म से अंधी थी, से एक व्यक्ति ने पूछा कि आप सदैव प्रसन्नचित्त कैसे रहती है, तो उन्होंने जवाब दिया कि 'मैं प्रतिदिन यह मानकर चलती हूँ कि आज मेरे जीवन का अंतिम दिन है क्यों न मैं इस आखिरी दिन का पूरा आनंद उठा लूँ।

ऐसी आदर्श स्थिति ज्ञान व विद्या से ही प्राप्त की जा सकती है-'सा विद्या या विमुक्तये।' नियम जीवन में अनुशासन लाते हैं। इनके नियमित प्रयोग से आदत बनती है। आदत पर चरित्र निर्भर करता है और चरित्र से भाग्य उदय होता है। इसलिए स्वयं के लिए नियम बनाकर उन पर संचालित करना ही सफलता की कुंजी हैं।

बिग्रेडियर (सेवानिवृत्त)
सिरिसेला, बाली, पाली (राज.)-306701
मो: 9460877333

कभी जूझना न छोड़े जब तक आप अपना निर्धारित स्थान न पा ले, जो कि सबसे अलग है। जीवन में एक लक्ष्य बनाएँ। लगातार ज्ञान प्राप्त करते रहें, कड़ी मेहनत करें और लगन से महान जीवन को प्राप्त करें।

शैक्षिक-चिन्तन

क्रिया कलाप आधारित शिक्षण में शिक्षक और समुदाय की भूमिका

❐ डॉ. राम निवास

सीखना और सिखाना एक गंभीर चुनौती भरा कार्य माना जाता है। जो बच्चे देर से पढ़ने लिखने की शुरूआत करते हैं वे कक्षा में पिछड़ जाते हैं। ऐसे बच्चे बुनियादी साक्षरता और गणना कौशल में पीछे रह जाते हैं। बच्चे के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत हिस्सा छह वर्ष की आयु से पूर्व ही बन जाता हैं यह भी देखा गया है कि अपने जीवन के आरंभिक वर्षों में अभावों और उपेक्षा, प्रताड़ना भरा जीवन जीने वाले बच्चों का मस्तिष्क स्कैन के विश्लेषण से पता लगा कि उनके मस्तिष्क के महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों के विकास में कमी पायी गई।

1. बच्चों की सीखने की जरूरतें पूरा करना :– बाल्यावस्था की शिक्षा के लिए आज उत्कृष्ट पाठ्यक्रम और एक ऐसा शैक्षिक ढाँचा तैयार किया जाए जो बचपन को तनावमुक्त कर उसे सँवारने का कार्य करें। प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों की जरूरत के अनुसार सीखने की जरूरतें पूरी होनी चाहिए। प्रत्येक शिक्षक के लिए यह स्मरण रखना अनिवार्य है कि बच्चों को सीखने संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति बच्चे के संपूर्ण जीवनकाल में सीखने और विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है। इसलिए आज शिक्षण की पहली शर्त है बच्चों की सीखने संबंधी सभी जरूरतों को पूरा करना। यह प्रत्येक स्तर पर आवश्यक है– अभिभावक के स्तर पर, विद्यालय के स्तर पर और कक्षा–कक्ष के स्तर पर।

2. कक्षा में सभी बच्चे सृजनशील रहें:– सभी बच्चे कक्षा में क्रियेटिव रहने चाहिए। क्रियेटिव बच्चे सजग भी रहते हैं और सीखने की प्रक्रिया से जुड़े भी रहते हैं। इसलिए क्रिया कलाप आधारित शिक्षण की अनिवार्यता है कि विद्यार्थी अपनी समस्त क्षमताओं को प्रदर्शित कर सकें। इसके लिए आवश्यक है कि विद्यालय में नियमित रूप से भाषा मेला, गणित मेला, भाषा सप्ताह, गणित सप्ताह जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ। इन कार्यक्रमों का रूप सामुदायिक हो। जिसमें अभिभावक शिक्षक समुदाय और आस पड़ोस के विद्यालयों को भी शामिल किया जाए।

साप्ताहिक रूप से भाषा और गणित केंद्रित स्कूल असेम्बली का आयोजन किया जा सकता है। भाषा और गणित की गतिविधियों के माध्यम से प्रसिद्ध लेखकों, गणितज्ञों की वर्षगाँठ को भी उत्सव के रूप में मनाया जा सकता है। पुस्तकालय के आस पास गतिविधियाँ करवाई जा सकती है जैसे कहानी, रंगमंच, समूह में पढ़ना, लिखना। बच्चों द्वारा किए गए मूल लेखन बनाए गए चित्र इत्यादि को प्रदर्शित भी किया जाए जहाँ से सभी बच्चे शिक्षक उन्हें देख सकें। छात्र छात्राओं को 'साप्ताहिक मजेदार पहेली' हल करने जैसे सत्र भी दिए जाएँ। जो स्वाभाविक रूप से तार्किक और गणितीय सोच को विकसित करने में मदद करें। बच्चों को नियमित रूप से भी गतिविधियाँ करवाई जा सकती है। 'व्यावहारिक जीवन में मौजूद गणित' के बीच संबंध का पता लगाया जाए। बच्चों से इस पर चर्चा करके गतिविधि का रूप दिया जा सकता है। कक्षा एक से पाँच तक के सभी बच्चों के पास भाषा और गणित की कार्य पुस्तिकाएँ भी हो। जिससे संबंधित पाठों पर विभिन्न प्रकार के अभ्यास बनाने में सहायता मिलेगी। गतिविधियों का प्रयोग और बच्चों के द्वारा किए गए अभ्यास कार्य का अवलोकन करने पर शिक्षक शिक्षिकाओं को पता लग जाता है कि बालक बालिकाएँ क्या कर सकते हैं और अधिक अच्छा प्रदर्शन करने के लिए उनकी सहायता किस प्रकार की जा सकती है। कक्षा शिक्षण में बच्चों के अधिगम संबंधी सभी चीजों पर निगाह रखनी होती है। विद्यार्थी की सारी प्रगति और उसकी कमियों को सामने रखना शिक्षक का काम है। शिक्षा का उद्देश्य, मानव जीवन के उद्देश्य से किसी भी दशा में कम नहीं है। शिक्षक कौन होता है। वह जो कि बच्चों को 'स्पायर' करे। प्रत्येक भाषा का अपना–अपना ढाँचागत व्याकरण होता है। एक भाषा से दूसरी भाषा में सामंजस्य होना चाहिए। दूसरे की बोली भाषा भी अपनी लगनी चाहिए। शिक्षक कक्षा में यति, गति, ताल, लय और छंद के द्वारा भाषाओं को पुनर्जीवन देता है। हँसने की भाषा एक है। समस्त प्रणियों में सिर्फ मानव ही हँस सकता है। यह मनुष्य का वैशिष्ट्य है। इसलिए कक्षा में भी तनाव मुक्त हँसी का वातावरण बच्चों को मिलना चाहिए। जहाँ वे अपने मन की बात कहने में पूर्णतया स्वतंत्र हो।

3. विभिन्न विषयों का उद्‌भव :– मनुष्य के बच्चे जन्म से ही हेल्पलैस होते हैं। जानवरों के बच्चे जन्म के बाद कुछ समय तक तेजी से सीखते हैं। यह सारा प्राकृतिक और प्रकृति से परे का जो भी ज्ञान–विज्ञान है यह मनुष्य ने ही हमारे सामने प्रस्तुत किया है। सभी प्राणियों में सिर्फ मनुष्य ही ऐसा है जो कि सोच सकता है। आबजर्व करके निर्णय भी मनुष्य ही ले सकता है। इसलिए जीवन में सर्वप्रथम शिक्षा का ही प्रवेश हुआ है। शिक्षा सबसे पहले आई। अन्य विषय शिक्षा के बाद आए हैं। मनुष्य एक दूसरे पर शासन करता है जो कि सबसे कठिन कार्य माना जाता है। यहीं से राजनीति विज्ञान आया। अतीत को याद करना कि क्या–क्या हुआ था यह इतिहास आ गया। प्राणी कहाँ से आए यह जीव विज्ञान आ गया। शिक्षक संस्कृति का प्रतिनिधि है। शिक्षा का भी अपना व्यक्तित्व है। इसलिए शिक्षण शास्त्र अपने आप में एक सुंदर सुव्यवस्थित और पूर्ण विषय है।

4. क्रिया कलाप आधारित शिक्षण:– एक्टीविटी आधारित अधिगम संप्राप्ति शिक्षण पर आज विशेष बल दिया जा रहा है। वह इसलिए कि हमारा कक्षा शिक्षण परंपरा से एक साँचे में बंधा हुआ है। शिक्षक इस साँचे से बाहर आए। कक्षा शिक्षण में एक्टीविटी की बात आती है। ये एक्टीविटी कब करायी जाएँ। इनका समय क्या हो? प्रथम कालांश या अंतिम कालांश सबसे पहले लर्निंग के लिए माहौल तैयार किया जाए। बच्चों को तनाव मुक्त करना और उनका अटेंशन क्रियेट करना मनुष्य का प्रकृति प्रदत्त स्वभाव है कि वह प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जगह बना ही लेता है। बच्चों

को गोल घेरे में खड़ा करके उनसे सभी बच्चों के नाम पूछे जाएँ। ऐसा करने से सभी बच्चों को सभी के नाम याद रहते हैं उनका आपस में अच्छा परिचय भी हो जाता है। इस प्रकार एक्टीविटी को आगे बढ़ाया जा सकता है जैसे–

- सभी विद्यार्थी अपने जीवन के उद्देश्य एक पृष्ठ पर लिखें।
- अपने सबसे अच्छे टीचर का नाम बताओ और लिखो कि वह आपको क्यों अच्छा लगता है।
- अपने सबसे अच्छे मित्र का नाम बताओ और लिखो उसमें क्या–क्या अच्छाइयाँ हैं।
- कोई छोटा नाटक मंचित करके उसका शीर्षक बच्चों से पूछा जाए।
- जीवन कैसा होना चाहिए। कैसे जिएँ।
- समय कैसे बिताएँ। दो पत्थर और दो पेड़ जो पास–पास पड़े और खड़े हुए हैं क्या वे अच्छे पड़ोसी होते हैं?
- अच्छे भविष्य का इंतजार।
- मेरे सपनों का घर, विद्यालय, शिक्षक, गाँव, नगर, संसार।

इस प्रकार के विषयों पर विद्यार्थियों से मौखिक प्रस्तुतीकरण भी कराया जा सकता है। वे अपने विचार सहर्ष प्रकट करने लगते हैं। जब उन्हें ऐसा लगता है कि उनकी रुचि और सोच महत्त्वपूर्ण है और उसे सुना जा रहा है। शिक्षण में क्वालिटी एक यात्रा है जो सतत चलने वाली प्रक्रिया है जिसका कहीं पर अंत नहीं है। आगे और अच्छा और अच्छा। विद्यार्थियों के विचारों और संकल्पनाओं को बाहर लाया जाए। इसके लिए क्रिया कलाप आधारित युक्ति की जरूरत है।

5. बच्चों की अपेक्षाओं के अनुरूप शिक्षण और पाठ्यक्रम :– कक्षा शिक्षण की उपयोगिता पर विचार किया जाए। अच्छे टीचर की जो बात की जा रही है। इस पर विचार करने की जरूरत है। अच्छे टीचर में क्या होना चाहिए। वह पाठ्यक्रम और बच्चों की अपेक्षाओं, आकांक्षाओं पर शत–प्रतिशत खरा उतरना ही चाहिए। शिक्षण बच्चों के अनुरूप होना जरूरी है। उन पर कुछ भी थोपा नहीं जाए। हम जो भी निर्णय लें उसे सोलिड डाटा बेस के आधार पर ही ले। एटीट्यूट टेस्ट, एचीवमेंट टेस्ट होने चाहिए। अभी अनुमान के आधार पर निर्णय लिए जा रहे हैं और अनुमान प्रत्येक वर्ष बदल जाते हैं। शिक्षा को शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में ही देखा जाए। आउट कम बेस की बात की जा रही है। कैरीकुलम भी आउट कम बेस बनाया जा रहा है। मूल्यांकन भी आउट कम बेस ही करना पड़ेगा। परंतु अभी हमारा रिपोर्ट कार्ड कन्टेट बेस है। योजनाओं के क्रियान्वयन में जो गतिरोध आ रहे हैं उन्हें किस प्रकार दूर किया जाए। यह हम सभी की जिम्मेदारी है हम अपने–अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाएँ। एजुकेशन लीडर के रूप में क्या हम ठीक ढंग से ग्रुप को लीड कर रहे हैं। बहुत सारे कम्पोनेंट हैं– जैसे टीचिंग लर्निंग का कम्पोनेट है, सामाजिक जिम्मेदारी का कम्पोनेंट है।

6. शिक्षण विषय के कार्य निष्पादन पर ध्यान दिया जाए :– शिक्षक अपने शिक्षण में विषय की परफोर्मेन्स पर ध्यान दें। वह कैसी है इस पर विचार किया जाए। कक्षा शिक्षण में आई.सी.टी. एक सपोर्ट है। यह टीचर का रूप नहीं ले सकता। यह ठीक है कि इससे विषय के शिक्षण में खोई हुई रुचि जाग्रत की जा सकती है। जो चीज कागज पर लिखी जाती है उसे अपने दिमाग में भी लिखें। कक्षा में पढ़ाने की क्या तैयारी है, पूर्व तैयारी की है या नहीं। संबंधित विषयवस्तु की पाठ योजना आपके मस्तिष्क में क्या है। उदाहरण क्या दिए जाएँगे। वे उदाहरण विषयवस्तु को किस प्रकार सार्थक और उद्देश्यपूर्ण बनाएँगे। सीखने के लिए दिए जाने वाले उदाहरण बच्चों की सहायता कर रहे हैं या नहीं। इन सभी पर शिक्षक विचार कर लें। साथ ही साथ बच्चों को नए कॉन्सेप्ट क्या दिए जाएँगे। यदि आप फिल्म 'वैल्डन डैड' देखें तो उसमें 'भ्रष्टाचार' को दिखाया गया है। 'थ्री इडियट्स' फिल्म में क्लास रूम पर बहुत सारे कमेंट्स किए गए हैं।

7. ई कंटेंट का निर्माण :– प्रत्येक विषय का 'ई कंटेंट' बनाया जा रहा है जो कि एक अच्छी शुरुआत है। यदि हम प्रोएक्टिव नहीं हैं, तो चीजें हम से छिन जाती हैं। कम्प्यूटर और डिजिटल साइंस ने हमें बहुत सारे कॉन्सेप्ट दिए हैं। शिक्षक अपने ही मोबाइल से वीडियो बना लें और कक्षा में दिखाएँ। सतत मूल्यांकन में बच्चों की परफोर्मेंस को देखा जाए साथ ही उसका रिकार्ड भी रखें। शिक्षा में उच्च गुणवत्ता और शोध की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। सामाजिक जिम्मेदारी, जागरूकता और नैतिकता को व्यावहारिक जीवन में उतारा जाए। अनेक विषय हैं जिन पर बच्चों से चर्चा करके उनसे वचन लिया जा सकता है शपथ ग्रहण भी करवाई जा सकती है यथा–

- देश में भूख से मरने वाले बच्चे भी हैं अतः थाली में जूठा भोजन कभी नहीं छोड़ना।
- देश में पेय जल संकट है इसलिए : जल संरक्षण करना, उसे गंदा होने से बचाना।
- प्लास्टिक पोलीथीन प्रदूषण बढ़ाती है अतः प्लास्टिक के बैग/पोलीथीन का प्रयोग नहीं करना।
- कूड़ा कचरा जलाने से वातावरण प्रदूषित होता है। अतः कूड़ेदान में ही डालना। उसे जलाना नहीं।
- विद्यालय ज्ञान प्राप्ति का सुंदर स्थान है अतः विद्यालय परिसर में गंदगी न फैलाना।
- आस–पास पानी जमा होने से मच्छर पनपते हैं अतः घर के आसपास पानी जमा न होने देना और सफाई रखना।

8. शिक्षा का क्षेत्र विशाल है :– शिक्षा का क्षेत्र विशाल हो गया है। अब 'ला' युनिवर्सिटी बन गई है। 'शिक्षा' यूनिवर्सिटी बन रही है। 'मेडिकल' यूनिवर्सिटी भी बन रही है। लेकिन यूनिवर्सिटी बनाने से पूर्व हमारे पास पर्याप्त संसाधन और सामग्री भी होनी चाहिए। इंटीग्रेटिड कोर्स चल रहे हैं। इंटीग्रेटिड का मतलब है इंडिपेडेंट नहीं होना। इस कोर्स को पढ़ाने के लिए क्या हमें वह टीचर चाहिए जो बी.ए. या बी.एस.सी. को पढ़ाता है। क्या अपेक्षित क्वालिटी आ पाएगी। आज हमारे बच्चे जितना स्कोर करते हैं वे वास्तव में उतना है नहीं। मेल फीमेल का गैप, अरबन रूरल का गैप किस प्रकार पाटा जाए। स्टेटस जानना और आगे बढ़कर कार्यवाही करना दोनों अलग–अलग बातें हैं। इन सभी प्रश्नों के उत्तर एक साथ नहीं मिलते बल्कि इमर्ज होते हैं। फिलहाल यह प्रक्रिया चल रही है।

आज हम सभी देख रहे हैं कि कोई भी इंजीनियर रेगुलर कोर्स पास करके जॉब प्राप्त नहीं कर सकता। उसे अन्य उच्च क्वालिटी के कोर्स

करने पड़ेंगे। 'इमोशनल इंटेलीजेंश' का कोर्स भी आ गया है। निर्देश का पालन करने वाला बच्चा चाहिए इंटेलीजेंट बच्चा नहीं चाहिए। सह अस्तित्व होना चाहिए। अभी भी सभ्य होने की प्रक्रिया चल रही है। कृत्रिम दिमाग मनुष्य का कल्याण नहीं कर सकता। आधारभूत दिखने वाला विकास चाहिए। जीवन पद्धति बदलती जा रही है। इस बदलाव पर दृष्टि रखनी चाहिए। भारत में विज्ञान तकनीकी और अंग्रेजी शिक्षा का व्यापक प्रसार-प्रचार हुआ है। व्यावसायिक शिक्षा के साथ-साथ कुछ विकृतियाँ भी आ गई हैं। मनोविकारों के फैलाव में भारतीय आदर्श और मूल्यों के प्रति सचेत रहना शिक्षा ही सिखाती है। हमारे लिए 'शिक्षा' और 'कर्म' दोनों ही महत्त्वपूर्ण हैं। यह भी उचित ही है कि बड़े से बड़ा वैचारिक ज्ञान मस्तिष्क में भरने से अच्छा है कि समाज की एक छोटी से छोटी समस्या का समाधान सदा के लिए करना।

वर्तमान समाज में कुछ समस्याएँ और नकारात्मक विचार भी दिखाई पड़ते हैं। इन्हें समाप्त करने के लिए आप क्या करेंगे। संबंधित समस्या के सामने निश्चित स्थान पर समाधान के उपाय अपने मन से सोचकर लिखिए-

उदाहरण :-

क्र. सं.	समस्याएँ	समाधान के उपाय
1	धार्मिक पहचान का दुराग्रह।	धार्मिक पहचान को लौकिक जीवन से अलग रखे।
2	निजी स्वार्थ खत्म नहीं कर पाना।	सभी के हित के लिए प्रयास करना। सामुहिकता की भावना का विकास करना।
3.	समाज में संघर्ष है।	दीर्घ कालीन शांति के प्रयास करना परस्पर सद्भाव बनाए रखना। संघर्ष के कारणों को खोजकर खत्म करना।
4.	समाज, राष्ट्र का प्रगति की दौड़ में पिछड़ जाना।	जो समाज, राष्ट्र शिक्षा में आगे होगा वह प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी रहेगा। शिक्षा को जन-जन तक पहुचाएँ।
5.	समाज में नशे की दुष्प्रवृत्ति है।	नशीले पेय पदार्थों के सेवन से होने वाली हानि को उजागर करना। नशे के प्रति समाज को जागरूक करना।

बालक बालिकाओं की आकांक्षाओं को जगाए रखना जरूरी है। उनके सपने मरने नहीं दिए जाएँ। इसके लिए शिक्षण विधि में जीवंतता अनिवार्य है। जो व्यक्ति मरे हुए सपनों, आकांक्षाओं को पुनः जगाए वही नायक बन जाता है।

विद्यालय, महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले छात्र-छात्राएँ जब शिक्षा पूरी करके जाएँ तो वे एक विचार उस संस्था और शिक्षकों से लेकर जाएँ। वे उस विचार को कार्य में बदलकर आगे बढ़ाएँ। तभी हम शिक्षा के अपने वांछित उद्देश्यों की पूर्ति कर सकेंगे। वैचारिक ज्ञान कोई संदेश नहीं देता बल्कि व्यक्ति का जीवन और उसके किए गए कार्य ही वास्तविक जीवन संदेश देते हैं।

9. शिक्षक-शिक्षिकाएँ आत्म निरीक्षण करें :- भाषा, साहित्य के शिक्षण में भाषा का रूप सर्वाधिक रचनात्मक होता है। पाठ योजनाएँ भी रचनात्मकता को दृष्टिगत रखते हुए बनाई जानी चाहिए, जिससे अर्थों या व्याख्याओं की विविधता उद्घाटित करने के लक्ष्य की पूर्ति की जा सके। पाठ पढ़ाने के उपरान्त शिक्षक शिक्षिका को चाहिए कि वे आत्मनिरीक्षण भी करें। पाठ पढ़ाना सफल या असफल जैसा भी अनुभव हो, दोनों ही परिस्थितियों में विचार किया जाए। वे कौन से कारण थे जिनसे पाठ असफल हुआ? जैसे कि पाठ को भाषण के समान बोल दिया गया। पाठ शिक्षण में विद्यार्थियों को शामिल न किया जाना। इन पर विचार करने से अपने पाठ पढ़ाने के तरीके में बदलाव किया जाए। यदि पाठ पढ़ाना सफल हुआ है तो भी उन बिंदुओं, उदाहरणों और क्रिया कलापों पर विचार किया जाए। जिनसे अध्यापन कार्य की सफलता में मात्रात्मक और गुणात्मक वृद्धि हुई है। सफल शिक्षण में यह होता है कि कक्षा में जब शिक्षक कोई किसी भी विषय का एक पाठ लेकर जाते हैं, तो उस कक्षा परिवेश में प्रवेश करने के बाद वह एक पाठ प्रत्यक छात्र-छात्रा के लिए उनकी रुचि संस्कार में ढलकर अपना-अपना पाठ बन जाता है। जितने विद्यार्थी हैं वह उतने ही अनेक रूपों में साकार हो जाता है। अब शिक्षक के लिए भी वह पाठ उस रूप में नहीं रहता। जो कक्षा में जाने के पहले था। शिक्षण कौशल की इस प्रक्रिया में भाषा, साहित्य, कविता, कहानी, एकांकी, नाटक, जीवनी, संस्मरण, निबंध, यात्रा वृत्तांत इत्यादि विविध विधाओं के अनेक अर्थ उद्घाटित होते हैं।

10. उपलब्ध ज्ञान का रचनात्मक अतिक्रमण :- एक विषय का पाठ बहुत से संदर्भों से जुड़ा हुआ होता है। अब यदि पाठ को शिक्षण के एक ही विषय और संदर्भ को दृष्टिगत रखते हुए पढ़ाया जाए तो यह शिक्षण आधा अधूरा और एकांकी है। मात्रा और साहित्य संबंधी पाठ भी साहित्य से इतर राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र सहित वर्तमान सामाजिक जीवन की घटनाओं से भी संबंद्ध होता है। इन विषयों से अलग रहकर शिक्षण किया जाएगा तो वह व्यापकता को प्राप्त नहीं करेगा। क्योंकि उपर्युक्त विषयों की भूमिका किसी न किसी रूप में चाहे वह प्रत्यक्ष हो या परोक्ष साहित्य रचना में, भाषा अध्ययन में पाई जाती है। नगर जीवन में जन्में पले बालक बालिकाएँ अधिकांशतः एकांकी परिवारों के अभ्यस्त होते जा रहे हैं। लोकजीवन से उनका जुड़ाव प्रायः कम ही है। लोक जीवन से व्यावहारिक जीवन कौशल का ज्ञान बहुत पाया जाता है। अनेक कथन पहेलियाँ, सुक्तियाँ, कहावतें और मुहावरे जो किसी सत्य घटना की उपज होते हैं ये जीवन में व्याप्त मानवीय संवेदनाओं को स्पर्श करते हैं जो दैनिक व्यवहार में सुनाई पड़ते हैं। इनकी ओर आज बच्चों और नई पीढ़ी के ऊर्जावान युवाओं का ध्यान आकर्षित कराना जरूरी है। कुछ उदाहरण इस प्रकार है-

1. घोड़ा अड़ा क्यों ?
पान सड़ा क्यों ?
रोटी जली क्यों ?

इसका एक ही उत्तर दिया जाता है कि- 'फेरा नहीं था!' अमीर खुसरो की पहेलियाँ लोक जीवन में मौखिक रूप से सुनाई देती हैं। पहेलियों से बच्चों के सोचने विचारने का दायरा बढ़ता है। वे आपस में विचार साझा करने लगते हैं। अनुमान लगाते हैं, निष्कर्ष पर भी पहुँचते हैं। कुछ रोचक पहेलियाँ उत्तर सहित दी जा रही है-

1. एक सजन वो खड़ा पियारा
जासे घर मोरा उजियारा
भोर भई तब विदा मैं कीया
ऐ सखि साजन ? ... ना सखि दीया।

2. वो आवै तब शादी होय
उस बिन दूजा और न कोय
मीठे लागे उसके बोल

ऐ सखि साजन ? .. ना सखि ढोल।

3. **नीला कंठ पर है हरा**
शीश मुकुट वो नाचे खड़ा
घटा देख अलावे जोर
ऐ सखि साजन ?...ना सखि मोर।

4. **दूर दूर करत दौड़ा आवे**
कभी आँगन कभी बाहर जावे
देहली छोड़ कहीं नहीं सुत्ता
ऐ सखि साजन ?....ना सखि कुत्ता।

आज उपलब्ध ज्ञान के मौजूदा ढाँचे के सामने भी कई प्रकार की चुनौतियाँ हैं। जिन्हें कक्षा में वाद-प्रतिवाद की प्रक्रिया से होकर गुजरना होगा। 'संवाद' से ज्ञान नए रूप में सामने आता है। यह उपलब्ध ज्ञान का रचनात्मक अतिक्रमण है। साहित्य शिक्षण के संदर्भ में इस प्रक्रिया का नाम दिया जाता है पाठ के नए अर्थों को बोध कराना। ज्ञान एवं शिक्षण कौशल विषय के जगत में शिक्षा, शिक्षक, प्रशिक्षक कुछ न कुछ किसी न किसी रूप में नया जोड़ते रहते हैं। यही नवाचार है।

11. शैक्षिक ढाँचे की एकरूपता :– शिक्षा नित नई संभावनाओं को जन्म देती है। ये संभावनाएँ जब सीखने और सिखाने वाले की व्यक्तिगत रुचि, इच्छा की सीमाओं में बंध जाती हैं तब दोनों की क्षमताएँ भी सीमित संकुचित हो जाती है। यह ज्ञान के प्रवाह में अवरोध है। आज 'ज्ञान का विस्फोट' और समाज में सबसे आगे रहने की प्रतिस्पर्धा भी देखी जा रही है। इस पर समाज में संवाद किया जाना आवश्यक हो गया है। विद्यालयी स्तर पर बदलती हुई शिक्षण संबंधी जरूरतों के ऊपर चिंतन किया जाए। कहाँ पर कमी है उसे दूर किया जाना चाहिए। हमें बच्चों और शिक्षकों की बदली हुई जरूरतों के साथ संगति बिठानी होगी। देश का शैक्षिक ढाँचा एकरूपता लिए हुए होना चाहिए। जिसमें विद्यार्थी अपनी जिंदगी के निर्णय स्वयं लेना सीखें। उन्नति के मार्ग उनके लिए खुले हों। वे अपनी रुचि और सहजता के साथ अपने परिवार समाज और देश की भलाई, सेवा के लिए आगे बढें। देखे गए सपने साकार करें। हमारे बालक बालिकाएँ परिवार और विद्यालय के शिक्षण कक्ष में भी व्यर्थ की टोका टाकी और उपदेश से मुक्त होने ही चाहिए। शिक्षक परिवार उनके साथ हर क्षण उपस्थित रहे किंतु एक सहायक और मित्र के रूप में हो। बच्चों को ऐसा लगे कि हम अकेले नहीं है जरूरत पड़ेगी तो सहायता अवश्य मिल जाएगी। हमें एक ऐसी शिक्षा की जरूरत है।

12. मूल्यांकन की व्यावहारिकता :– यह भी देखा जाता है कि हमारा एसेसमेंट कुछ है और बच्चा कुछ और निकलता है। यह सब कैसे हुआ। कमी कहाँ पर रह गई है उसे ढूँढकर ठीक करना जरूरी है। पढ़ाना लिखाना आज है और उसका मूल्यांकन दो या तीन माह में किया जाए यह ठीक नहीं है। जब शिक्षण हो रहा है तो साथ-साथ उसका मूल्यांकन भी किया जाए। बालक-बालिकाओं के सर्वांगीण विकास की बात की जा रही है। यहाँ पर पहले प्रश्न यही है कि सर्वांगीण विकास कैसे करें? क्या विद्यालयों, विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम और पाठ्य सहगामी गतिविधियों के द्वारा यह संभव है। इसका मूल्यांकन कैसे करेंगे? पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की पूर्ति किस रूप में हुई है इसे किस प्रकार मापा जाएगा? बच्चे की सोच और व्यवहार में आए परिवर्तन को मापने, उसका मूल्यांकन करने का पैमाना क्या हो? इसमें स्पष्टता होनी चाहिए। इसके लिए हमें डिफ्रेंट किस्म के टेस्ट बनाने होंगे और उनका प्रयोग भी करना होगा। इस कार्य के लिए विशेषज्ञता की जरूरत है। जीवन में प्रगति हो रही है यह शुभ है। परन्तु यह भी ध्यान रखना है कि प्रगति कुछ बर्बादी साथ लेकर तो नहीं आ रही है। प्रगति अथवा विकास जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण है। परंतु विकास की दौड़ में हम भारतीय संस्कृति आदर्शों और स्वस्थ जीवन मूल्यों की परम्परा का तोड़ नहीं दें। शिक्षा में भी यह ध्यान रखा जाए।

13. बच्चा अपने ज्ञान का सृजन और स्व मूल्यांकन भी करता है :– प्रत्येक बालक बालिका का दिमाग स्वतंत्र है। वे एक दूसरे से अलग हटकर सोच सकते हैं। यह उन्हें मनुष्य होने के नाते प्रकृति से वरदान मिला है। अध्यापक ज्ञान प्राप्ति में सहायक है। विद्यालयी स्तर पर बच्चो का सीखना कैसा हो रहा है आज इसे सरकार द्वारा भी गम्भीरता से लिया जा रहा है। शिक्षक शिक्षिकाएँ बच्चों के लिए पढ़ने लिखने का वातावरण बनाएँ। कक्षा में सीखने का आनंददायी वातावरण बनाने के लिए धैर्य के साथ-साथ बाल मनोविज्ञान की गहरी समझ भी हमारे शिक्षक शिक्षिकाओं को होनी चाहिए। इस हेतु वे सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अपनी प्रतिभागिता सुनिश्चित करें। शिक्षण संबंधी मॉड्यूल, नई विकसित सामग्री और संबंधित विषय की पत्र पत्रिकाएँ नियमित रूप से विद्यालय में मंगवाएँ और उनका अध्ययन करें। बच्चा अपने ज्ञान का सृजन स्वयं भी करता है। बच्चा भी अपना स्वयं का मूल्यांकन करता रहता है। समस्यात्मक स्थिति में वह अपने ज्ञान का प्रयोग करता है। ज्ञान का कभी भी और कहीं पर भी अंत नहीं है इसलिए कहा गया है कि ज्ञान अनंत है, असीम है।

एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.सी.ई.आर.टी.)
कप्तान दुर्गा प्रसाद चौधरी मार्ग,
अजमेर 305004
मो: 9549737800

एक मंदिर बन रहा था। देश भर से आए शिल्पी पत्थरों पर छैनी से काम कर रहे थे। एक पत्थर कारीगरों के मुखिया ने बेकार समझकर फेंक दिया। रास्ते में पड़ा वह पत्थर मजदूर-राहगीरों की ठोकरें खाता, इधर-उधर होता व उदास मन से देखता रहता कि और तो सँवरकर मूर्ति का रूप लेकर निखर रहे हैं। मैं अभागा पैरों के नीचे दबाया जा रहा हूँ।

एक दिन एक राजकलाकार उधर से गुजरा। उसने वह बेकार पड़ा पत्थर उठाया, छैनी चलानी आरंभ की व देखते-देखते कुछ ही घंटों में एक सुंदर-सी मूर्ति तराशकर खड़ी कर दी। सबने उसकी प्रशंसा की कि वह बड़ा प्रतिभाशाली है। एक राह के रोड़े को रूपांतरित कर दिया। कलाकार बोला- मैं तो औरों की तरह ही हूँ। जो पत्थर में से प्रकट किया है, वह था पत्थर के अंदर ही। मैंने तो मात्र पहचाना व उकेरा है।

हम सबके भीतर महानतम, श्रेष्ठतम बनने की संभावनाएँ हैं। कभी-कभी जीवन को गढ़ने वाला कोई कलाकार, गुरु, मार्गदर्शक मिल जाता है तो हम क्या से क्या बन जाते हैं। सौभाग्य का यह अवसर सबके लिए समान रूप से है।

शैक्षिक उन्नयन

हम भी करें - शिक्षा में नवाचार

❒ जुगराज राठौर

प्रत्येक वस्तु या क्रिया में परिवर्तन प्रकृति का नियम है। परिवर्तन से ही विकास के चरण आगे बढ़ते है। परिवर्तन एक जीवन्त, गतिशील, आवश्यक क्रिया है, जो समाज को वर्तमान व्यवस्था के प्रति और अधिक उपयोगी तथा सार्थक बनाती है। परिवर्तन और नवाचार एक दूसरे के पारस्परिक पूरक या पर्याय है। नवाचार कोई नया कार्य करना मात्र न होकर किसी भी कार्य को नए तरीके से करना भी है।

नवाचार (नव+आचार) अर्थात किसी उत्पाद, किसी उत्पाद प्रक्रिया या सेवा में थोड़ा या कुछ बड़ा परिवर्तन लाने से है। इसके अन्तर्गत कुछ नया और उपयोगी अपनाया जाता है, जैसे कोई नई विद्या या नई तकनीक।

प्रो. उदय पारिख एवं टी.पी. राव ने नवाचारो को कुछ इस तरह परिभाषित किया है। ''किसी उपयोगी कार्य के लिए किसी व्यक्ति या निकाय के द्वारा किया गया विचार अथवा अभ्यास नवाचार कहलाता है। ये सभी कार्य ऐसे होते हैं जो पहले कहीं न कहीं, किसी न किसी के द्वारा पूर्व में किए जा चुके हैं, परन्तु हमारे द्वारा पूर्व में किए गए कार्य को यदि नई रचनात्मक शैली प्रदान की है तो यही प्रयास नवाचार बन जाता है।''

यूनेस्को द्वारा 1971 में नवाचार को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि ''नवाचार एक नूतन विचार की शुरूआत है। यह एक तकनीकी प्रक्रिया, जिसका विस्तृत उपयोग प्रचलित व्यवहार तथा तकनीकी के विरूद्ध किया जाता है। यह मात्र परिवर्तन के लिए परिवर्तन नहीं है, बल्कि इसका क्रियान्वयन और नियन्त्रण, परीक्षण एवं प्रयोगों के आधार पर किया जाता है।''

कोठारी आयोग – 1964 तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1986 में भी शिक्षा में नवाचारो की बात की है। **यशपाल समिति** की सिफारिश में बस्ते को बोझ को कम करने के लिए जो सुझाव दिए थे, उसमें पाठ्यक्रम निर्माण में शिक्षकों को ज्यादा से ज्यादा अवसर देने और शिक्षको के नवाचारों पर ज्यादा जोर देने को

इंगित किया है।

राज्य में लागू की गई शैक्षिक परियोजनाओं यथा–शिक्षाकर्मी, लोक जुम्बिश, डी.पी.ई.पी., एस.एस.ए., रमसा व समसा में भी शैक्षिक नवाचारो पर विशेष बल दिया गया है, जिसके पर्याप्त लाभ हमारी शिक्षा व्यवस्था को मिले हैं। नई शिक्षा नीति 2019 में स्कूलो में एस.डी.एम.सी/एस.एम.सी. के अतिरिक्त एस.सी.एम.सी. का गठन विद्यालय विकास हेतु एक नवाचार ही है। वर्तमान में विभाग एवं परियोजना द्वारा अपनाए गए अनेक नवाचारों ने शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण विकास के लक्ष्य प्राप्त करने में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाई जा रही है।

शैक्षिक नवाचारों कि आवश्यकता के सम्बन्ध में 'राबर्ट मडौक' का कथन है कि ''दुनिया बहुत तेजी से बदल रही है, अब बड़े छोटो को हरा नहीं पाएँगे। अब तो तेज वह है जो धीमे को हराएँगे।''

स्पष्ट है यदि हमें अपने छात्रों की प्रगति करनी है तो हमें छात्रो के नामांकन, उपस्थिति और ठहराव बढ़ाने के साथ ही रोचक नवाचारों के माध्यम से विद्यालय के परिवेश में बदलाव लाना ही होगा।

मेरे दृष्टि में शिक्षा के सार्वजनिकीकरण हेतु सबसे महती आवश्यकता विद्यार्थियों की नियमितता एवं ठहराव ही है यदि यह संभव हो जाता है तो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने की राह में निरन्तर प्रगति संभव है। विद्यालय कि हर गतिविधि में परिस्थितिवश कुछ नया जोड़कर नवाचार अपनाया जा सकता है। ध्यान रहे यह नवाचार सभी को आन्ददायी लगे, यदि ऐसा संभव नहीं हो पाता है, तो हम अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाएँगे।

प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में कुछ नवाचार इस प्रकार से हो सकते हैं।

1. **आओ मनन करें** – रोचक एवं प्रभावी प्रार्थना सभा के दौरान छोटे माइक सेट का उपयोग, अध्यापकों के साथ–साथ छात्रों द्वारा बेहतर प्रस्तुतियों पर पुरस्कार एवं प्रोत्साहन देना। इससे विद्यार्थियों की झिझक खुलेगी तथा अभिव्यक्ति क्षमता के विकास में भी मदद मिलेगी।
2. **हमारे स्टार्स–** विद्यालय में प्रतिमाह सर्वाधिक उपस्थिति वाले छात्रों को शालाप्रबन्धन समिति की मासिक बैठक में 'स्टार्स ऑफ द क्लास' सम्मान तथा वर्ष में सर्वाधिक औसत उपस्थिति वाले छात्र को गणतन्त्र दिवस पर 'स्टार्स ऑफ द स्कूल' सम्मान देकर प्रोत्साहित करना। इससे छात्रों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा जन्म लेगी तथा उनकी दैनिक उपस्थित में वृद्धि होगी, जो गुणात्मक शिक्षा हेतु अति आवश्यक है।
3. **सादर आमन्त्रण–** विद्यालय में अनियमित रूप से या विद्यालय से पलायन करने वाले छात्रों के अभिभावकों को जन प्रतिनिधियों/एस.एम.सी सदस्यों के साथ 'पीले चावल' देकर विद्यालय में नियमित आने हेतु प्रोत्साहित किया जा सकता है।
4. **आओ फुलवारी बनाए–** वृक्षारोपण के दौरान विद्यालय प्रांगण में किसी भामाशाह के सहयोग से प्रति वर्ष छोटी–छोटी फुलवारियों का निर्माण करवाया जाना तथा उनकी देखभाल की जिम्मेदारी छात्रो को देना। यह नवाचार छात्रों में श्रम के प्रति आदर एवं विद्यालय में ठहराव बनाने में सहायक होगा।

5. **आओ तैयारी करें परीक्षा की-** अर्द्धवार्षिक परीक्षा उपरान्त बोर्ड की गृहकार्य की उत्तर-पुस्तिकाओं का उपयोग सामान्यतया नहीं किया जाता है क्योंकि इन कक्षाओं में अर्द्धवार्षिक परीक्षा में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाते हैं। जल्दबाजी में पाठ्यक्रम पूर्ण करा दिया जाता है, किन्तु गृहकार्य प्रायः अपूर्ण ही रहता है। अतः अर्द्धवार्षिक परीक्षा उपरान्त कोई रोचक अभियान चलाकर उत्तर पुस्तिकाओं का उपयोग परीक्षा उपयोग महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को हल करवाने के लिए किया जा सकता है। यह नवाचार कक्षा और विद्यालय के बेहतर परीक्षा परिणाम में सहयोग करेगा।
6. **विद्यालय स्वच्छता में सहयोग-** विद्यालय में देरी से आने वाले छात्रों से सहयोग से नवाचार के माध्यम से विद्यालय परिसर में साधारण साफ सफाई करवाई जा सकती है। ध्यान रहे यह नवाचार हल्का-फुल्का हो, भारी श्रम दान से परहेज रखे। यह न केवल विद्यार्थियों को समय का पाबंद बनाएगा। वरन् विद्यालय परिसर भी साफ-सुथरा होगा।
7. **गेस्ट ऑफ द मन्थ-** शनिवारीय बाल सभा को अधिक आकर्षक बनाने हेतु विविध विधाओं में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों को आमन्त्रित अतिथियों द्वारा उनकी तरफ से प्रोत्साहन हेतु पुरस्कार दिलाए जा सकते हैं।
8. **अन्य-** चोक-डस्टर के स्थान पर आई.टी. का कक्षा में उपयोग एक महत्त्वपूर्ण नवाचार है। शिक्षक हेतु वर्चुअल क्लास रूम का उपयोग, नई शिक्षण विधियों का प्रयोग आदि नवाचारों को परिस्थितिवश अपनाए जा सकते हैं।

इस प्रकार शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु किए गए छोटे-छोटे प्रयास हम सबकी जिम्मेदारी है। समस्त संस्थाप्रधान तथा शिक्षकगण यदि इन्हें अपनाते है तो शिक्षा की गुणवत्ता में अवश्य सुधार होगा।

प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
सलोनिया हाउस, 2 क 42 टीचर्स कॉलोनी
केशवपुरा, कोटा
मोः 9414393031

सकारात्मक-सोच

जीवन एक चुनौती है

❒ नवनीत जैन

ईश्वर की सृष्टि में मानव, ईश्वर की सर्वोत्तम कृत्ति है।ईश्वर ने स्वयं को ही जगत, जीवन और मानव के रूप में अभिव्यक्ति दी है। मानव जीवन का मूलभूत सत्य प्रेम है। प्रेम ही साधन है और प्रेम ही साध्य भी है। मनुष्य को सबसे अधिक प्रिय उसका जीवन है। जीवन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण, सर्वाधिक मूल्यवान है उसके लिए। लेकिन विडम्बना यह है कि मनुष्य अपने जीवन की ही सबसे अधिक उपेक्षा करता दिखाई दे रहा है।

'समय' शाश्वत जीवन का एक तत्व है लेकिन उसके पास जीवन जीने के लिए समय नहीं है। आधुनिक जीवन शैली में भागता दौड़ता इंसान झूठी शानो-शौकत, पैसा प्राप्त करने की लालसा में खोया है, मशीनी मानव की भाँति दिन भर उलझा हुआ है। अपने स्वयं के लिए वास्तविक जीवन जीने के लिए समय नहीं है। समय मिलता नहीं-यही रोना है। वास्तव में समय न मिल पाना या समय की कमी, समय प्रबन्धन की कमी है। इस 'समय' तत्व का वह घोर दुरुपयोग करता दिखाई देता है। यदि समय को समयबद्ध किया जाए तो समय का सदुपयोग किया जा सकता हैं उसे कदम-कदम पर यह लगता है कि जीवन एक चुनौती है और वह उस चुनौती के सामने पराभूत हो जाता है।

यह सत्य है कि जीवन एक चुनौती है पर यह भी सत्य है कि जीवन का लक्ष्य भी चुनौतियों का सामना करते हुए पूर्णत्व प्राप्त करना है। इस पूर्णत्व को ही हम मुक्ति, मोक्ष, आत्म साक्षात्कार, जिनत्व, निर्वाण आदि अनेक संज्ञाएँ देते हैं। इन चुनौतियों को हम दो वर्गों में बाँट सकते हैं :-

(I) आभ्यन्तिरक चुनौतियाँ

(II) बाह्य चुनौतियाँ

(I) आभ्यन्तिरक चुनौतियाँ निम्न हैं:-

1. मनोनिग्तह की चुनौती
2. अनिश्चितता की चुनौती
3. नश्वरता की चुनौती
4. अनेकत्व में एकत्व की चुनौती
5. अविश्वास की चुनौती
6. असुविधाओं को चुनौती
7. विवेक की चुनौती

(II) बाह्य चुनौतियों में यह सम्पूर्ण जगत है। जगत विसंगतियों से भरा लगता है स्थान, समय, साथी हमें अधिकांश में प्रतिकूल प्रतीत होते हैं। यदि ये अनुकूल होते हैं तो अल्प समय के लिए। फिर भी हमें जीवन जीना है, सुखपूर्वक, आनन्दयुक्त होकर, रसासिक्त होकर, उल्लासपूर्ण होकर, उल्लासमय होकर जीना है। यदि हम जीवन के अन्य पहलुओं/परिभाषाओं पर विचार करें तो जीवन की चुनौतियों का सामना कर एक सार्थक व सुखी जीवन जीने के सूत्र हमें प्राप्त होते हैं। जीवन को अनेक विद्वानों ने अलग-अलग तरीके से समझाया है। कोई कहता है कि जीवन एक खेल है, तो कोई कहता है जीवन एक संघर्ष है, कोई कहता है जीवन एक यात्रा है, कोई कहता है जीवन एक स्वप्न है, जीवन प्रेम है, जीवन एक उपहार है। अलग-अलग लोगों का अलग-अलग नजरिया है।

मैं मानता हूँ कि जीवन एक 'अवसर' है जो उस ईश्वर ने हमें दिया है। जिसने इस संसार को बनाया है। ताकि हम कुछ अच्छा कर सकें, अच्छे निर्णय ले सकें और जीवन को सही दिशा में अग्रेषित कर सकें। जीवन में अच्छे या बुरे निर्णय भी हमारी सोच/विचार पर निर्भर करते हैं। जब हम अच्छे विचारों के कारण अच्छे निर्णय ले पाते हैं तो जीवन रूपी अवसर को अच्छे अवसर में बदल कर जीवन में सफलता प्रात करते हैं और हमारा जीवन सफल हो जाता हैं।

जीवन की उक्त परिभाषाओं या अर्थ में जीवन की चुनौतियों का सामना करने का सूत्र समाहित है। सकारात्मक दृष्टिकोण और अच्छा निर्णय ही जीवन की चुनौतियों को आनन्दमय बना देता है और हम पूर्णत्व प्राप्त करने की ओर अग्रसर हो जाते हैं।

प्राध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
जावटीकलां, बून्दी (राज.) **मो. 9799013158**

निष्ठा

स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र प्रगति के लिए राष्ट्रीय पहल

❐ चैनाराम सीरवी

विद्यालय स्तर पर बच्चों की शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण सरोकार हैं। जिसका उद्देश्य बच्चों के समग्र विकास को बढ़ावा देना है। उनमें स्वयं और दूसरों के हित के प्रति संवेदनशीलता विकसित कर सके। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में शिक्षक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षा में गुणात्मक सुधार व शिक्षकों में विविध कौशलों का विकास करने के लिए समय-समय पर केन्द्र व राज्य सरकार सेवाकालीन-प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करती है। एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण के माध्यम से स्कूल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम (निष्ठा) का उद्देश्य प्रारम्भिक स्तर पर सभी शिक्षकों की क्षमता संवर्धन का निर्माण करना है। सरकार ने स्कूलों में पढ़ा रहे शिक्षकों को पूरे देश में एक खास प्रशिक्षण देने की बात कही है। यह कार्यक्रम सभी प्राथमिक व उच्च प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ा रहे शिक्षकों, प्रधानाध्यापक, हेड टीचर को बेहतर बनाना, बच्चों के सामाजिक व्यक्तिगत गुणों में सुधार, स्कूल आधारित मूल्यांकन, नई पहल, स्कूल सुरक्षा और विभिन्न विषयों जिसमें भाषा, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन की शिक्षा, सूचना एवं प्रौद्योगिकी की शिक्षा में प्रयोग, योग सहित स्वास्थ्य और कल्याण एवं सुरक्षा, लाइब्रेरी, इको-क्लब, यूथ क्लब, किचन गार्डन, हर तरह की परिस्थिति में शिक्षकों द्वारा स्कूल में नेतृत्व करने के गुणों का विकास करना, प्री-स्कूल, पूर्व व्यावसायिक शिक्षा और स्कूल आधारित मूल्यांकन, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस सहित शिक्षक-प्रशिक्षण में समाविष्ट किया है। इसके साथ-साथ निष्ठा की वेबसाइट, प्रशिक्षण मॉड्यूल, प्राइमरी बुकलेट और एक मोबाइल एप भी लाँच किया है।

निष्ठा प्रशिक्षण कार्यक्रम के निम्न उद्देश्य हैं-

1. प्रारम्भिक चरण में शिक्षकों को सीखने के परिणामों, विद्यालय आधारित आँकलन, शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षा के क्रियान्वयन के लिए शिक्षकों को सक्षम बनाना और नई पहल के कार्यान्वयन के लिए स्कूलों को समर्थ बनाने में सहायता प्रदान करना।

2. शिक्षार्थियों के सीखने के प्रतिफलों में सुधार करने के लिए शिक्षकों की क्षमता संवर्धन करना और नए शैक्षणिक दृष्टिकोण उपलब्ध करवाना।

3. किताबों के बजाय बच्चों के बौद्धिक विकास पर मुख्य रूप से फोकस किया है।

निष्ठा प्रशिक्षण कार्यक्रम अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों से भिन्न है। यह प्रारम्भिक स्तर पर सीखने के परिणामों को बेहतर बनाने के लिए एक राष्ट्रीय मिशन है। क्योंकि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम अपने उद्देश्यों व दृष्टि के साथ-साथ निष्पादन के पूरे प्रारूप के भी संदर्भ में अन्य प्रशिक्षण प्रोग्राम से अलग है। मूल उद्देश्य अध्यापक साथियों में आत्मविश्वास और कुशलता लाना है ताकि वे बच्चों में चिंतनात्मकता का विकास सुनिश्चित कर सकें। यह अपने आप में एक अनूठा प्रयास है। जिसे राष्ट्रीय स्तर पर मानकीकृत किया गया है। देश के सभी राज्यों में निष्ठा प्रशिक्षण को लागू किया जा रहा है। इस अभियान के तहत SRG व्यक्तियों को राष्ट्रीय स्तर पर, केआरपी को राज्य स्तर पर शिक्षाविद् द्वारा तैयार किया गया है। निष्ठा योजना के तहत शिक्षकों के प्रशिक्षण की इस पहल से स्कूल शिक्षा को मजबूती मिलेगी। इससे शिक्षकों की गुणवत्ता काफी बेहतर होगी इसके साथ ही सीखने के प्रतिफल (लर्निंग आउटकम्स) के लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में भी सुधार होगा।

प्रत्येक शिक्षक में विद्यालय शिक्षा के नवीन सरोकारों जैसे शिक्षार्थी-केन्द्रित शिक्षण शास्त्र, सीखने के प्रतिफल व विषय विशेष आधारित शिक्षण शास्त्र की क्षमता का निर्माण करने की आवश्यकता है। एनसीईआरटी. द्वारा निष्ठा के एक पैकेज का निर्माण किया है। इसमें 12 मॉडल्स हैं जो विभिन्न विषयों पर आधारित हैं। पाठ्यचर्या विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण-शास्त्र, समावेशी शिक्षा, व्यक्ति सामाजिक योग्यता, सुरक्षित और सकुशल विद्यालय वातावरण, स्वास्थ्य और कल्याण, कला समेकित शिक्षा, सीखने सिखाने में आईसीटी, विद्यालय आधारित आकलन, चिंतन कौशल बहुभाषिकता, भाषाओं का शिक्षण-शास्त्र, गणित, विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन, सामाजिक विज्ञान का शिक्षण शास्त्र। इस पैकेज को इस तरह बनाया है कि के.आर.पी. व शिक्षक इसका प्रभावशाली ढंग से उपयोग कर सकेंगे। प्रशिक्षण का केन्द्र विषय वस्तु को न बनाकर उन क्रियाकलाप को शामिल किया है जो शिक्षकों को अपने कक्षा-कक्षाओं की योजना बनाने के संबंध में उनका मार्गदर्शन व सम्बलन प्रदान करते हैं। निष्ठा मॉड्यूल को त्रिपुरा राज्य में सफलतापूर्वक लागू किया गया, फिर देशभर में लागू करने का प्रस्ताव तैयार किया गया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के समग्र शिक्षा प्रोजेक्ट सलाहकार बोर्ड ने 2019-20 के प्रस्ताव को मंजूरी दी और पूरे देश में इसे अपनाया है। प्रारंभिक स्तर पर देश में 42 लाख शिक्षकों एवं स्कूल प्रमुखों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य रखा गया है। राजस्थान में यह कार्यक्रम अक्टूबर से ही प्रारंभ हो गया है। राजस्थान में 2 लाख 42 हजार शिक्षकों को निष्ठा प्रशिक्षण देने का लक्ष्य है। दिसम्बर अंत तक 90 हजार शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है।

2017 में हुए NAS कक्षा 3, 5 व 8 के संबंध में किए गए राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण स्पष्ट रूप से विद्यार्थियों में घटते उपलब्धि स्तर सामने आए। यह सर्वेक्षण विद्यार्थियों में दक्षता पर आधारित था। इसके परिणामों से पता चला कि कक्षा में पढ़ने वाले बच्चे अपनी कक्षा के अनुरूप अधिगम स्तर नहीं रखते हैं। इससे बच्चों की आयु के अनुरूप अधिगम स्तर में गैप बढ़ता जा रहा है। इस गैप को प्रारम्भिक कक्षाओं से कम करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। इस कड़ी में शिक्षकों को कक्षा में बच्चों के साथ काम करने के तरीके तथा उनके साथ अंतःक्रिया के तरीकों में बदलाव किया जाना अपेक्षित है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण सवाल यह भी है कि क्या शिक्षकों के व्यवसाय कौशल विकास के लिए कोई दीर्घकालिक कार्यक्रम है? जो शिक्षकों को इन अपेक्षित बदलाव के लिए तैयार कर, उनकी क्षमता संवर्धन करें। वर्तमान में निष्ठा प्रशिक्षण कार्यक्रम इसी कमी को पूर्ण करने के लिए तैयार किया गया है।

व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
जावाल, सिरोही (राज.)
मो: 9983449410

पर्यावरण-संरक्षण

एक ही संकल्प : प्लास्टिक हटाना

❒ राकेश

सिंगल यूज प्लास्टिक एक ऐसा प्लास्टिक है जिसका हम केवल एक बार ही उपयोग करते हैं उपयोग के बाद इसे फेंक देते हैं इसे डिस्पोजेबल प्लास्टिक भी कहा जाता है। बैवाटर रिसर्च के मुताबिक हर साल दुनिया भर में लगभग 300 लाख टन से ज्यादा प्लास्टिक समुद्र और नदियों में बहा दिया जाता है। 2025 तक यह आंकड़ा 25 करोड़ यानी 250 मिलियन टन पहुँच जाएगा।

प्रकृति एवं मानव ईश्वर की दो अनमोल एवं अनुपम कृत्ति है। प्रकृति अनादि काल से ही मानव की सहचरी रही है लेकिन मानव ने अपने भौतिक सुख एवं इच्छाओं की पूर्ति के लिए इसके साथ निरंतर खिलवाड़ किया और वर्तमान समय में अपनी सारी सीमाओं की हद को पार कर चुका है। स्वार्थी एवं उपभोक्तावादी मानव ने प्रकृति यानि पर्यावरण को पॉलीथीन के अंधाधुंध प्रयोग से जिस तरह से प्रदूषित किया और करता जा रहा है, उससे सम्पूर्ण वातावरण पूरी तरह से आहत हो चुका है। आज के भौतिक युग में प्लास्टिक के दूरगामी दुष्परिणाम एवं विषैलेपन से बेखबर हमारा मानव समाज इसके उपयोग में इस कदर आगे बढ़ गया है मानों इसके बिना उसकी जिंदगी अधूरी है।

वर्तमान समय को यदि प्लास्टिक अथवा पॉलीथीन युग के नाम से जाना जाए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि सम्पूर्ण विश्व में यह अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान बना चुका है दुनिया के सभी देश इससे निर्मित वस्तुओं का किसी न किसी रूप में प्रयोग कर रहे हैं। भारत के बाजारों में 85 प्रतिशत सामान प्लास्टिक में पैक होता है।

प्लास्टिक एक ग्रीक भाषा के शब्द प्लास्टिकोस से बना है जिसका सीधा तात्पर्य है आसानी से नमनीय पदार्थ जो किसी भी आकार मे ढाला जा सके। 1970 के दशक से इसका उपयोग औद्योगिक एवं घरेलू क्षेत्रों में अप्रत्याशित रूप से बढ़ा।

अपनी विविध विशेषताओं के कारण प्लास्टिक आधुनिक युग का अत्यंत महत्त्वपूर्ण पदार्थ बन गया है। टिकाऊपन, मनभावन रंगों में उपलब्धता और विविध आकार-प्रकारों में मिलने के कारण प्लास्टिक का प्रयोग आज जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है। आज यह हमारे दैनिक उपयोग की वस्तु बन गया है। गृह उपयोग से लेकर हर क्षेत्र जैसे कृषि, चिकित्सा, भवन-निर्माण, विज्ञान, शिक्षा, मनोरंजन, अंतरिक्ष कार्यक्रमों एवं सूचना प्रौद्योगिकी में उपयोग हो रहा है।

आधुनिक समाज में यह मानव के शत्रु के रूप मे उभर रहा है। प्लास्टिक से छुटकारा पाना अत्यंत कठिन है। यह एक नॉन बायो-डिग्रेबल पदार्थ है जो पानी तथा मिट्टी में विघटित नहीं होता है भूमि पर जहाँ भी यह होगा वहाँ ऊर्वरा शक्ति कम हो जाएगी तथा वातावरण में यह सैंकड़ों सालों तक उपस्थित रहता है। जलाने पर इसका प्रभाव और भी ज्यादा हानिकारक हो जाता है जल में यह नालियों को अवरूद्ध कर देता है तथा जलीय जीवों को नुकसान पहुँचाता है। अतः यह भूमि, जल व वायु प्रदूषण उत्पन्न करता है।

पॉलीथीन के केरी बैग जब हम सड़क पर डाल देते हैं तो पशु इनको खा जाते हैं तो उनकी मृत्यु हो जाती है। जहाँ भी मानव ने अपने पाँव रखे वह वहाँ-वहाँ पॉलीथीन प्रदूषण फैलाता ही चला गया है चाहे वह हिमालय की वादियाँ हो या गँगा नदी के किनारें, सभी को प्रदूषित कर चुका है। आम-तौर पर प्लास्टिक कचरे को निपटाने के लिए अब तक तीन उपाय अपनाए जाते रहे हैं।

(1) आम तौर पर इसको गड्डों में भर दिया जाता है। जहाँ लम्बे समय तक पड़ा रहता है तथा भूमि को अनुपजाऊ बनाता है।

(2) दूसरे तरीके के रूप में इसे जलाया जाता है यह तरीका बहुत ही प्रदूषणकारी है। प्लास्टिक जलाने से आमतौर पर कार्बन-डाई-ऑक्साइड गैस, नाइट्रिक ऑक्साइड जैसी विषाक्त गैसें निकलती है।

(3) प्लास्टिक के निपटान का तीसरा और सर्वाधिक चर्चित तरीका प्लास्टिक का पुनः चक्रण (रिसाइकल करना) है अर्थात् पुनः प्लास्टिक प्राप्त करके प्लास्टिक की नई चीजें बनाना है। प्लास्टिक का 8 से 9 बार तक पुनः चक्रण हो सकता है लेकिन यह तरीका बहुत महंगा है। अतः भारत में यह कार्य बहुत ही कम हो पाता है।

प्लास्टिक जनित प्रदूषण को रोकने के लिए केन्द्र सरकारें भी प्रयासरत हैं इसे रोकने के लिए कई राज्यों में अधिनियम बनाए जा चुके हैं तथा कुछ में बनाने की प्रक्रिया चल रही है। राजस्थान में प्लास्टिक के केरी बैग उपयोग पर अगस्त 2010 से पूर्ण रोक है।

सिंगल यूज प्लास्टिक से होने वाले पर्यावरण के नुकसान को कम करने की दिशा में हर एक इंसान कुछ बेहद जरूरी कदम उठा सकता है। स्वयं सहायता समूह, सिविल सोसायटी विभिन्न प्रकार के सामाजिक संगठन युवा मण्डल, महिला मण्डल, सरकारी एवं निजी संस्थान, कॉलेज, स्कूल, क्लब एवं भारत का प्रत्येक नागरिक जिम्मेदारी से प्लास्टिक को हटाने का संकल्प ले तो पर्यावरण को होने वाली हानि को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

सरकार एवं पर्यावरण संस्थाओं के अलावा भी हर एक नागरिक की पर्यावरण के प्रति कुछ खास जिम्मेदारियाँ हैं जिन्हें अगर समझ लिया जाए तो पर्यावरण को होने वाली हानि को बहुत हद तक कम किया जा सकता है। खुद पर नियंत्रण ही इस समस्या को काफी हद तक कम कर सकता है। तथा विद्यालयों के शिक्षक एवं विद्यार्थी इस दिशा में जागृति लाने में सकारात्मक भूमिका निभा सकते हैं।

हर भारतीय को लेना होगा संकल्प,
पॉलिथीन का छोड़ना होगा विकल्प

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा. विद्यालय, उदावास, झुंझुनूं (राज.)
मो : 9413547530

व्यक्तित्व विकास

सफलता का रहस्य : आत्मविश्वास

❐ मेघाराम थाकण

आत्मविश्वास-स्वयं पर भरोसा। व्यक्ति को अपने जीवन में सफल होने के लिए जिस चीज की महती आवश्यकता होती है, वह है उसका आत्मविश्वास। इससे व्यक्ति को अपना लक्ष्य हासिल करने में प्रेरणा मिलती है। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए आत्मविश्वास उतना ही जरूरी है जितना मानव के लिए ऑक्सीजन, मछली के लिए पानी। आत्मविश्वास से व्यक्ति में सकारात्मक सोच का विकास, लक्ष्य निर्धारण की क्षमता एवं संकल्प शक्ति बढ़ती है। साथ ही उसमें अनेक नैतिक गुणों का विकास भी होता है।

आत्मविश्वास वह मशाल है जो एक बार हृदय में प्रज्वलित हो जाने के बाद कभी बुझती नहीं वरन् व्यक्ति को लक्ष्य तक पहुँचा ही देती है। इसके कारण व्यक्ति में नया करने की चाह हमेशा बनी रहती है। इसको बीमार व्यक्ति की औषधि की संज्ञा भी दी जा सकती है। आत्मविश्वास के बल पर दुनिया को जीता जा सकता है, व्यक्ति असम्भव को भी सम्भव बना सकता है। इसी के बल पर सूखी नदी से धारा निकाली जा सकती है।

आत्मविश्वास पर्वत को भी हिला सकता है, पत्थर पर भी अपने निशान छोड़ सकता है। नन्ही चींटी जब दीवार पर चढ़ने लगती है तो सौ बार असफल होती है लेकिन उसका आत्मविश्वास उसे हर बार चढ़ने के लिए प्रेरित करता है। संसार में तीन तरह के लोग हैं, पहले वे लोग होते हैं जिनमें किसी काम को लेकर मन में डर समाया रहता है और वह मन की एकाग्रता को बनने ही नहीं देते। ऐसे लोगों में किसी काम को शुरू करने से पहले ही हिचकिचाहट रहती है। वे अक्सर सोचते हैं कि यदि उनके द्वारा किया गया कार्य असफल हो गया तो जाने कितनी हानि होगी? ऐसा सोच विचार कर वे किसी कार्य को प्रारम्भ भी नहीं करते।

दूसरी श्रेणी के वे लोग हैं जो किसी काम को जैसे तैसे शुरू तो कर लेते हैं किन्तु थोड़ी सी हानि देखकर घबरा जाते हैं, वे अपने कदम आगे बढ़ाने से रोक देते हैं और सोचते हैं कि कहीं इससे ज्यादा हानि ना उठानी पड़े। ऐसे लोग अपने कार्य को बीच में ही छोड़ देते हैं। परन्तु तीसरी श्रेणी में वे लोग होते हैं जिनमें आत्मविश्वास कूट-कूट कर भरा होता है। ऐसे लोग जिस कार्य को भी शुरू करते हैं, उसको हर कीमत पर पूर्ण करके ही दम लेते हैं। फिर चाहे उन्हें उस कार्य में कितनी बड़ी हानि क्यों ना हुई हो? वे कार्य को बीच में नहीं छोड़ते बल्कि उस कार्य को पूर्ण करने में अपनी पूरी जान लगा देते हैं। ऐसे लोग जिन्दगी में आने वाली हर मुसीबत से बेझिझक डटकर सामना करते हैं।

एक असफलता से जिन्दगी थम नहीं जाती बल्कि आत्मविश्वास के माध्यम से जिन्दगी को बेहतर बनाया जा सकता है।

'तू शाही है, परवाज़ है काम तेरा,
तेरे सामने आसमां और भी है।'

आत्मविश्वास वह ऊर्जा है जो सफलता की राह में आने वाली समस्त बाधाओं एवं कठिनाइयों से लड़ने के लिए व्यक्ति को ताकत और साहस प्रदान करती है। हम देखते हैं कि जिन लोगों ने अभावों में जीवनयापन किया उन्होंने भी आत्मविश्वास के साथ सफलता का परचम फहरा दिया।

हमारे सामने श्रीगंगानगर जिले की बिटिया पूजा नायक का जीता-जागता उदाहरण है, जिसके सिर से पिता का साया उठ गया, माँ ने मजदूरी की और बेटी ने स्ट्रीट लाइट के नीचे बैठकर पढ़ाई की एवं देश की प्रतिष्ठित IAS परीक्षा उत्तीर्ण कर पूरे देश को गौरवान्वित कर दिया। यदि व्यक्ति यह तय कर लेता है कि 'मैं यह कर सकता हूँ' तब समझ लीजिए कि उसने अपनी मंजिल का आधा रास्ता पार कर लिया।

आत्मविश्वास वह डोर है जो आपसे वह करवा लेती है जिसे करना सबके वश में नहीं होता। महात्मा गाँधी, सुभाष चन्द्र बोस, भगतसिंह, सरदार पटेल, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम सरीखे अनेक महापुरुषों ने आत्मविश्वास के सहारे अपने देश के लिए महान कार्य किए। बापू में तो इतना आत्मविश्वास था कि उन्होंने सत्य और अहिंसा को अपना हथियार बना दिया। विश्व में ऐसी अनेक महान विभूतियाँ पैदा हुई जिन्होंने अपने आत्मविश्वास के दम पर सफलता हासिल की।

महान वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडिसन ने हजारों आविष्कार किए। वे बल्ब का प्रयोग करते वक्त कई बार असफल हुए, इसके बावजूद भी उन्होंने हार नहीं मानी और लगातार लगे रहे। अंततः बल्ब का आविष्कार कर पूरी दुनिया को रोशन कर दिया। यह उनका आत्मविश्वास ही था जिसने उनको इतनी बड़ी सफलता दिलाई।

नेपोलियन में भी आत्मविश्वास से ओतप्रोत होकर अपने सेनापति से कहा था कि आल्पस पर्वत हमारा मार्ग रोकता है तो वह नहीं रहेगा और सचमुच उस विशाल पर्वत को काटकर रास्ता बना लिया गया। डाली पर बैठे हुए परिन्दे को पता है कि डाली कमजोर है, फिर भी वह उस डाली पर बैठा रहता है, क्यों? क्योंकि उस परिन्दे को डाली से ज्यादा अपने पंखों पर भरोसा है।

अमेरिका के प्रसिद्ध लेखक ओरिसन स्वेट मार्डन ने भी कहा था कि- सफलता किसी पेड़ पर नहीं लगती जिसे जब चाहा तोड़ लिया बल्कि यह तो जीवन की सबसे अधिक आनन्ददायक चीज है और जिसको केवल आत्मविश्वास के द्वारा ही हासिल किया जा सकता है।

आत्मविश्वास व्यक्ति के भीतर समाहित है। इसे कहीं और अन्य जगह से लाने की जरूरत नहीं। बस जरूरत है अपने अन्दर की आंतरिक शक्तियों को मजबूत करना। जीवन में आने वाली परिस्थितियों से घबराना नहीं चाहिए। सतत संघर्ष करते रहना चाहिए।

होकर मायूस ना यूँ शाम से ढलते रहिए,
जिन्दगी भोर है सूरज सा निकलते रहिए,
एक ही पाँव पर ठहरोगे तो थक जाओगे,
धीरे-धीरे ही सही राह पर चलते रहिए।

आत्मविश्वास प्रत्येक व्यक्ति के लिए जरूरी है क्योंकि आत्मविश्वास ही सफलता का सोपान है। आत्मविश्वास कायम रखें। अपना लक्ष्य निर्धारित करें और उसे प्राप्त करने के लिए जुनून के साथ आगे बढ़ें। हमें अपने वतन को दुनिया का सिरमौर बनाना है।

सीढ़ियाँ उन्हें मुबारक हो, जिन्हें छत तक जाना है,
मेरी मंजिल तो आसमां है, रास्ता मुझे खुद बनाना है।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
चिड़िया (गिड़ा), बाड़मेर
मो: 9414397767

शैक्षिक चिन्तन

स्वास्थ्य और परीक्षा

❒ डॉ. श्याम सिंह राजपुरोहित

शिक्षक विद्यार्थी को सफल जीवन की राह दिखाता है तथा आजादी प्राप्त करने का आत्मविश्वास जगाता है। आत्मविश्वास से विद्यार्थी के व्यक्तित्व में निखार आता है। आत्मविश्वास के अभाव में विद्यार्थी अवसाद में चला जाता है। शिक्षक ही धैर्यपूर्वक समझाकर अवसाद से आत्मविश्वास जगाकर विद्यार्थी के व्यक्तित्व का निर्माण करता है। इसलिए ही शिक्षक को माता-पिता व भगवान से भी ऊँचा स्थान माना है।

परन्तु आज की शिक्षा अक्षर ज्ञान की तरफ बढ़ती जा रही है। जिससे विद्यार्थी में बुद्धि का विकास हो रहा है परन्तु संस्कारों के अभाव में विवेक में कमी आ रही है। विवेक में कमी होने पर विद्यार्थी शिक्षित होते हुए भी समाज और परिवार के लिए अपने को असहाय पाता है। इसके परिणाम दिखने लगे हैं। शिक्षित बेरोजगारों की फौज खड़ी हो रही है। शिक्षा का मूल उद्देश्य सिर्फ नौकरी प्राप्त करना ही न होकर व्यक्तित्व व नेतृत्व को पैदा करना होना चाहिए ताकि वो हर क्षेत्र में अपना उत्कृष्ट दे सकें। व्यक्तित्व विकास में आहार-विहार का बड़ा योगदान होता है। इसलिए ऋषियों ने आहार-विहार को आयुर्वेद में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। आहार हमेशा सात्विक व स्वास्थ्य के लिए अनुकूल होना चाहिए। जिससे व्यक्ति में सात्विकता में बढ़ोतरी होती है। जिससे व्यक्ति उच्च आदर्शों का निर्वाह करते हुए समाज के लिए आदर्श स्थापित करता है परन्तु आज आहार सिर्फ स्वाद व उदर पूर्ति का माध्यम बनता जा रहा है। जिससे व्यक्ति के जीवन में राजसिक व तामसिक प्रकृति को बढ़ावा हो रहा है तथा स्वास्थ्य में गिरावट आ रही है। व्यक्ति दिन-प्रतिदिन रोगों की गिरफ्त में आ रहा है। वह चिकित्सक, दवा, अस्पताल व पैसों के द्वारा ठीक होने की कोशिश कर रहा है परन्तु आहार-विहार पर ध्यान नहीं देना चाहता है। शिक्षकों को चाहिए कि वे विद्यार्थी को

बाल्यकाल में आहार-विहार का विशेष महत्त्व समझाए। स्वास्थ्य और शिक्षा का अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। हमारे ऋषि हमारे अनुसंधान (रिसर्च) की खान थे उन्होंने जो शिक्षा व स्वास्थ्य का पैमाना हमको दिया उस पर न चलने से शिक्षा व स्वास्थ्य में भयंकर गिरावट आ रही है।

आज की परिस्थिति में परीक्षा के भय से विद्यार्थी अवसाद में आ जाते हैं तथा मन की अभिव्यक्ति नहीं कर पाते है तथा अक्षर ज्ञान को याद करने का बार-बार दुःसाहस करते हैं जिससे उसको याद करने की क्षणिक क्षमता तो बढ़ जाती है परन्तु विषय की समझ व प्रायोगिक कार्याभ्यास न करने से परीक्षा के बाद भूलने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। जबकि विषय की समझ एकाग्रता व विवेक पर आधारित होगी तो विद्यार्थी विषय की समझ को जीवन भर नहीं भूल पाता है तथा उसके बार-बार याद करने की जरूरत नहीं होती है। विद्यार्थी प्रतिदिन स्कूल के अलावा 3-4 घण्टे अतिरिक्त वर्ष भर एकाग्रता से पढ़कर उसे मनन करता हो तो वह 6-7 घण्टे पढ़ने वाले बच्चे से अच्छी अभिव्यक्ति परीक्षा में कर सकता है। बार-बार याद कर उसे परीक्षा में उपयोगी समझकर केवल पढ़ता है तो वह विद्यार्थी परीक्षा में उच्च अंक तो प्राप्त कर सकता है परन्तु वही विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षा में पिछड़ जाता है। प्रतियोगी परीक्षा के लिए विद्यार्थी की विषय पर पकड़ व समझ होने पर कम अंकों के बाद भी सफल हो जाता है। अतः विद्यार्थियों को परीक्षा में सहज भाव से रहकर परीक्षा देनी चाहिए। परीक्षा भी एक खेल है अतः खेल की तरह खेलकर स्वतंत्र मन से परीक्षा देनी चाहिए तथा मानसिक दबाव विद्यार्थी को कभी नहीं बनाना चाहिए। परीक्षा के दिनों में अन्य दिनों के बराबर ही पढ़ना चाहिए तथा निद्रा व भोजन का सम्यक रूप से ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि निद्रा व भोजन समय पर नहीं होने से मनोचित पर विपरीत प्रभाव पड़ने से परीक्षा का परिणाम प्रभावित होता है। इसलिए परीक्षाओं को एक सामान्य प्रक्रिया समझकर पूर्ण मनोयोग से विषय को समझ कर लिखना व पेपर में प्रश्न को पढ़ना चाहिए।

विद्यार्थी व शिक्षक के कर्त्तव्य :-

- ब्रह्ममुहूर्त में उठना चाहिए।
- प्रातः उषाकाल में विद्या अध्ययन एकाग्रता को बढ़ावा देता है इस समय को ऋषि अपनी साधना में उपयोग करते थे।
- शिक्षा में अर्थोपार्जन का विषय न बनाकर ज्ञान व विवेक का विषय बनावें।
- शिक्षा को संस्कारों से ओतप्रोत करें व अक्षर ज्ञान से दूर रखें।
- शिक्षा अंक प्राप्ति का आधार न बनाकर व्यक्तित्व विकास पर ध्यान देवें।
- उचित व स्वास्थ्य वर्धक आहार-विहार पर महत्त्व दें।
- परीक्षा के समय में रात को जल्दी व प्रातःकाल जल्दी उठकर पढ़ना चाहिए।
- विद्यार्थी को कभी नकल करके अधिक अंक लाने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र,
लूणी (जोधपुर)

आदेश-परिपत्र : फरवरी, 2020

1. बालिका उपहार योजना के अन्तर्गत आवेदन पत्रों के क्रम में।
2. निदेशालय के तत्वावधान में निर्मित 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2020' में प्रदत्त निर्देशों के प्रभावी क्रियान्वयन के सम्बन्ध में।
3. निदेशालय के तत्वावधान में निर्मित 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2020' के अन्तर्गत समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा-10 एवं 12 में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु 'प्री-बोर्ड परीक्षा-2020' के समुचित आयोजन बाबत।
4. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर के सहयोग से राज्य स्तरीय, जिला स्तरीय एवं ब्लॉक स्तरीय पुरस्कार योजना सत्र : 2019-20 के सम्बन्ध में।
5. उच्च अध्ययन/पाठ्यक्रम/अतिरिक्त विषयों में अध्ययन/सार्वजनिक परीक्षा में सम्मिलित होने की अनुज्ञा के संबंध में।
6. बोर्ड परीक्षा-2020, परीक्षा-परिणाम उन्नयन कार्ययोजना की क्रियान्विति की सुनिश्चितता।
7. समस्त राजकीय विद्यालयों में प्री-बोर्ड परीक्षा 2020 के आयोजन से पूर्व बोर्ड कक्षाओं के समस्त विषयों में पाठ्यक्रम पूर्णता की सुनिश्चितता के सम्बन्ध में।

1. बालिका उपहार योजना के अन्तर्गत आवेदन पत्रों के क्रम में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा/हिनि/28129/विवाह/2019-20 दिनांकः 07.01.2020 ● समस्त संयुक्त निदेशक, शिक्षा विभाग; समस्त मुख्य जिला अधिकारी; समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) (माध्यमिक/प्रारम्भिक); समस्त डाइट प्राचार्य; समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी; पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ। ● विषयः बालिका उपहार योजना के अन्तर्गत आवेदन पत्रों के क्रम में। ● संदर्भः समसंख्यक पत्रांक दिनांक 04.11.2019, 25.11.2019, 27.11.2019

उपर्युक्त विषय में लेख है कि बालिका विवाह उपहार योजनान्तर्गत संदर्भित पत्र जारी किए गए हैं, लेकिन देखने में आया है कि आवेदनकर्त्ता एवं अग्रेषित अधिकारीगण बिना निर्देशों के अवलोकन किए प्रार्थना पत्र भेज रहे हैं, इसलिए अपूर्ण प्रार्थना पत्र निरस्त श्रेणी में है।

अतः पुनः निर्देशित किया जाता है कि आवेदनकर्त्ता प्रार्थना पत्र के साथ मूल विवाह कार्ड जो छपवाया गया है संलग्न करें तथा विवाह की निर्धारित तिथि के पश्चात् दो माह के अन्दर-अन्दर आवेदन करें, विवाह तिथि से पूर्व या तिथि के दो माह पश्चात प्रार्थना पत्रों पर कोई विचार नहीं किया जा सकेगा। ध्यान रहे कि आवेदन के साथ 2018-19 तथा 2019-20 में अंशदान कटौती का साक्ष्य ई.सी.एस. शिड्यूल एवं उपर्युक्त कागजात की प्रति संलग्न करनी होगी। इसके अभाव में प्रथम दृष्टया आवेदन पत्र निरस्त श्रेणी में होगा तथा अपूर्ण आवेदन पत्र पर कोई कार्यवाही नहीं की जा सकेगी। जिन आवेदनकर्त्ताओं का बैंक खाता एस.बी.आई. के अतिरिक्त अन्य बैंकों में हैं उन्हें आवश्यक रूप से निरस्त चैक की प्रति संलग्न करनी होगी, ताकि राशि सही खातों में अंतरित हो सके।

● **उप निदेशक** (प्रशासन) एवं सचिव हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

2. निदेशालय के तत्वावधान में निर्मित 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2020' में प्रदत्त निर्देशों के प्रभावी क्रियान्वयन के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-मा/माध्य/निप्र/नवाचार/2017-19/200 दिनांकः 23.12.2019 ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा अभियान। ● विषयः निदेशालय के तत्वावधान में निर्मित 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2020' में प्रदत्त निर्देशों के प्रभावी क्रियान्वयन के सम्बन्ध में। ● प्रसंगः समसंख्यक निर्देश पत्र दिनांक : 13.11.2019, 26.11.2019 एवं 12.12.2019

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक निर्देश पत्रों द्वारा निदेशालय के तत्वावधान में बोर्ड परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक एवं गुणात्मक सुधार हेतु निर्मित 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2020' की क्रियान्विति से सम्बन्धित निर्देश प्रेषित कर क्षेत्राधिकार में सुनिश्चित पालना हेतु निर्देशित किया जा चुका है। संदर्भित कार्य योजना में उल्लिखित अध्ययन/शैक्षिक सामग्री के अन्तर्गत कक्षा-10 एवं 12 की बोर्ड परीक्षा से सम्बन्धित विषयों के प्रश्न बैंक (बोर्ड पैटर्न के अनुरूप) विभाग की आधिकारिक वेबसाइट (लिंक :https//bit.ly/2PFaODE) तथा 'शाला दर्पण पोर्टल' के HOME PAGE पर 'CIRCULARS' TAB पर सहजता से उपलब्ध है। इसी के साथ कक्षा-10 एवं 12 की गत वर्षों की बोर्ड परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की विषयवार उत्तरपुस्तिकाओं की स्केन प्रतियाँ भी उपलब्ध करवाई गई है।

माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक परीक्षा से सम्बन्धित उपर्युक्त अध्ययन/शैक्षिक सामग्री क्षेत्राधिकार के समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा-10 एवं 12 की बोर्ड परीक्षा-2020 में प्रविष्ट होने जा रहे विद्यार्थियों के उपयोगार्थ उपलब्ध करवाया जाना सुनिश्चित करें तथा इसका उपयोग सम्बन्धित विषयाध्यापकों द्वारा भी कक्षा शिक्षण के दौरान परीक्षा में बेहतर परिणाम के उद्देश्य से विद्यार्थियों के अभ्यासार्थ करवाया जाना सुनिश्चित करावें। उक्त क्रम में क्षेत्राधिकार में विभिन्न स्तरों पर अधीनस्थ अधिकारियों द्वारा अग्रांकित निर्देशों की पालना की सुनिश्चिता करावें।

1. **PEEO**:- समस्त PEEO पंचायत परिक्षेत्र के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना में प्रदत्त समस्त निर्देशों की पालना हेतु विभाग की आधिकारिक वेबसाइट/शाला दर्पण पोर्टल पर उपलब्ध शिक्षण/अध्ययनोपयोगी

सामग्री बोर्ड परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों के उपयोगार्थ डाउनलोड की जानी सुनिश्चित करेंगे।

2. **CBEO:-** समस्त CBEO क्षेत्राधिकार के समस्त माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में उक्त सामग्री डाउनलोड कर नियमित उपयोग की सुनिश्चितता हेतु सम्बन्धित PEEO को तत्काल पाबन्द करेंगे। ब्लॉक क्षेत्राधिकार के विद्यालयों का निरीक्षण कर स्वयं भौतिक रूप से निर्देशों की पालना की वस्तुस्थिति के अनुरूप वांछित कार्यवाही मौके पर निष्पादित करेंगे।

उपर्युक्त निर्देशों की पालना में किसी भी स्तर पर उदासीनता/लापरवाही की स्थिति पाए जाने पर सम्बन्धित के विरुद्ध तत्काल विभागीय कार्यवाही प्रारम्भ की जाए।

● **(हिमांशु गुप्ता)** आइ.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. निदेशालय के तत्वावधान में निर्मित 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2020' के अन्तर्गत समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा-10 एवं 12 में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु 'प्री-बोर्ड परीक्षा-2020' के समुचित आयोजन बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-मा/माध्य/निप्र/नवाचार/2017-19/228 दिनांकः 13.01.2020 ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा अभियान। ● विषयः निदेशालय के तत्वावधान में निर्मित 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2020' के अन्तर्गत समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा-10 एवं 12 में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु 'प्री-बोर्ड परीक्षा-2020' के समुचित आयोजन बाबत। ● प्रसंगः समसंख्यक निर्देश पत्र दिनांक : 13.11.2019, 26.11.2019, 12.12.2019 एवं 23.12.2019

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक निर्देश पत्रों द्वारा निदेशालय के तत्वावधान में बोर्ड परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक एवं गुणात्मक सुधार हेतु निर्मित 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2020' की क्रियान्विति से सम्बन्धित निर्देशों के अनुवर्तन में क्षेत्राधिकार में अग्रांकित निर्देशों की पालना सुनिश्चित करावें:-

1. पत्र के संलग्न जिला/ब्लॉकवार कक्षा-10 एवं 12 की विगत वर्ष की बोर्ड परीक्षा परीक्षाओं में राजकीय विद्यालयों में अध्ययन कर परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले अनुत्तीर्ण एवं प्रथम श्रेणी प्राप्त विद्यार्थियों की प्रतिशत संख्या से सम्बन्धित विवरण प्रेषित किया जा रहा है। उक्त विवरण का भली प्रकार अध्ययन कर सम्पूर्ण जिला क्षेत्राधिकार में ब्लॉकवार इस वर्ष बोर्ड परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक सुधार हेतु शत-प्रतिशत प्रविष्ट विद्यार्थियों को उत्तीर्ण एवं गुणात्मक सुधार हेतु कक्षा-10 में न्यूनतम 40 प्रतिशत से अधिक तथा कक्षा-12 में न्यूनतम 60 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों द्वारा प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लक्ष्यानुरूप कार्य योजना निर्मित कर क्रियान्विति करावें।

2. समस्त CDEO & DEO (HQ)-SEC की दिनांक : 08.01.2020 को निदेशालय में आयोजित संयुक्त समीक्षा बैठक के दौरान प्रदत्त निर्देशानुरूप जिला क्षेत्राधिकार के समस्त माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों द्वारा कक्षा-10 एवं 12 में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थियों के उपयोगार्थ विभागीय वेबसाइट एवं शालादर्पण पर अपलोड शैक्षिक/अध्ययन सामग्री/प्रश्न बैंक/मॉडल उत्तर पुस्तिकाएँ डाउनलोड कर उपयोग में लिए जाने सम्बन्धी सूचना संलग्न प्रपत्र में तत्काल प्राप्त करें। उक्तानुरूप प्राप्त सूचना के क्रम में सम्पूर्ण जिला क्षेत्राधिकार में समस्त माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों द्वारा उक्त शैक्षिक/अध्ययन सामग्री/प्रश्न बैंक/मॉडल उत्तर पुस्तिकाएँ डाउनलोड उपरान्त विद्यार्थियों के उपयोगार्थ उपलब्ध करवाए जाने बाबत समेकित प्रमाण पत्र (संलग्न निर्धारित प्रारूप में) इस कार्यालय की ई-मेल आई.डी secondarydd2@gmail.com पर दिनांक : 15.01.2020 (बुधवार) तक भिजवाया जाना सुनिश्चित करें।

3. पूर्व प्रदत्त निर्देशानुरूप माह जनवरी में समस्त राजकीय विद्यालयों में विद्यालय स्तर पर बोर्ड पैटर्न के अनुरूप कक्षा-10 एवं 12 के विद्यार्थियों हेतु दो प्री-बोर्ड परीक्षाओं का आयोजन किया जाना है तथा तृतीय प्री-बोर्ड परीक्षा का आयोजन संलग्न समय-सारणी के अनुरूप सम्पूर्ण राज्य में दिनांक : 03 फरवरी से 12 फरवरी-2020 के दौरान सम्पूर्ण जिला क्षेत्राधिकार में जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक कार्यालय के सहयोग से समुचित रूप से करवाया जाना सुनिश्चित करें। उपर्युक्त क्रम में कक्षा-10 एवं 12 के विभिन्न विषयों के 'प्री बोर्ड परीक्षा-2020' हेतु प्रश्न-पत्र निदेशालय के तत्वावधान में तैयार कर कक्षा-10 एवं 12 की तृतीय ''प्री बोर्ड परीक्षा 2020'' हेतु समय-सारणी के साथ आपको उपलब्ध करवाए जा चुके हैं। उपर्युक्त प्री-बोर्ड परीक्षाओं के आयोजन एवं तदुपरान्त क्षेत्राधिकार में अग्रांकित निर्देशानुरूप विभिन्न स्तरों पर अधीनस्थ अधिकारियों द्वारा अग्रांकित निर्देशों की पालना की सुनिश्चितता करावें:-

(i) विद्यालय स्तर पर प्री-बोर्ड परीक्षा का आयोजन सम्बन्धित संस्थाप्रधान द्वारा स्थानीय आवश्यकता एवं परिस्थितियों के अनुरूप समुचित समय प्रबन्धन करते हुए इस प्रकार से करवाया जाए, जिससे कि शेष कक्षाओं/विद्यार्थियों के अध्ययन तथा विद्यालय की अन्य शैक्षिक-सहशैक्षिक गतिविधियों/क्रियाकलापों में व्यवधान उत्पन्न न हों। परीक्षा आयोजन के तत्काल पश्चात सम्बन्धित विषयाध्यापक द्वारा उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन कर विद्यार्थी/संस्थाप्रधान/अभिभावकों के अवलोकनोपरान्त विद्यार्थियों की शैक्षिक लब्धि पर चर्चा एवं तदनुसार अधिगम स्तर उन्नयन हेतु वांछनीय कार्यवाही (आवश्यकतानुसार यूनिट टैस्ट/पुनरावृत्ति कार्य/रेमेडियल क्लासेज/अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन) सम्पादित करवाई जानी सुनिश्चित करावें।

(ii) पूर्व प्रदत्त निर्देशानुरूप न्यून अधिगम लब्धि वाले विद्यार्थियों हेतु

बोर्ड परीक्षा तैयारी अवकाश के दौरान सुपरवाइज्ड स्टडी (विषयाध्यापक द्वारा विद्यार्थी के सम्मुख बैठाकर काठिन्य बिन्दुओं के निवारण हेतु व्यक्तिगत अध्यापन) का आयोजन आवश्यक रूप से किया जाना है। किसी विद्यालय में विद्यार्थियों के विषय विशेष अथवा काठिन्य स्तर के वैशिष्ट्य के दृष्टिगत संस्थाप्रधान द्वारा उक्त सुपरवाइज्ड स्टडी का आयोजन पूर्व में भी किया जा सकता है।

(iii) तृतीय प्री-बोर्ड परीक्षा-2020 के सफल आयोजन व तदुपरान्त प्रदत्त निर्देशों के शत-प्रतिशत क्रियान्वयन हेतु समस्त CBEO क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत आने वाले राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में निरीक्षण के दौरान समस्त स्टाफ को समुचित सम्बलन प्रदान करते हुए समस्याओं का निस्तारण मौके पर करने का प्रयास करेंगे व आवश्यकतानुसार मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी/संभागीय संयुक्त निदेशक से सम्पर्क एवं समन्वय स्थापित कर यथासम्भव निराकरण करवाएँगे। उक्तानुरूप संबंधित पीईईओ/संस्थाप्रधान को समुचित निर्देश प्रदान कर बोर्ड परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों हेतु विशिष्ट प्रयासों की सुनिश्चितता करवाएँगे।

4. पूर्व प्रदत्त निर्देशानुरूप विद्यालयों का परिवीक्षण/अवलोकन करने वाले समस्त विभागीय अधिकारियों को पुनः निर्देशित किया जाता है कि बरवक्त विद्यालय निरीक्षण **Online Google Form Links : https://tinyurl.com/Prayas-2019** की पूर्ति पश्चात आवश्यक रूप से Submit करें।

5. आगामी माह फरवरी-2020 में पूर्वप्रदत्त निर्देशानुसार जिले की वांछित समेकित सूचना तैयार कर अग्रांकित विवरणानुसार निदेशालय में आयोज्य प्रगति समीक्षा बैठक में कार्य योजना के भारसाधक अधिकारी को पूर्ण तैयारी एवं वांछित सूचनाओं के साथ भिजवाया जाना सुनिश्चित करें:-

क्र. सं.	बैठक आयोजन की तिथि	बैठक में उपस्थित होने वाली संभागी गण
1	03.02.2020 (सोमवार)	**उदयपुर, कोटा, भरतपुर संभाग** के संयुक्त निदेशक तथा मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालयों के भारसाधक अधिकारी एवं सम्बन्धित जिलों के जिला प्रभारी गण।
2	04.02.2020 (मंगलवार)	**जोधपुर, जयपुर, पाली संभाग** के संयुक्त निदेशक तथा मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालयों के भारसाधक अधिकारी एवं सम्बन्धित जिलों के जिला प्रभारी गण।
3	05.02.2020 (बुधवार)	**बीकानेर, चूरू, अजमेर संभाग** के संयुक्त निदेशक तथा मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालयों के भारसाधक अधिकारी एवं सम्बन्धित जिलों के जिला प्रभारी गण

ध्यातव्य : बैठक का समय : प्रातः 11.00 बजे।

बैठक स्थल : निदेशालय स्थित मुख्य प्रशासनिक भवन के द्वितीय तल पर स्थिति सभागार (कक्ष क्रमांक-206)।

उपर्युक्त निर्देशों की पालना में किसी भी स्तर पर उदासीनता/लापरवाही की स्थिति पाए जाने पर सम्बन्धित के विरुद्ध सक्षम स्तर पर तत्काल विभागीय कार्यवाही प्रारम्भ की जानी सुनिश्चित करें।

संलग्नः

1. बोर्ड परीक्षा-2019 में अनुत्तीर्ण एवं प्रथम श्रेणी प्राप्त विद्यार्थियों का विवरण।
2. प्री-बोर्ड (माध्यमिक/उच्च माध्यमिक) परीक्षा-2020 हेतु समय सारणी।
3. डाउनलोड की गई अध्ययन सामग्री बाबत विद्यालयों से वांछित सूचना संबंधी विवरण प्रपत्र का प्रारूप।
4. मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय द्वारा निदेशालय को प्रेषित किए जाने वाले प्रमाण-पत्र का प्रारूप।

● **(मुकेश कुमार शर्मा)** उप निदेशक (माध्यमिक) माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

4. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर के सहयोग से राज्य स्तरीय, जिला स्तरीय एवं ब्लॉक स्तरीय पुरस्कार योजना सत्र : 2019-20 के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-मा/माध्य/निप्र/डी-1/21902/विपु/2019/55 दिनांकः 22.01.2020 ● विषयः माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर के सहयोग से राज्य स्तरीय, जिला स्तरीय एवं ब्लॉक स्तरीय पुरस्कार योजना सत्र : 2019-20 के सम्बन्ध में ● परिपत्र।

विद्यालय केवल शिक्षा देने तक ही सीमित नहीं रहे, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास (All round development) में जुटें एवं विद्यालय उत्कृष्टता के केन्द्र (Center for excellence) के रूप में स्थापित हो, इस हेतु राज्य सरकार के निर्देश परिपत्र क्रमांक : प.17(8) शिक्षा-1/2008 जयपुर, दिनांक : 24.07.2019 के क्रम में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर के सहयोग से राज्य स्तरीय जिला स्तरीय एवं ब्लॉक स्तरीय पुरस्कार योजना सत्र : 2019-20 से प्रारम्भ की जा रही है।

'सर्वश्रेष्ठ राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय पुरस्कार योजना' हेतु पात्र विद्यालयों के चयन के लिए सूक्ष्म अंक योजना, पुरस्कारों की संख्या, राशि, सामान्य निर्देश एवं पंचांग का विवरण निम्नानुसार रहेगा:-

1. विभिन्न स्तरों पर सर्वश्रेष्ठ माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय के रूप में चयनित विद्यालयों को दिए जाने वाले पुरस्कारों की संख्या एवं राशि का विवरणः-

क्र. सं.	स्तर	संख्या	पुरस्कार की राशि		कुल देय राशि
			उच्च माध्यमिक	माध्यमिक वर्ग	
1	राज्य स्तर	प्रथम	1,00,000/-	50,000/-	3,40,000/-
		द्वितीय	75,000/-	40,000/-	
		तृतीय	50,000/-	25,000/-	

2	जिला स्तर	66	25,000/-	25,000/-	16,50,000/-
3	ब्लॉक स्तर	301	10000/-		30,10,000/-
	महायोग	373			50,00,000/-

2. विद्यालय चयन के लिए सूक्ष्म अंक योजना:-

1. विद्यालय का कक्षा 12 का बोर्ड परीक्षा परिणाम : पूर्णांक 05 अंक

अ)	शत-प्रतिशत विद्यार्थी उत्तीर्ण	05 अंक
ब)	90 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी उत्तीर्ण	04 अंक
स)	80 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी उत्तीर्ण	03 अंक
द)	70 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी उत्तीर्ण	02 अंक
य)	60 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी उत्तीर्ण	01 अंक

2. विद्यालय का कक्षा 10 का बोर्ड परीक्षा परिणाम : पूर्णांक 05 अंक

अ)	शत-प्रतिशत विद्यार्थी उत्तीर्ण	05 अंक
ब)	90 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी उत्तीर्ण	04 अंक
स)	80 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी उत्तीर्ण	03 अंक
द)	70 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी उत्तीर्ण	02 अंक
य)	60 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी उत्तीर्ण	01 अंक

नोट: माध्यमिक विद्यालय वर्ग में आवेदन की स्थिति में बोर्ड परीक्षा परिणाम हेतु देय अंक मात्र कक्षा-10 के बोर्ड परीक्षा परिणाम हेतु आकलित करते हुए पूर्णांक 10 के अनुरूप आनुपातिक रूप से देय होंगे।

3. गुणात्मक परीक्षा परिणाम (कक्षा-12) पूर्णांक- 05 अंक

अ)	शत-प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा प्रथम श्रेणी प्राप्त करने पर	05 अंक
ब)	90 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों द्वारा प्रथम श्रेणी प्राप्त करने पर	04 अंक
स)	80 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों द्वारा प्रथम श्रेणी प्राप्त करने पर	03 अंक
द)	70 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों द्वारा प्रथम श्रेणी प्राप्त करने पर	02 अंक
य)	60 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों द्वारा प्रथम श्रेणी प्राप्त करने पर	01 अंक

4. गुणात्मक परीक्षा परिणाम (कक्षा-10) पूर्णांक-05 अंक

अ)	शत-प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा प्रथम श्रेणी प्राप्त करने पर	05 अंक
ब)	90 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों द्वारा प्रथम श्रेणी प्राप्त करने पर	04 अंक
स)	80 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों द्वारा प्रथम श्रेणी प्राप्त करने पर	03 अंक
द)	70 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों द्वारा प्रथम श्रेणी प्राप्त करने पर।	02 अंक
य)	60 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों द्वारा प्रथम श्रेणी प्राप्त करने पर।	01 अंक

नोट : माध्यमिक विद्यालय होने की स्थिति में गुणात्मक बोर्ड परीक्षा परिणाम हेतु देय अंक मात्र कक्षा-10 के बोर्ड परीक्षा परिणाम हेतु आकलित करते हुए पूर्णांक 10 के अनुरूप आनुपातिक रूप से देय होंगे।

5. गुणात्मक परीक्षा परिणाम : प्रारम्भिक शिक्षा पूर्णता प्रमाण-पत्र परीक्षा (कक्षा-8) पूर्णांक 05 अंक

अ)	शत-प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा ए-ग्रेड प्राप्त करने पर	05 अंक
ब)	90 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों द्वारा ए-ग्रेड प्राप्त करने पर	04 अंक
स)	80 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों द्वारा ए-ग्रेड प्राप्त करने पर	03 अंक
द)	70 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों द्वारा ए-ग्रेड प्राप्त करने पर	02 अंक
य)	60 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों द्वारा ए-ग्रेड प्राप्त करने पर	01 अंक

6. गुणात्मक परीक्षा परिणाम : प्राथमिक शिक्षा अधिगम स्तर मूल्यांकन (कक्षा-5) : पूर्णांक- 05 अंक

अ)	शत-प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा ए-ग्रेड प्राप्त करने पर	05 अंक
ब)	90 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों द्वारा ए-ग्रेड प्राप्त करने पर	04 अंक
स)	80 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों द्वारा ए-ग्रेड प्राप्त करने पर	03 अंक
द)	70 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों द्वारा ए-ग्रेड प्राप्त करने पर	02 अंक
य)	60 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों द्वारा ए-ग्रेड प्राप्त करने पर	01 अंक

7. खेलकूद गतिविधियों में विद्यार्थियों का संभागित्व :

पूर्णांक 05 अंक

अ)	राष्ट्रीय स्तर	05 अंक
ब)	राज्य स्तर	03 अंक
स)	जिला स्तर	02 अंक

8. विद्यालय द्वारा विभिन्न विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन : पूर्णांक - 05 अंक

अ)	राष्ट्रीय स्तर	05 अंक
ब)	राज्य स्तर	03 अंक
स)	जिला स्तर	02 अंक

9. विशिष्ट प्रोत्साहन एवं छात्रवृत्ति योजनाओं (NTSE, STSE, NMMS, ISPIRE AWARD) में विद्यार्थियों का चयन:

पूर्णांक - 05 अंक

अ)	राष्ट्रीय स्तर (NTSE, INSPIRE AWARD)	05 अंक
ब)	राज्य स्तर (STSE, INSPIRE AWARD)	03 अंक
स)	जिला स्तर (NMMS, INSPIRE AWARD)	02 अंक

10. नामांकन वृद्धि : पूर्णांक : 10 अंक

विद्यालय में विगत वर्ष के कुल नामांकन में समीक्ष्य वर्ष के दौरान नामांकन वृद्धि की स्थिति में प्रति प्रतिशत वृद्धि दर पर 01 अंक देय होगा। अर्थात न्यूनतम 01 प्रतिशत वृद्धि पर 01 अंक, 02 प्रतिशत वृद्धि पर 02 अंक तथा इसी प्रकार 10 प्रतिशत वृद्धि पर अधिकतम 10 अंक देय होंगे। नामांकन वृद्धि हेतु देय अंक उसी अवस्था में विद्यालय को प्रदान किए जाएँगे, जबकि विद्यालय में कक्षा समूहवार निर्धारित न्यूनतम आदर्श नामांकन के अनुरूप नामांकन की स्थिति होगी। उक्तानुरूप कक्षा-1 से 5 में प्रति कक्षा-30 के नामांकन के अनुरूप न्यूनतम 150, कक्षा-1 से 8 में प्रति कक्षा-35 के नामांकन के अनुरूप न्यूनतम 105, कक्षा-9 से 10 प्रति कक्षा-50 के नामांकन के अनुरूप न्यूनतम नामांकन 100 तथा कक्षा-11 से 12 में प्रति कक्षा-50 के नामांकन के अनुरूप न्यूनतम-100 का नामांकन होने पर ही समीक्ष्य सत्र में नामांकन वृद्धि की गणना की जाकर तदनुरूप अंक प्रदान किए जा सकेंगे।

11. जन सहयोग पूर्णांक-10 अंक

अ)	10 लाख से अधिक	10 अंक
ब)	8 लाख से अधिक	08 अंक
स)	6 लाख से अधिक	06 अंक
द)	4 लाख से अधिक	04 अंक
य)	2 लाख से अधिक	02 अंक

(यह सहयोग सामग्री/निर्माण के रूप में हो सकता है।)

12. विद्यालय द्वारा विभिन्न सह-शैक्षिक गतिविधियों/विभागीय कार्यक्रमों (राष्ट्र/राज्य/जिला स्तरीय) के आयोजन में सहभागिता: पूर्णांक- 05 अंक

अ)	संस्थाप्रधान वाक्पीठ	02 अंक
ब)	विज्ञान मेला/सेमिनार/कला उत्सव/जीवन कौशल विकास मेला/विभिन्न प्रकार की प्रदर्शनियाँ	02 अंक
स)	बोर्ड द्वारा विद्यार्थियों/शिक्षकों हेतु सृजनात्मक/ व्यावसायिक कौशल उन्नयन प्रतियोगिता का आयोजन	01

13. सामुदायिक सहभागिता : पूर्णांक : 15 अंक

1)	आयकर विभाग से जारी 80-जी प्रमाण पत्र	02 अंक
2)	शिविरा पंचांग के अनुरूप सम्पूर्ण सत्र में आयोज्य समस्त PTM का अभिलेख संधारण एवं शाला दर्पण पर अपडेशन	01 अंक
3)	विद्यालय में 'विद्यालयी पूर्व विद्यार्थी मंच' के औपचारिक गठन उपरान्त शाला दर्पण पोर्टल पर पूर्व विद्यार्थियों के विवरण का अंकन	01 अंक
4)	समीक्ष्य सत्र के दौरान पूर्व विद्यार्थियों की एल्युमनी मीट 'सखा-संगम' कार्यक्रम का विधिवत आयोजन	02 अंक
5)	विद्यालय में प्रतिमाह निर्देशानुसार SDMC/SMC की कार्यकारिणी समिति की बैठकों का नियमित आयोजन एवं विधिवत अभिलेख संधारण तथा पारित प्रस्तावों की क्रियान्विति।	01 अंक
6)	विद्यालय में 'क्राउड फंडिंग' हेतु अक्षय पेटिका का संचालन एवं प्रतिमाह SDMC/SMC की कार्यकारिणी समिति की बैठक में प्राप्त सहयोग राशि की गणना उपरान्त शाला दर्पण पर सतत अपडेशन।	02 अंक
7)	विद्यालय के सम्पूर्ण स्टाफ का 'ज्ञान सम्पर्क पोर्टल' पर पंजीयन।	01 अंक
8)	नियमित रूप से सामुदायिक बाल सभा आयोजन एवं रिकॉर्ड संधारणा।	02 अंक
9)	विद्यालय में स्काउट/गाईड अथवा एन.सी.सी. इकाईयों का संचालन।	02 अंक
10)	समीक्ष्य सत्र के दौरान विद्यालय में वार्षिकोत्सव का विधिवत आयोजन	01 अंक

14. विविध उपलब्धियाँ/क्रियाकलाप/गतिविधियाँ : पूर्णांक-15 अंक

1)	विज्ञान क्लब का विधिवत गठन एवं गतिविधियों का सतत संचालन	01 अंक
2)	विद्यालय की वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन	01 अंक
3)	विद्यालय SIQE Certification प्रक्रिया निष्पादन उपरान्त शाला दर्पण पोर्टल पर SIQE Certified विद्यालय है।	02 अंक
4)	छात्र-छात्राओं हेतु पृथक-पृथक क्रियाशील शौचालय तथा नियमित साफ-सफाई की पुख्ता व्यवस्था	02 अंक
5)	विद्यार्थियों हेतु स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता।	01 अंक
6)	विद्यालय में पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रमों यथा-'हरित पाठशाला', पर्यावरण क्लब एवं वृक्षारोपण से सम्बन्धित निर्देशों की सम्पूर्ण पालना एवं सतत क्रियान्विति।	02 अंक
7)	विद्यालय द्वारा शाला दर्पण पोर्टल पर विद्यार्थी, शिक्षक एवं विद्यालय से सम्बन्धित समस्त प्रविष्टियों का शाला पोर्टल पर नियमित अपडेशन।	02 अंक
8)	विद्यालय में 'राजीव गाँधी कॅरियर गाइडेंस पोर्टल' का विद्यालय में कक्षा-9 से 12 के न्यूनतम 50 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा लॉगिन/सर्फिंग।	02 अंक
9)	विद्यालय में पुस्तकालय का व्यावहारिक उपयोग एवं विद्यार्थियों के लिए 'पुस्तक निर्गमन पुस्तिका' का सतत संधारण।	02 अंक

3. सामान्य निर्देश

1. इस योजनान्तर्गत आवेदन हेतु राज्य के समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय पात्र हैं। माध्यमिक विद्यालय तथा उच्च माध्यमिक विद्यालय पृथक-पृथक माध्यमिक वर्ग एवं उच्च माध्यमिक वर्ग में आवेदन करेंगे। नवक्रमोन्नत माध्यमिक विद्यालय कक्षा-10 की बोर्ड परीक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के प्रविष्ट होने की स्थिति में ही आवेदन के पात्र होंगे।

2. विद्यालयों द्वारा उक्त पुरस्कार योजना हेतु शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन किया जाएगा, जो संस्थाप्रधान द्वारा ऑनलाइन पूर्ति पश्चात सम्बन्धित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय को ऑनलाइन अग्रेषित किया जाएगा। उक्त आवेदन हेतु पोर्टल पर मोड्यूल प्रतिवर्ष 01 जुलाई को लाइव होगा, जो कि विद्यालयों द्वारा आवेदन हेतु 31 अगस्त तक खुला रहेगा।

3. प्राप्त ऑनलाइन आवेदनों की सूक्ष्म अंक योजना के अनुसार मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय द्वारा आवेदन करने वाले समस्त माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों हेतु वरीयता बनाई जाकर प्रथम तीन स्थान प्राप्त प्रस्तावों को मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में अग्रेषित किया जाएगा। ब्लॉक स्तर पर माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक वर्ग में कुल तीन विद्यालयों का संयुक्त रूप से चयन किया जाएगा, परन्तु उक्त चयन में न्यूनतम एक-एक माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय को आवश्यक रूप से सम्मिलित किया जाएगा। ब्लॉक स्तर पर सर्वश्रेष्ठ माध्यमिक विद्यालय के रूप में माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय, दोनों वर्गों में संयुक्त रूप से उच्चतम वरीयता वाले एक विद्यालय का चयन किया जाएगा। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय में कार्यरत अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (द्वितीय) उक्त योजना हेतु ब्लॉक नॉडल अधिकारी होंगे तथा उक्त योजनान्तर्गत ब्लॉक से अधिकाधिक विद्यालयों को आवेदन हेतु प्रेरित करने तथा वरीयता में आने वाले प्रथम तीन विद्यालयों के प्रस्ताव मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को निर्धारित समयावधि में अग्रेषित किए जाने हेतु उत्तरदायी होंगे। समस्त प्राप्त आवेदनों की सूक्ष्म अंक योजना के अनुरूप वरीयता निर्धारण की कार्यवाही मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय द्वारा सम्बन्धित अभिलेखों एवं आँकड़ों के भौतिक सत्यापन की यथोचित कार्यवाही/प्रमाणीकरण किए जाने पश्चात ही की जाएगी।

4. मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी जिला क्षेत्राधिकार के समस्त ब्लॉक से वरीयतानुसार प्राप्त तीन-तीन प्रस्तावों का सूक्ष्म अंक योजना के अनुरूप परीक्षणोपरान्त माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक वर्ग में जिले की प्रथम तीन-तीन वरीयताओं में आने वाले विद्यालयों का चयन कर प्रस्ताव निर्धारित समयावधि में सम्बन्धित संभागीय संयुक्त निदेशक कार्यालय को ऑनलाइन अग्रेषण हेतु उत्तरदायी होंगे। उक्त परीक्षण एवं चयन हेतु मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी की अध्यक्षता में एतद् द्वारा जिला स्तरीय चयन समिति का गठन किया जाता हैः-

क्र. सं.	पदनाम	चयन समिति में दायित्व
1	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी	अध्यक्ष
2	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक	सदस्य
3	प्रधानाचार्य, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान	सदस्य
4	सर्वश्रेष्ठ विद्यालय पुरस्कार योजनान्तर्गत पूर्व में चयनित विद्यालय से सम्बन्धित प्रधानाचार्य (जिसके वर्तमान पदस्थापन वाले विद्यालय द्वारा उक्त योजना के तहत आवेदन नहीं किया गया हो)	सदस्य
5	सहायक निदेशक (कार्यालय-मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी)	सदस्य सचिव

नोट : क्र.सं.-4 पर अंकित पात्र सदस्य नहीं मिलने पर संस्थापन अधिकारी (कार्यालय-मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी) को उक्त प्रधानाचार्य के स्थान पर सदस्य मनोनीत किया जाएगा।

उपर्युक्त समिति द्वारा ब्लॉक कार्यालयों से प्राप्त प्रस्तावों की सूक्ष्म अंक योजना के अनुरूप जिला स्तरीय वरीयता निर्माण हेतु आवश्यकतानुसार प्राप्त प्रस्तावों के भौतिक सत्यापन/प्रमाणीकरण की यथोचित कार्यवाही सम्पादित की जाएगी।

5. संभागीय संयुक्त निदेशक कार्यालय द्वारा क्षेत्राधिकार के समस्त जिलों से प्राप्त प्रस्तावों की समीक्षोपरान्त प्रत्येक जिले से दोनों वर्गों में वरीयतानुसार प्राप्त तीन-तीन प्रस्ताव माध्यमिक शिक्षा निदेशालय को ऑनलाइन अग्रेषित किए जाएँगे। साथ ही अग्रेषित किए गए प्रस्ताव एवं संलग्नकों की हार्ड कॉपी की पंजिका निर्मित कर निर्धारित समयावधि में निदेशालय को प्रेषित किया जाएगा।

6. राज्य स्तर पर उप निदेशक (माध्यमिक), निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर उक्त सम्पूर्ण योजना की समयबद्ध क्रियान्विति हेतु राज्य स्तरीय नॉडल अधिकारी के रूप में उत्तरदायी होंगे। उप निदेशक (माध्यमिक) द्वारा समस्त प्राप्त प्रस्तावों की गहन समीक्षा पश्चात सूक्ष्म अंक योजना के अनुरूप माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक वर्ग में पृथक-पृथक रूप से प्रथम तीन प्रस्तावों का राज्य स्तर पर क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय सर्वश्रेष्ठ राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय के रूप में चयन किया जाएगा।

7. निदेशालय द्वारा राज्य स्तर पर दोनों वर्गों में पृथक-पृथक प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय सर्वश्रेष्ठ राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय के चयनोपरांत सूक्ष्म अंक योजना के अनुरूप शेष प्रस्तावों में से प्रत्येक जिले हेतु सर्वश्रेष्ठ राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय का निर्धारण किया जाकर उक्तानुरूप चयनित 72 विद्यालयों की सूची का प्रकाशन विभागीय पत्रिका 'शिविरा' में किया जाएगा। उक्त सूचना समस्त सम्बन्धित मुख्य जिला शिक्षा अधिकारियों को प्रेषित कर शेष प्रस्तावों में से उनके क्षेत्राधिकार के प्रत्येक ब्लॉक में सर्वश्रेष्ठ राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक

विद्यालयों को विवरण निदेशालय द्वारा प्राप्त कर उक्तानुसार ब्लॉकवार सर्वश्रेष्ठ राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय की सूची का प्रकाशन भी 'शिविरा' पत्रिका में करवाया जाएगा।

8. उपर्युक्त वर्णित सम्पूर्ण कार्यवाही प्रतिवर्ष 31 मार्च तक आवश्यक रूप से सम्पादित की जाएगी।

9. उपर्युक्तानुसार योजना के बिन्दु संख्या : 1 से अंकित संख्यानुसार ब्लॉक स्तर पर सर्वश्रेष्ठ राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों तथा जिला एवं राज्य स्तर पर सर्वश्रेष्ठ राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों की पृथक-पृथक सूची माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर को प्रेषित की जाएगी। बोर्ड द्वारा उक्त समस्त विद्यालयों के संस्थाप्रधानों को बोर्ड के दीक्षांत समारोह के दौरान निर्धारित राशि के चैक तथा प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा। उक्त प्रमाण-पत्र में पुरस्कार हेतु चयनित विद्यालय में समीक्ष्य अवधि के दौरान संस्थाप्रधान के रूप में अधिकतम अवधि तक कार्यरत रहने वाले संस्थाप्रधान के नाम का भी उल्लेख किया जाएगा, जिसका प्रमाणन ऑनलाइन आवेदन में उल्लिखित कार्यरत अवधि के अनुरूप मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी द्वारा किया जाएगा।

10. पुरस्कार राशि का उपयोग : चयनित विद्यालयों को पुरस्कार स्वरूप प्राप्त राशि का उपयोग विद्यालय विकास हेतु SDMC/SMC की कार्यकारिणी समिति द्वारा लिए गए निर्णयानुसार किया जा सकेगा। विद्यालय के शैक्षणिक स्तर को समुन्नत करने यथा पुस्तकें, प्रयोगशाला उपकरण, सहायक शैक्षिक सामग्री, आवश्यकतानुसार अन्य उपस्कर इत्यादि के क्रय के लिए किया जा सकेगा। साथ ही उक्त राशि का उपयोग राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न प्रकार की जन सहभागिता से सम्बन्धित योजनाओं में विद्यालय/स्थानीय अंश के रूप में सम्मिलित कर किया जा सकेगा।

11. आवेदन में असत्य/गलत/अप्रमाणित तथ्य प्रस्तुत करने पर सम्बन्धित संस्थाप्रधान के विरुद्ध 'राजस्थान सिविल सेवाएँ (वर्गीकरण, नियंत्रण एवं अपील) नियम-1958' के प्रावधानों के तहत नियमानुसार विभागीय कार्यवाही अमल में लाई जाएगी।

12. यह योजना सत्र : 2019-20 से प्रारम्भ होगी अर्थात 01 जुलाई-2019 से 30 जून-2020 तक की समयावधि के दौरान विद्यालय द्वारा अर्जित उपलब्धियों की गणना सूक्ष्म अंक योजना में की जाएगी। एक बार विद्यालय ब्लॉक/जिला/राज्य स्तर पर सर्वश्रेष्ठ चयनित होकर पुरस्कृत हो जाने पर उन्हें आगामी तीन वर्षों में समान स्तर पर चयन के लिए अपात्र माना जाएगा अर्थात ब्लॉक स्तर के बाद जिला स्तर और जिला स्तर के बाद राज्य स्तर का पुरस्कार प्रदान किया जा सकता है।

4. पंचांग:- सर्वश्रेष्ठ राजकीय विद्यालय पुरस्कार योजना से सम्बन्धित सभी कार्यों के समयबद्ध निष्पादन हेतु एतद् द्वारा समय सारिणी निर्धारित की जाती है:-

क्र. सं.	कार्य का विवरण	निर्धारित तिथि
1.	संस्थाप्रधान द्वारा ऑनलाइन आवेदन संबंधित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय को अग्रेषित करना।	31 अगस्त
2.	मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी द्वारा परीक्षणोपरान्त ब्लॉक के प्रथम तीन वरीयता वाले माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों को मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को ऑनलाइन अग्रेषित करना।	30 सितम्बर
3.	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय द्वारा जिला स्तरीय चयन समिति के माध्यम से जिला क्षेत्राधिकार के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक वर्ग में तीन-तीन विद्यालयों के चयनोपरान्त प्रस्ताव संभागीय संयुक्त निदेशक कार्यालय को ऑनलाइन अग्रेषित करना।	31 अक्टूबर
4.	संभागीय संयुक्त निदेशक कार्यालय द्वारा प्राप्त प्रस्तावों की समीक्षोपरान्त संभाग के प्रत्येक जिले से माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक वर्ग में तीन-तीन विद्यालयों के प्रस्ताव निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर कार्यालय को ऑनलाइन अग्रेषित करना।	30 नवम्बर
5.	निदेशालय द्वारा संभागीय संयुक्त निदेशक कार्यालय के माध्यम से प्रत्येक जिले से ऑनलाइन प्राप्त माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक वर्ग में तीन-तीन विद्यालयों के प्रस्तावों के परीक्षणोपरान्त दोनों वर्गों में राज्य स्तर पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विद्यालयों की सूची तथा जिला स्तर पर दोनों वर्गों में एक-एक सर्वश्रेष्ठ विद्यालय एवं ब्लॉक स्तर पर एक सर्वश्रेष्ठ माध्यमिक उच्च माध्यमिक विद्यालय की सूची का विभागीय पत्रिका 'शिविरा' में प्रकाशन।	31 मार्च

● **(हिमांशु गुप्ता)** आइ.ए.एस., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

5. उच्च अध्ययन/पाठ्यक्रम/अतिरिक्त विषयों में अध्ययन/सार्वजनिक परीक्षा में सम्मिलित होने की अनुज्ञा के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-मा/संस्था/एफ-3/13322/परीक्षा अनुज्ञा/2020/106 दिनांक : 27.01.2020 ● समस्त संभागीय संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा); समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी; समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक शिक्षा; समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ● विषय : उच्च अध्ययन/पाठ्यक्रम/अतिरिक्त विषयों में अध्ययन/सार्वजनिक परीक्षा में सम्मिलित होने की अनुज्ञा के संबंध में।

उपर्युक्त विषयांतर्गत लेख है कि वरिष्ठ अध्यापक/अध्यापक समकक्ष संवर्ग के अनेक कार्मिकों के उच्च अध्ययन/पाठ्यक्रम/अतिरिक्त विषयों में अध्ययन/सार्वजनिक परीक्षा में सम्मिलित होने की अनुज्ञा के संबंध में प्रकरण निदेशालय में भिजवाए जाते हैं, उस क्रम में निर्देशित किया जाता है कि भविष्य में उपर्युक्त पदों के नियुक्ति अधिकारी प्रकरण शिक्षा निदेशालय नहीं भिजवाकर अपने स्तर पर आचरण सेवा नियम-1971 के

नियम-17 में उल्लेखित बिन्दु संख्या-4 व राज्य सरकार के परिपत्र क्रमांक : प.9(5)(30)कार्मिक/क-3/जाँच/2004 दिनांक 18.11.2006 में वर्णित निम्नांकित शर्तों के अंतर्गत अनुज्ञा जारी करेंगे-

1. शिक्षण संस्थान में अध्ययन का समय यदि कार्यालय समय के समान ही हो तो अध्ययन स्वीकृति स्वतः ही समाप्त मानी जाएगी।
2. राजसेवक का पदस्थापन अध्ययन स्वीकृति संस्थान के मुख्यालय से परिवर्तित/स्थानान्तरित हो जाता है तो अध्ययन स्वीकृति स्वतः ही समाप्त हो जाएगी।
3. प्रत्येक वर्ष के लिए अलग-अलग अनुमति लेनी आवश्यक होगी।
4. विभाग की पूर्वानुमति प्राप्त किए बिना अध्ययन चालू रखने एवं परीक्षा में सम्मिलित होने वाले कर्मचारियों के विरुद्ध नियमानुसार अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी।
5. जिन कर्मचारियों को इस वर्ष उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु अथवा अध्ययन जारी रखने एवं परीक्षा में सम्मिलित होने की अनुमति दी जावेगी उन्हें परीक्षा दिवसों के अतिरिक्त अन्य कोई अवकाश स्वीकृत नहीं किया जावेगा।
6. अध्ययन स्वीकृति दिए जाने से अधिकारी/कर्मचारी को किसी स्थान विशेष पर पदस्थापन निरन्तर रखने का अधिकार नहीं मिल पाएगा और उसका स्थानान्तरण किया जा सकता है।
7. अध्ययन से राजसेवक दैनिक राजकीय कार्य सम्पादन में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं करेगा, अन्यथा स्वीकृति समाप्त कर दी जाएगी।
8. अध्ययन वर्ष में अधिकारी/कर्मचारी की उपस्थिति का प्रतिशत कम होने के लिए सरकार/विभाग किसी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होगी।
9. परीक्षा की तैयारी हेतु किसी प्रकार का अवकाश स्वीकृत नहीं किया जाएगा।
10. प्रशासनिक कारणोवश अध्ययन स्वीकृति बिना किसी पूर्व सूचना के समाप्त की जा सकती है।

● **(नूतन बाला कपिला)** संयुक्त निदेशक (प्रशिक्षण), माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

6. बोर्ड परीक्षा-2020, परीक्षा-परिणाम उन्नयन कार्ययोजना की क्रियान्विति की सुनिश्चितता बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-मा/माध्य/निप्र/नवाचार/2017-19/260 दिनांक : 16.01.2020 ● समस्त पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (PEEO) ● विषय : बोर्ड परीक्षा-2020, परीक्षा-परिणाम उन्नयन कार्ययोजना की क्रियान्विति की सुनिश्चितता बाबत। ● प्रसंग : समसंख्यक निर्देश पत्र दिनांक 13.11.2019, 26.11.2019, 12.12.2019, 23.12.2019 एवं 13.01.2020

विषयान्तर्गत जैसा कि आपको विदित है कि बोर्ड परीक्षा-2020 दिनांक 05.03.2020 से प्रारंभ हो रही है। सत्र पर्यन्त संस्था प्रधानों, शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा किए गए प्रयासों के आकलन का पैमाना परीक्षा परिणाम ही होते हैं। बोर्ड परीक्षा में अब अत्यधिक न्यून समय रह गया है, अतः परीक्षा को दृष्टिगत रखते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु हमें योजनाबद्ध प्रयास करने हैं। प्रत्येक विद्यालय, जिला एवं मण्डल भी अपने-अपने स्तर पर प्रयासरत हैं। इसी क्रम में निम्न चरणों की सुनिश्चितता करावें:-

1. पाठ्यक्रम की पुनरावृति एवं काठिन्य निवारण।
2. विभागीय वेबसाईट तथा शालादर्पण पर अपलोड की गई सामग्री यथा-(1) बोर्ड परीक्षा उन्नयन कार्य योजना (2) प्रयास-2020 की सामग्री (3) प्रश्न बैंक तथा (4) मेधावी विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिकाओं की स्कैन प्रतियाँ इत्यादि को डाउनलोड कर उसका उपयोग सुनिश्चित करावें।
3. प्री-बोर्ड परीक्षा आयोजन तथा उससे प्राप्त परिणाम का विश्लेषण।
4. प्री-बोर्ड परिणाम के विश्लेषण के आधार पर कठिनाई का चिह्नीकरण एवं उपचारात्मक कक्षाएं।

उक्त कार्य अभियान स्तर पर किया जाना है, जिससे किए गए प्रयासों का सुफल प्राप्त हो सके।

● **(हिमांशु गुप्ता)** आई.ए.एस., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

7. समस्त राजकीय विद्यालयों में प्री-बोर्ड परीक्षा 2020 के आयोजन से पूर्व बोर्ड कक्षाओं के समस्त विषयों में पाठ्यक्रम पूर्णता की सुनिश्चितता के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-मा/माध्य/निप्र/नवाचार/2017-19/263 दिनांक : 16.01.2020 (1) समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (2) समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ● विषय : समस्त राजकीय विद्यालयों में प्री-बोर्ड परीक्षा-2020 के आयोजन से पूर्व बोर्ड कक्षाओं के समस्त विषयों में पाठ्यक्रम पूर्णता की सुनिश्चितता के सम्बन्ध में। ●प्रसंग : समसंख्यक निर्देश पत्र दिनांक : 13.11.2019।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2020' के तहत समसंख्यक निर्देश पत्र द्वारा आपको क्षेत्राधिकार के समस्त राजकीय विद्यालयों में अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं से पूर्व बोर्ड कक्षाओं में समस्त विषयों का पाठ्यक्रम पूर्ण करवाए जाने बाबत् निर्देश प्रदान किए गए थे। विभिन्न जिलो की उक्त कार्य योजना की क्रियान्विति से सम्बन्धित प्रगति रिपोर्ट में अभी भी कुछ विद्यालयों में पाठ्यक्रम पूर्णता का अभाव दृष्टिगोचर हुआ है। उक्त क्रम में क्षेत्राधिकार के समस्त माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों हेतु अग्राकित निर्देशों की तत्काल क्रियान्विति सर्वोच्च प्राथमिकता से सम्पादित करावें:-

1. जिन विद्यालयों की बोर्ड कक्षाओं में किसी विषय विशेष का पाठ्यक्रम सम्बन्धित विषयाध्यापक के पदस्थापन के अभाव अथवा किसी अन्य अपरिहार्य कारणवश (यथा मातृत्व/दीर्घकालिक अवकाश) पूर्ण नहीं हो पा रहा है, उन विद्यालयों में उपलब्ध अन्य श्रेणी के पात्र शिक्षकों द्वारा विद्यालय में तत्सम्बन्धी विषय की अतिरिक्त कक्षाएँ विद्यालय समय के दौरान अथवा विद्यालय समय के पूर्व/पश्चात् लगाई जाकर प्री बोर्ड परीक्षाओं के आयोजन से पूर्व पूर्ण करवाया जाना सुनिश्चित करें।

2. विद्यालयों में रिक्त विषयाध्यापक के विषय से सम्बन्धित पात्र अन्य शिक्षक के अभाव की स्थिति में समीपस्थ अन्य विद्यालय (प्राथमिक/उच्च प्राथमिक/माध्यमिक/उच्च माध्यमिक) में कार्यरत शिक्षक की तत्काल शिक्षण व्यवस्था करते हुए तदनुसार प्री बोर्ड परीक्षा आयोजन से पूर्व पाठ्यक्रम पूर्णता की सुनिश्चितता करावे।
3. जिन विद्यालयों में बोर्ड परीक्षा से सम्बन्धित कक्षाओं में सम्बन्धित विषय का पाठ्यक्रम पूर्ण करवाया जा चुका है उन विद्यालयों से विषयाध्यापक की अस्थाई शिक्षण व्यवस्था आवश्यकता वाले समीपवर्ती विद्यालयों में पाठ्यक्रम पूर्ण करवाए जाने के प्रयोजनार्थ की जा सकती है।

● **(हिमांशु गुप्त)** आई.ए.एस., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

माह : फरवरी, 2020

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 12.40 से 1.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
01-02-2020	शनिवार	उदयपुर	8	विज्ञान		परीक्षामाला
03-02-2020	सोमवार	जोधपुर	8	अंग्रेजी		परीक्षामाला
04-02-2020	मंगलवार	बीकानेर	10	अंग्रेजी		परीक्षामाला
05-02-2020	बुधवार	जयपुर	7	हिन्दी	12	वन-श्री
06-02-2020	गुरुवार	उदयपुर	5	हिन्दी		परीक्षामाला
07-02-2020	शुक्रवार	जोधपुर	5	अंग्रेजी		परीक्षामाला
08-02-2020	शनिवार	बीकानेर	10	सामाजिक विज्ञान		परीक्षामाला
10-02-2020	सोमवार	जयपुर	4	पर्यावरण अध्ययन	8	जंगल की बातें
11-02-2020	मंगलवार	उदयपुर	9	संस्कृत	14	कार्यं खलु साध्येम्
12-02-2020	बुधवार	जोधपुर	9	विज्ञान	12	आकाशीय पिण्ड व भारतीय पंचांग
13-02-2020 से 15.02.2020 तक तृतीय परख						
17-02-2020	सोमवार	बीकानेर	8	संस्कृत		परीक्षामाला
18-02-2020	मंगलवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम	स्वामी दयानन्द जयंती (उत्सव)		
19-02-2020	बुधवार	उदयपुर	7	हिन्दी	14	रक्त और हमारा शरीर
20-02-2020	गुरुवार	जोधपुर	गैरपाठ्यक्रम	महाशिवरात्री		(अवकाश-उत्सव)
22-02-2020	शनिवार	बीकानेर	5	गणित		परीक्षामाला
24-02-2020	सोमवार	जयपुर	3	हिन्दी	8	गीता यहाँ खुशहाली के (कविता)
25-02-2020	मंगलवार	उदयपुर	6	विज्ञान	17	वायु, जल एवं मृदा
26-02-2020	बुधवार	जोधपुर	4	पर्यावरण अध्ययन	16	हमारे राष्ट्रीय प्रतीक
27-02-2020	गुरुवार	बीकानेर	8	सामाजिक विज्ञान	22	राष्ट्रीय आंदोलन
28-02-2020	शुक्रवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (उत्सव)		
29-02-2020	शनिवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम			

शिविरा पञ्चाङ्ग

फरवरी-2020

रवि		2	9	16	23
सोम		3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29

कार्य दिवस-24, रविवार-04, अवकाश-01, उत्सव-03 ● 08 फरवरी-सामुदायिक बाल सभा आयोजन (विद्यालय परिसर में)। 10 फरवरी-कृमि मुक्ति दिवस-समस्त विद्यार्थियों को डिवर्मिंग दवा (एल्बेंडाजॉल) खिलाएं। 11 फरवरी-अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षित इण्टरनेट दिवस (RSCERT)। 13 से 15 फरवरी-तृतीय परख का आयोजन। 14 फरवरी-मॉप अप दिवस-राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस (10 फरवरी-2020) को वंचित रहे विद्यार्थियों को डिवर्मिंग दवा (एल्बेंडाजॉल) खिलाएं। फरवरी के तृतीय सप्ताह में-सत्रान्त की संस्थाप्रधान वाक्पीठ (प्रावि/उप्रावि/मावि/उमावि) का आयोजन (17 से 22 फरवरी की अवधि में)। 15 फरवरी-सामुदायिक बाल सभा आयोजन (विद्यालय परिसर में)। 18 फरवरी-स्वामी दयानन्द जयन्ती (उत्सव), राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (उत्सव) (RSCERT)। 21 फरवरी-महा शिवरात्रि (अवकाश-उत्सव)। 22 फरवरी-सामुदायिक बाल सभा का आयोजन -सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर। 28 फरवरी-राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (RSCERT)। ● नोट-1. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य कक्षा 10 एवं 12 की परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों हेतु 14 दिवस का परीक्षा पूर्व तैयारी अवकाश रहेगा। ● प्रत्येक सोमवार-WIFS नीली गोली (कक्षा 6-12), WIFS पिंक गोली (कक्षा 1-5)।

प्रधानाचार्य-डायरी

कलरव, कुरजां और खोटा सिक्का

❒ डॉ. मदन गोपाल लढ़ा

झाबरा, 17 दिसम्बर 2017

पहली से बारहवीं तक लगभग चार सौ बच्चे और मेरे सहित चौदह का स्टाफ। अपने स्कूल के अलावा पीईईओ. का दायित्व। पंचायत क्षेत्र में चौबीस किलोमीटर दायरे में पसरे प्रारम्भिक शिक्षा के पाँच स्कूल। विद्यालय में बाबू व सहायक कर्मचारी का पद खाली होने से दफ्तरी कामों का जिम्मा भी खुद पर ही। निश्चय ही, कार्यालयी कामों को पूरा करने में व्याख्याता संदीप कुमार पूनिया, श्रवण कुमार खिलेरी, वरिष्ठ अध्यापक नरपत सिंह राजपुरोहित, शिक्षक बुलीदान आदि का भरपूर सहयोग रहता है। मुझे शिकायत है तो केवल दो बातों से- पहली घर से करीब चार सौ किलोमीटर की दूरी और दूसरी कक्षा में पढ़ाने का समय नहीं मिलना। चूँकि मैंने काउंसलिंग में प्रदर्शित रिक्त पदों में से जैसलमेर जिले को चुना है लिहाजा दूरी वाली शिकायत भी इग्नोर की जा सकती है। मगर हिन्दी शिक्षक के रूप में पढ़ाने का अब तक जो आनंद लिया, वह प्रधानाचार्य बनने के बाद छूटता-सा नजर आ रहा है। चार साल केन्द्र सरकार द्वारा संचालित जवाहर नवोदय विद्यालय में तथा दस साल राज्य सरकार के उच्च माध्यमिक विद्यालय में हिन्दी भाषा व साहित्य के अध्यापन का सौभाग्य मिला है। साहित्यिक विधाएँ हो या चाहे साहित्य का इतिहास, व्याकरण हो अथवा काव्यशास्त्र, शिक्षक के रूप में पूर्ण समर्पण व मेहनत के साथ पढ़ाने का प्रयास किया है। संभवतया यही वजह रही है कि विद्यार्थियों का भरपूर स्नेह-सम्मान मिला है। पढ़ाने से पूर्व पाठ्य प्रकरण को तैयार करने के लिए नियमित स्वाध्याय भी किया है। मगर अब पदोन्नति के बाद कई बार तो पूरे दिन कार्यालय से बाहर निकलना भी नहीं हो पाता। मोबाइल से माथापच्ची में ही घंटों निकल जाते हैं। रही-सही कसर लेपटॉप व फाइलें निकाल देती है। महीने में चार-पाँच बैठकें, पाँच स्कूल विजिट व कुछ अन्य व्यस्तताएँ, मतलब पढ़ाने के नाम पर नियमानुसार आवंटित न्यूनतम कालांशों में भी कक्षाओं में जाना नहीं हो पाता। इन सबके बावजूद मुझे अपने भीतर के शिक्षक को बचाए रखना है। बेहतर शिक्षक बनने के लिए निरन्तर विद्यार्थी बने रहना है। निश्चय ही यह चुनौतीपूर्ण है मगर चुनौतियों से जूझना ही तो जीवन है।

झाबरा, 15 जनवरी 2018

कोई बच्चा खोटा सिक्का नहीं होता। अगर एक शिक्षक यह कहे तो पीड़ा होना स्वाभाविक है। मुझे भी हुई जब चार दिन पूर्व ये शब्द सुने। एकबारगी तो मन हुआ कि तत्काल जवाब दिया जाए कि सिक्का खोटा नहीं बल्कि परख में कमी है, लेकिन धैर्य बनाए रखा। असल में धीरज व सहनशीलता इस पद की मूल आवश्यकता है। व्याख्याता सेवा के दौरान शायद ऐसी परिस्थितियों में तत्काल प्रतिक्रिया देता मगर अब भूमिका बदल गई है। यहाँ एक भरे-पूरे संस्थान के मुखिया है। सोच-समझ कर व तोल-मोल कर बोलना आपकी परिपक्वता को जाहिर करता है। मगर उसी वक्त इस कटाक्ष को एक चुनौती के रूप में लिया। मध्यावकाश के पश्चात पाँचवे कालाँश में विषयाध्यापक के अवकाश पर होने के कारण सातवीं कक्षा में जाना हुआ। कक्षा में घुसते ही सबसे पहले उसी बच्चे को करीब बुलाया। शुरू में तो वह संकोच करता रहा मगर अपनत्व का अहसास पाकर खुल गया। उससे घर-परिवार व पढ़ाई-लिखाई की सामान्य बातचीत की। फिर उसकी कॉपी में 'मदर ओ माइन' कविता लिखकर दी। एक बार वाचन का अभ्यास करवाया। भावार्थ स्पष्ट करने के लिए कठिन शब्दों का अर्थ बताते हुए अंग्रेजी से मातृभाषा राजस्थानी में कविता का अनुवाद करके भी बताया। अब उस बच्चे को कविता याद करने के लिए प्रेरित किया। उसने अगले दिन रविवार की छुट्टी का बेहतरीन उपयोग किया व सोमवार को मुझे कविता सुनाने के लिए दफ्तर के बाहर दो-तीन चक्कर लगाए। मैंने हाथ का काम निपटाकर उससे कविता सुनी व कुछ सुधार करवाकर शाबासी दी। आज उसी बच्चे ने चार सौ विद्यार्थियों व चौदह शिक्षकों के सामने अंग्रेजी में कविता का सस्वर पाठ करके अपना खरापन सिद्ध कर दिया। मैंने अपनी जेब से एक पेन निकालकर उसको ईनाम के रूप में दिया। उम्मीद है कि वे शिक्षक साथी भविष्य में किसी बच्चे को खोटा सिक्का का खिताब देने से पहले जरूर सोचेंगे।

झाबरा, 5 मई 2018

जिस दिन वाक्पीठ में आई.सी.टी. लैब की स्थापना के लिए 25-75 योजना की जानकारी मिली, उसी दिन से यह लगन लगी हुई थी। आज के युग में कम्प्यूटर शिक्षा कितनी जरूरी हो चुकी है, कहने की दरकार नहीं है। कई बार तो कम्प्यूटर नहीं जानने का मतलब अनपढ़ जैसा हो जाता है। इस मरुभूमि के बच्चों को भी यह अवसर मिलना चाहिए कि वे कम्प्यूटर के सामान्य उपयोग में पारंगत हो सके। लैब के लिए कुल पिचहत्तर हजार सात सौ पचास रुपये जनसहयोग से जुटाने थे। शेष दो लाख सताईस हजार दो सौ पचास रुपए का अंशदान राज्य सरकार से मिलेगा। पिछले एक सप्ताह में इस राशि की व्यवस्था के लिए कई उपाय सोचे। पंद्रह दानदाता तलाश कर 5-5 हजार रुपयों का सहयोग लेने का सुझाव आया। स्वयं से शुरूआत करके लोगों को प्रेरित करने का मन बनाया। एक बार वातावरण निर्माण हो जाए फिर धन की कमी नहीं रहती। इसी दौरान गाँव के निवासी व विद्यालय में वरिष्ठ अध्यापक नरपत सिंह राजपुरोहित ने गाँव के प्रवासी व्यवसायी धन्नाराम सुथार के बारे में बताया। उनका गोवा में फर्नीचर का व्यवसाय है। गाँव से दो-ढाई किमी. दूर उनकी ढाणी है। मैं नरपत सिंह राजपुरोहित व एक अभिभावक लक्ष्मण सिंह राजपुरोहित के साथ उनकी ढाणी पहुँच गया। धन्नाराम जी ढाणी में नहीं मिले मगर उनके भाई ने खूब आवभगत की। उनके भाई को राज्य सरकार की इस योजना के बारे में बताया। कम्प्यूटर शिक्षा की महत्ता पर भी चर्चा हुई। उन्होंने बड़े गौर से सारी बातें सुनी और धन्नाराम जी से फोन पर वार्ता करवाई। महज तीन मिनट की संक्षिप्त वार्ता पर ही वे सहयोग के लिए तत्पर हो गए। हमारी उम्मीदों से कहीं बढ़कर उन्होंने अकेले ही सारा अर्थ सहयोग करने की हामी भर दी और एसडीएमसी. खाते की डिटेल लेकर शाम से पहले ऑनलाइन फंड ट्रांसफर कर दिया। अब झाबरा के बच्चे कम्प्यूटर शिक्षा से अपना कॅरियर बनाएँगे। धन्नाराम जी के प्रति कृतज्ञता के साथ आज इस बात का भी सुकून है कि अच्छे भाव से किया गया काम सफल हुआ। आज गहरी नींद आएगी।

रामबाग, 4 दिसम्बर

आज फिर इस मत की पुष्टि हुई कि बौद्धिक दृष्टि से मरुधरा बहुत उर्वरा है। कोई झाड़-झंखाड़ साफ करके बीज डालकर और खाद-पानी की माकूल व्यवस्था करके तो देखे। अब तो वैज्ञानिक स्तर पर यह स्वीकारा जा चुका है कि इस क्षेत्र में कभी सरस्वती नदी बहा करती थी। सरस्वती के प्रवाह क्षेत्र में प्रतिभाओं की कमी भला कैसे हो सकती है। रामबाग की भित्ति पत्रिका कुरजां के प्रवेशांक के लोकार्पण के साथ यह प्रमाणित हो गया कि इन ग्रामीण बच्चों में सृजनात्मकता भरी हुई है। भित्ति पत्रिका के प्रति मेरा अनुराग नया नहीं है। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, लूणकरणसर में व्याख्याता सेवा के दौरान 'कलरव' नाम से भित्ति पत्रिका का कई सालों तक संचालन किया। 'कलरव' के दर्जन भर अंकों ने विद्यार्थियों में पढ़ने-लिखने के संस्कार विकसित किए। जिनमें से कई विद्यार्थी तो आज साहित्यिक परिदृश्य में अपनी अलग पहचान बना चुके है। रामबाग की भित्ति पत्रिका के नामकरण को लेकर कई दिनों तक मंथन चला। लूणकरनसर जाते वक्त एक दिन कुरजां का डेरा देखा। कुरजां असल में साइबेरियन प्रवासी पक्षी है जो सात समंदर दूरी से यहाँ प्रवास पर आते हैं। इस प्रवासी पक्षी को हमारे समाज ने 'कुरजां म्हारी हाली नी आलीजा रै देस...' एवं 'कुरजां म्हारी भंवर मिला दे ए...' जैसे लोकगीतों में सम्मान दिया। हिन्दी अध्यापक रामवीर रैबारी को रचनाओं के संकलन, संपादन व कलापक्ष में सहयोग का जिम्मा सौंपा। विद्यार्थी सम्पादक मण्डल ने सात दिनों में तीस से अधिक रचनाएँ संकलित कर डाली। देखते ही देखते 'कुरजां' ने आकार ग्रहण कर लिया। पत्रिका के लोकार्पण के लिए चर्चित बाल साहित्यकार रामजीलाल घोड़ेला विद्यालय में पधारे। बाल रचनाकारों के रचनात्मकता देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने रचनाधर्मी विद्यार्थियों का हौंसला बढ़ाते हुए लेखन के गुर सिखाए। भित्ति पत्रिका के संपादन-लेखन से जुड़े विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के बाद पत्रिका-पठन के लिए बच्चों का रेला लगा रहा। स्टाफ सदस्यों ने इस नवाचार को सराहा व इसमें सुधार हेतु सुझाव दिए। क्या पता आने वाले समय में इन्हीं विद्यार्थियों में से कोई नंदकिशोर आचार्य या उदय प्रकाश निकल आए।

रामबाग, 29 अगस्त 2019

आज स्कूल जाते ही ऑफिस की टेबल पर फटी हुई कॉपी के टुकड़े नजर आए। मैं कल ब्लॉक स्तरीय निष्पादक समिति की बैठक में लूणकरनसर गया हुआ था। 'सर विशाल ने आज फिर शैतानी की। उसने गणित की कक्षा में कक्षा परख की कॉपी फाड़ दी।' कल रात विद्यालय के वरिष्ठतम व्याख्याता ने फोन पर बताया था। आज तो उसकी शिकायतों का अम्बार लग गया।

-सर इस लड़के के हाव बहुत बढ़ गए है। जब देखो अध्यापकों के सामने अकड़ कर बोलने लगता है।

-सर एक लड़का कहना नहीं मानता तब पूरी कक्षा पर विपरीत असर पड़ता है।

-इसके घरवालों को तीन-चार बार कह दिया मगर इस पर कोई असर नहीं पड़ा।

-आप सख्त कार्रवाई नहीं करेंगे तो विद्यालय का अनुशासन दांव पर लग जाएगा।

स्टाफ के सदस्यों ने अपनी-अपनी राय बताई। मसला गंभीर हो गया था। अमूमन मैं बच्चों की छोटी-मोटी शैतानियों को सहज भाव से लेता हूँ। अनुशासन के नाम पर कड़े फैसलों की बजाय काउंसलिंग से काम चलाना उचित मानता हूँ। विशाल दसवीं कक्षा का विद्यार्थी है। पढ़ाई में औसत। स्वभाव से उग्र। अक्सर सहपाठियों से उलझ जाता है। यदा-कदा गुरुजनों से भी अनुचित व्यवहार कर बैठता है। उसे कई बार समझाया मगर सुधार नहीं हो पाया। पिछली बार एक बच्चे के साथ झगड़ा करने पर उसके बड़े भाई को बुलाकर अंतिम चेतावनी दी थी। इस बार तो कड़ा निर्णय लेना ही होगा। 'ठीक है इसके गार्जियन को बुलाकर कल टी.सी. देंगे।' मैंने विद्यालय हित में कठोर निर्णय लेना उचित समझा। शाम को घर लौटा तब भी मन उद्विग्न था। एक साधारण किसान परिवार का बच्चा है विशाल। पिता खेती-किसानी का काम करते हैं। पढ़ाई में थोड़ा कमजोर है। प्रयास करने पर शायद परीक्षा में सफल हो जाए मगर टी.सी. काटने का मतलब उसकी पढ़ाई के द्वार बंद करना है। खाना खाते समय माँ से मेरी चिंता छुपी नहीं रही। 'वाह रे! क्यारा गुरुजी हो थे। अेक टाबर नैं कोनी सुधार सक्या। थे कित्ती कुचामद करता पण थारी टी.सी. तो कोनी काटी कोई। सावळ समझाओ टाबर नै।' माँ महज साक्षर है मगर अनुभव और समझ के मामले में बहुत आगे है। मुझको लगा कि माँ की बात सही है। घर पर दिशु-कान्हा भी तो शैतानियाँ करते हैं। टी.सी. काटना हमारी नाकामी है। विशाल को सुधारना है। प्यार से चाहे डाँट से उसको अपनी गलतियों का अहसास करवाना है। इस संकल्प से मन को कुछ राहत मिली।

रामबाग, 11 सितम्बर 2019

आज सुबह सात बजे राणीसर के लिए रवाना हो गया। वैसे तो राणीसर गाँव मेरे मुख्यालय से नौ किलोमीटर दूर है। मगर रास्ता कच्चा होने के कारण सड़क मार्ग से अर्जुनसर होते हुए जाना पड़ता है। जिसकी दूरी पच्चीस किलोमीटर पड़ती है। मैं सात बजकर पच्चीस मिनट पर राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रांगण में मौजूद था। इस विद्यालय में लगभग सवा सौ विद्यार्थी पढ़ते है जिनके लिए चार अध्यापक कार्यरत है। प्रार्थना सभा की साढ़े सात बजते-बजते तीन अध्यापक पहुँच चुके थे, वहीं एक अध्यापक शाला दर्पण से टी.सी. काटने के लिए ग्राम के ई-मित्र पर गए थे। कार्यालय में दो अभिभावक बैठे थे जो आठवीं उत्तीर्ण करने वाले बच्चों की टी.सी. लेने के लिए आए हुए थे। मैंने अभिभावकों से बात की। वे संस्थाप्रधान व अध्यापकों के प्रयासों से खुश थे। उनका कहना था कि गाँव में दसवीं का स्कूल बन जाए तो अच्छा हो जाए। इस बीच प्रार्थना शुरू हो गई। मैं भी कार्यालय से निकलकर बच्चों के बीच पहुँच गया। वंदे मातरम्, प्रार्थना, प्रतिज्ञा व राष्ट्रगान। मैंने प्रधानाध्यापक पूर्णचंद जी को मुख्य समाचार व सामान्य ज्ञान के प्रश्नों को नियमित रूप से प्रार्थना सभा में शामिल करने का सुझाव दिया। सप्ताह में दो-तीन कविता वाचन व प्रेरक प्रसंग वाचन भी करवाया जा सकता है। विद्यालय परिसर की स्वच्छता व हरियाली स्टाफ की मेहनत व निष्ठा की कहानी कह रही थी। प्रार्थना के बाद मैंने आठवी कक्षा के विद्यार्थियों से बात की। उनसे हिन्दी व अंग्रेजी की किताबें पढ़वाकर देखी। उनकी गृह कार्य की कॉपियाँ भी देखी। हिन्दी के अध्यापक को विद्यार्थियों की लिखावट व वर्तनी सुधारने के लिए श्रुतलेख-सुलेख का अभ्यास करवाने व भित्ति पत्रिका शुरू करने के लिए सम्बलन दिया। एसआईक्यूई. लागू होने के बाद प्रारम्भिक शिक्षा का अकादमिक स्तर सुधरा हैं। अब अध्यापक साथी नवाचारों को सहजता से अंगीकार कर रहे हैं। मैंने विद्यालय में मिड-डे-मील, अन्नपूर्णा दुग्ध योजना, अक्षय पेटिका आदि की समीक्षा की। अध्यापकों से पीईईओ.

कार्यालय स्तर पर लम्बित वित्तीय व संस्थापन सम्बन्धी कामों की जानकारी ली। सम्बलन प्रपत्र भरकर मैं अपने मुख्यालय के लिए रवाना हो गया।

भैरूपुरा सीलवानी, 14 अक्टूबर 2019

आज पंचायत क्षेत्र के गाँव अमरपुरा में स्थित कस्तूरबा गाँधी बालिक आवासीय विद्यालय में जाना हुआ। अवसर था केजीबीवी के जिलास्तरीय खेल प्रतियोगिता का। इस प्रतियोगिता में स्थानीय विद्यालय के अलावा घड़साना स्थित कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय की छात्राएँ हिस्सा ले रही थी। कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय बालिका शिक्षा के लिहाज से सरकार की एक महत्त्वाकांक्षी योजना है। न्यून महिला साक्षरता दर व अधिक जैंडर गैप वाले शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े चुनिंदा अंचलों में केजीबीवी संचालित हो रहे हैं। फिलहाल इनमें बालिकाएँ छठी से आठवीं तक शिक्षा प्राप्त करती है। चूँकि मेरे शिक्षकीय जीवन की शुरूआत जवाहर नवोदय विद्यालय से हुई है। इसलिए मुझे केजीबीवी को देखकर नवोदय की याद आ गई है।

खेल प्रतियोगिता का शुभारंभ करने के लिए समसा के एपीसी दिनेश कुमार, इंचार्ज सीबीईओ. नरेश रिणवां, एसबीईओ. अमृतपाल, पीओ प्रकाश रिणवां सहित कई मेहमान पहुँचे। औपचारिक कार्यक्रम व ध्वजारोहण के पश्चात शुरू हुआ खेलों का सिलसिला। पहला मैच हुआ खो-खो का। अमरपुरा की छात्राओं का खेल-कौशल दाद देने लायक था। असल में खो-खो का खेल है ही ऐसा। इसको खेलने वाले खिलाड़ियों के साथ दर्शक भी उत्साह से भर जाते हैं। वैसे देखा जाए तो हमारे परम्परागत खेलों की थाती कितनी विविधतापूर्ण है। इनके खेलने के लिए न लम्बे-चौड़े खेल मैदान चाहिए न ही खास संसाधन। मुझे स्मरण है कि बचपन में छुट्टी होते ही गली-मुहल्ले खेलों के हो-हल्ले से गुंजायमान हो जाते थे। कबड्डी, सतोलिया, हरदड़ा, लूणिया-घाटी, मारदड़ी, लोह-लक्कड़, लुका छिपी इत्यादि कितने प्रकार के खेल खेले जाते थे। खेलों के जोश के आगे पढ़ाई का तनाव कैसे हवा हो जाता पता ही नहीं चलता। आजकल अंकों की होड़ में उलझे बच्चों के मन को प्रफुल्लित करने के लिए खेल ही एकमात्र विकल्प है। इस बात में दोराय नहीं है कि खेलों के संरक्षण-संवर्धन में स्कूली खेल स्पर्द्धाओं की उल्लेखनीय भूमिका रही है। मध्यावकाश तक खेलों की अनूठी दुनिया का आनंद लेकर मैं मुख्यालय के लिए रवाना हो गया।

प्रधानाचार्य
144, लढ़ा निवास, महाजन, बीकानेर-334604
मो: 9982502969

बालिका शिक्षा की महत्ता

❒ सालगराम परिहार

बालिका शिक्षा राष्ट्र के लिए सकारात्मक पहल है। शिक्षित समाज देश के विकास का आधार स्तंभ है। प्रजातंत्र की सफलता के लिए शिक्षा एक मुख्य कुंजी है। हमारे देश व प्रदेश की सरकार चाहती है कि प्रत्येक बालक-बालिका शिक्षित हो। समाज का कोई भी वर्ग शिक्षा से वंचित न रहे। इसी उद्देश्य से सरकार ने जन जागृति पैदा करने के लिए **'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ'** जैसा अभियान शुरू किया है। देश एवं समाज के विकास में बालिका शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। जब तक बालिका शिक्षित नहीं होगी तब तक समाज एवं राष्ट्र के संपूर्ण विकास की परिकल्पना पूरी नहीं हो सकती है। समाज के उत्थान के लिए बालिका शिक्षा आवश्यक है। बालिकाओं के शिक्षित होने से अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जाएगा। बालिकाओं के अधिकाधिक शिक्षित होने से न केवल जनसंख्या के तीव्र विस्तार को कम किया जा सकता है बल्कि अन्य विकसित देशों की तरह गरीबी की समस्या, सामाजिक कुरीतियाँ-बाल विवाह एवं दहेज प्रथा जैसी कुप्रथाओं एवं बुराइयों को भी दूर किया जा सकता है। बालिकाओं के शिक्षित होने से ही सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज का निर्माण संभव है।

बालिका शिक्षा परिवर्तन का सुसंगत माध्यम है। ऐसा परिवर्तन जो श्रेष्ठ विचारों को संजोए, विकास की गति को सही दिशा में आगे बढ़ा सके। शिक्षा का सामाजिक महत्त्व इसी में है कि कोई भी समाज शिक्षा के माध्यम से अपने विकास की प्रक्रिया निर्धारित कर सकता है। बालिका शिक्षा मानव की प्रकृति को प्रयत्नपूर्वक निश्चित दिशा में ले जाने का प्रयास है। बालिका शिक्षा को तीव्रता से आगे बढ़ाने में आमजन को जाग्रत रहना होगा। शिक्षा का उद्देश्य बालिकाओं का सर्वांगीण विकास। सर्वांगीण विकास में बालिकाओं का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास निहित है। शारीरिक विकास हेतु योगाभ्यास, घुड़सवारी, तैराकी, कुश्ती आदि का अभ्यास अनिवार्य रूप से करवाया जाए। बालिकाओं को रचनात्मक एवं सृजनात्मक कार्यों को करने के लिए प्रेरित करने में माता-पिता एवं अभिभावक बिना संकोच पूर्ण सहयोग करें तभी बालिकाएँ निडरता पूर्वक अपना प्रदर्शन कर सकेंगी। बालिका शिक्षा के प्रभाव से भारतीय नारियाँ जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़े। यद्यपि चिकित्सा मनोविज्ञान, भौतिकी, कानून, सेना, खेल, प्रबंधन, शिक्षा, राजनीति आदि क्षेत्रों में महिलाएँ पुरुषों से पीछे नहीं हैं। शिक्षा के द्वारा स्त्रियों की सामाजिक चेतना जाग्रत हुई है। समाज की दुर्दशा के प्रति सजग एवं सावधान रहकर सामाजिक सुधार के कार्यक्रम में व्यस्त रहने से राष्ट्र सुदृढ़ होगा। श्रीमती इंदिरा गाँधी, सरोजिनी नायडू, सुचेता कृपलानी, विजयलक्ष्मी पंडित, महादेवी वर्मा, मन्नू भंडारी, सावित्री बाई फुले, कल्पना चावला आदि ऐसी नारियाँ जिन पर भारत को सदैव गर्व रहेगा। प्रौढ़ शिक्षा द्वारा महिलाओं को शिक्षित किया जाए ताकि आधुनिक तकनीक को समझकर नारियाँ आत्मनिर्भर बनकर बैंक संबंधी वित्त प्रबंधन को स्वयं कर सकें। आज आवश्यकता है समाज में बालिका चेतना जाग्रत करने की- क्योंकि शिक्षित माँ ही बच्चों का अच्छी तरह से लालन-पालन व पोषण कर उन्हें शिक्षित करके अच्छा नागरिक बना सकती हैं।

हर राह आसान हो जाती है, अगर साथ अपनों का हो।
मुमकिन भी मुश्किल हो जाती है अगर साथ गैरों का हो।।
नाप लेते है उड़कर कारवां में, पक्षी भी सारा आकाश।
आओ हम भी चले साथ, फैलावे बालिका शिक्षा का प्रकाश।।

नेशनल अवार्डी, प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
नेहरु कॉलोनी, बालोतरा, बाड़मेर, **मो: 9413291890**

विज्ञान शिक्षण

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ

❒ रवि कुमार गुप्ता

वे क्रियाएँ जो पाठ्यक्रम से हटकर छात्रों के सर्वागीण विकास के लिए की जाती है पाठ्य सहगामी क्रियाएँ कहलाती है। मोहियुद्दीन के अनुसार वर्तमान में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ अतिरिक्त न होकर विद्यालय कार्यक्रम का ही अभिन्न हिस्सा है। विज्ञान शिक्षण में विज्ञान मेला, शैक्षणिक भ्रमण, विज्ञान क्लब, विज्ञान संग्रहालय आदि पाठ्य सहगामी क्रियाएँ हैं।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं की आवश्यकता एवं शिक्षा में योगदान : मनोविज्ञान के सिद्धान्त के अनुसार बालक स्व क्रिया द्वारा ही प्रभावी ढंग से सीखता है। अतः क्रिया करके सीखने के सिद्धान्त पर अधिक बल दिया जाता है। इसलिए पाठ्य सहगामी क्रियाएँ बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के शैक्षिक उद्देश्यों की प्रगति में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं। शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कोठारी आयोग ने भी स्कूल कैम्प और खेलकूद पाठ्यचर्या या सहपाठ्यचर्या के कार्यकलाप को माना है। माध्यमिक शिक्षा आयोग ने भी बालकों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास हेतु विद्यालयों में विविध प्रवृत्तियों का आयोजन महत्त्वपूर्ण माना है।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं के उद्देश्य: पाठ्य सहगामी क्रियाओं का मुख्य उद्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास करना है। इसके अतिरिक्त बालकों में अच्छे नागरिकों के गुण विकसित करना, बालकों में आपसी सहयोग की भावना का विकास करना और बालकों में देशभक्ति की भावना का विकास करना इनके इतर उद्देश्य है। विज्ञान शिक्षण में तो पाठ्य सहगामी क्रियाओं का उद्देश्य और भी बढ़ जाता है। इनमें से कुछ का विवरण निम्न प्रकार है –

1. विज्ञान प्रयोगशाला (Science Lab) : विज्ञान के अध्ययन में प्रयोगशाला का महत्त्व सर्वोपरि है। प्रयोगशाला का कार्य नियम व सिद्धान्तों का सत्यापन करने के साथ-साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना भी है। प्रयोगशाला में कक्षा कक्ष में पढ़ाई गई विषय वस्तु को विद्यार्थी प्रयोग व प्रदर्शन द्वारा सीखता है। अतः यह सीखने के लोकप्रिय सिद्धान्त Learning by doing पर आधारित है। एक सामान्य प्रयोगशाला में तैयारी कक्ष, भंडार कक्ष, जीव संग्रहालय व प्रयोग प्रदर्शन कक्ष होते हैं। भारत सरकार के Panel for science education in secondary school (1964) ने UNESCO के सुझावों के अनुसार इसका प्रारूप निम्न प्रकार से माना है–

1. प्रयोग प्रदर्शन कक्ष विद्यालय भवन में नीचे की मंजिल पर कोने में होना चाहिए ताकि अनावश्यक शोरगुल से बचा जा सके।
2. प्रयोग प्रदर्शन कक्ष में दो द्वार होने चाहिए।
3. 40 छात्रों की एक कक्षा के लिए 45'x25' का एक कक्ष पर्याप्त होता है जिसमें एक साथ 20 छात्र प्रयोग कर सकें।
4. प्रयोगशाला में पर्याप्त रोशनदान होने चाहिए और मक्खियों पर नियंत्रण के लिए फर्मिलीन के घोल में चीनी मिलाकर प्याली में भरकर रखा जाता है।
5. एक दोहरी मेज 1.5x2.0 फीट चौड़ाई व ऊँचाई की होनी चाहिए।

इसके अतिरिक्त प्रयोगशाला में विज्ञान अध्यापक की प्रदर्शन मेज, मानचित्र व चित्र प्रदर्शन के उपकरण प्रदर्शन केबिनेट अनुरेखन मेज, एपिडाईस्कोप आदि उपकरण प्रयोगशाला में होने चाहिए।

2. विज्ञान क्लब : विद्यार्थियों की रुचि प्रतिभा एवं योग्यता के विकास के लिए विज्ञान क्लब सबसे उपयुक्त साधन है। विज्ञान क्लब द्वारा विद्यार्थियों की व्यक्तिगत अभिरुचि को पोषण मिलता है साथ ही विद्यार्थी स्कूल की चारदीवारी में सीमित न रहकर स्वतंत्रता की अनुभूति करता है। जिससे प्राप्त उत्साह का उपयोग नई नई बातों को जानने व आविष्कार में लगता है।

संगठन : विज्ञान क्लब के संगठन में निम्न व्यक्ति होते हैं।

1. संरक्षक–विद्यालय का प्रधानाचार्य
2. अध्यक्ष–विज्ञान अध्यापक
   सभी विद्यार्थियों द्वारा निर्वाचित।
3. उपाध्यक्ष
4. सचिव
5. उपसचिव
6. कोषाध्यक्ष
7. पुस्तकालय अध्यक्ष
8. संगठन सचिव
9. भंडार सचिव
10. प्रचार सचिव
11. सामाजिक सचिव
12. कक्षा प्रतिनिधी

कार्य : विज्ञान क्लब के निम्न कार्य हैं–

1. विज्ञान सम्बन्धी विचार विमर्श, वाद विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन करना।
2. विज्ञान पत्रिका, विज्ञान लेख व विज्ञान निबन्ध का आयोजन करवाना।
3. वैज्ञानिकों के भाषण और वैज्ञानिकों को आमंत्रित करना।
4. विद्यालय परिसर और उसके आसपास पेड़-पौधे लगवाना और उनकी देखभाल करना।

क्षेत्रीय भ्रमण : (Field Trip) विद्यार्थियों को किसी स्थान विशेष पर ले जाकर निरीक्षण द्वारा जो शिक्षण करवाया जाता है उसे क्षेत्रीय भ्रमण कहते हैं। क्षेत्रीय भ्रमण का प्रमुख उद्देश्य कक्षा कार्य को प्राकृतिक वातावरण में समझाना है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को कक्षा की दैनिक प्रक्रिया से कुछ समय के लिए मुक्ति मिलती है वह अधिगम में मददगार होती है। क्षेत्रीय भ्रमण से विद्यार्थियों में पूछताछ की प्रवृत्ति का विकास होता है।

शैक्षिक भ्रमण के लिए सर्वप्रथम उद्देश्यों का निर्धारण किया जाना चाहिए। ये उद्देश्य विद्यार्थियों और शिक्षक के सम्मुख स्पष्ट होने चाहिए क्योंकि इन उद्देश्यों के आधार पर ही शिक्षक आगामी योजना तैयार कर सकता है।

क्षेत्रीय भ्रमण योजना को मूर्त रूप देने से पूर्व उच्चाधिकारियों से अनुमति लेना, भ्रमण पर जाने वाले छात्रों की संख्या, भ्रमण का खर्च का निर्धारण करना आवश्यक होता है। भ्रमण के पश्चात इसका मूल्यांकन किया जाना चाहिए एवं भ्रमण के दौरान हुई गलतियों का विश्लेषण करना चाहिए ताकि दोबारा गलती न हो।

विज्ञान शिक्षण में वर्तमान समय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का लोप सा हो गया है जिससे विज्ञान शिक्षण नीरस हो गया है। अतः वर्तमान दौर में आवश्यकता है कि विज्ञान शिक्षण में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का पूर्ण उपयोग हो ताकि विद्यार्थियों में विज्ञान विषय के प्रति नीरसता उत्पन्न न हो और उनमें वैज्ञानिक विचारधारा का पूर्ण विकास हो सके।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
रसिया नगर, भरतपुर (राज.)
मो: 9414453258

शेखावाटी मिशन-100

जैसलमेर यात्रा के अनुभव

❒ जीताराम

हूँ जैसाण, हूँ उभो जुलमी रै सामीं छाती
ताण, हूँ जैसाणा।।

जैसलमेर राजस्थान का सीमावर्ती और रेगिस्तानी इलाका है। जिसकी सीमा पश्चिम में पाकिस्तान से मिलती है। पर्यटकों को जैसलमेर बहुत आकर्षित करने वाला जिला है। देशी ही नहीं बल्कि विदेशी पर्यटक भी प्रति वर्ष अक्टूबर से मार्च तक बड़ी संख्या में यहाँ आते हैं। इसका एक कारण तो यहाँ की समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत, धरोहर, किले, हवेली और यहाँ की खूबसूरत संस्कृति है और दूसरा मुख्य कारण यहाँ का वीरान थार का रेगिस्तान है। जी हाँ, थार रेगिस्तान जैसलमेर ही नहीं बल्कि राजस्थान की शान है। यह रेगिस्तान राजस्थान के उत्तरी-पश्चिमी 12 से 13 जिलों के साथ ही पाकिस्तान में भी फैला हुआ है।

थार रेगिस्तान जिसे हम सभी ने या तो अपनी किताबों में ही पढ़ा है या फिर बॉर्डर, सरफरोश, कच्चे धागे जैसी फिल्मों और टीवी में ही देखा है। यह रेगिस्तान जिसे देखते ही या उसके बारे में सोचते ही एक रोमांच और उत्सुकता मन में आ जाती है।

ऐसे ही मुझे भी इसी थार की उत्सुकता सोने के समान स्वर्णिम धरा की ओर ले गई। थार रेगिस्तान एक वीरान, सूखा, आबादी नगण्य क्षेत्र है। लेकिन आप जैसलमेर जा रहे हैं तो आप इस रेगिस्तान और यहाँ की खूबसूरती का आनन्द ले सकते हैं। शहर से थोड़ा हटकर यहाँ से स्वर्णिम बालू के धोरों की शुरूआत होती है जहाँ डूबते हुए सूरज का मनमोहक दृश्य अपने दिल के साथ ही कैमरे में कैद करने के लिए हजारों की संख्या में प्रति वर्ष देशी और विदेशी सैलानी पहुँचते हैं।

पर्यटन विभाग द्वारा केमल सफारी, सांस्कृतिक संध्या, भोजन, आवास आदि सुविधाएँ इस क्षेत्र में विकसित की गई है। यकीन मानिए यहाँ आकर एक रात रहकर आपको एक अद्भुत शांति और अलग तरह का अनुभव होगा। अगर आप चाँदनी रात के दौरान यहाँ रहते

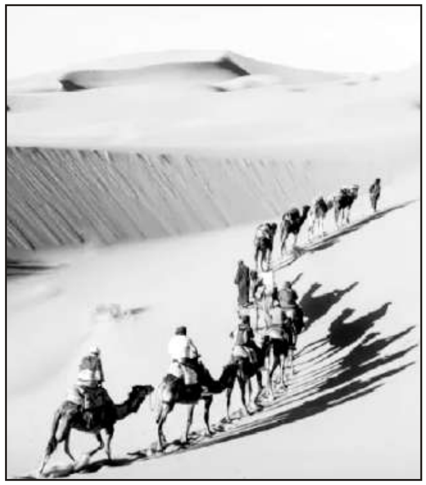

हैं तब तो आपका मजा दुगुना हो जाता है। ऊपर चाँदनी रात, सामने विशाल खुला रेगिस्तान इस अनुभव को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता पर सिर्फ अनुभव किया जा सकता है। सुदूर विस्तृत मरुस्थल एक शान्त स्वभाव में स्थिर सा है, लेकिन यह मरुधरा भी इंसान को सदैव कुछ नई प्रेरणा देती है। प्राकृतिक स्वभाव से हुए परिवर्तन से इस धरा को कई सुविधाओं से वंचित रहना पड़ता है। फिर भी इस धरा के कण-कण में अनेक मोती विद्यमान है।

अनमी आण,
हूँ जैसाण मनड़ो हरख गयो।

सोनारगढ़/त्रिकूटगढ़- राजस्थान की स्वर्णिम विरासत

गढ़ दिल्ली गढ़ आगरो, अधगढ़ बीकानेर।
भलो चिणायो भाटियो, सिरे तो जैसलमेर।।
भड़ किवाड़ उत्तरार्ध रा, भाटी झालण भार।
वचन राखो ब्रिजराज रा, समहर बाँधो सार।।

जैसलमेर यात्रा का बहुत ही महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। 'सोनार का किला'। हमने पहले इसके बारे में किताबों में पढ़ा था। लेकिन सूक्ष्मता से वाकिफ नहीं था। इसलिए इस किले की यात्रा की। वास्तव में इसके इतिहास से ज्यादा मुझे वहाँ की स्थापत्य कला ने सबसे ज्यादा प्रभावित किया। इस्लामी और राजपूत वास्तु कला शैली का नाजुक मिश्रण निश्चित रूप से ध्यान आकर्षित करने वाली इस किले की विशेषता है। राजस्थान की पश्चिमी सीमा से सटे रेगिस्तान की गोद में अवस्थित जैसलमेर अपने वैभवशाली इतिहास के लिए गुमान करता है। यदुवंशी भाटी राजवंश के राव जैसल ने जैसलमेर की स्थापना की तथा भव्य किले का निर्माण करवाया।

जैसलमेर का किला मुस्लिम शासकों अलाउद्दीन खिलजी और मुगल सम्राट हुमायूं जैसे कई तूफानी हमलों से बचा था। पर्यटकों को किले परिसर में कई वास्तुशिल्प भवन मिलेंगे जिसमें महल, मकान और मन्दिर शामिल हैं, जो नरम पीले बलुआ पत्थर से बने हुए है। सूर्यास्त के समय किला सोने के जैसा सुनहरा चमकता है जिससे इसकी सुन्दरता में चार चाँद लग जाते हैं। किले के अन्दर संकीर्ण घूमावदार रास्ते हैं जो कि किले के कई हिस्सों को आपस में गूँथते हैं। जैसलमेर का किला परिसर इतना विशाल है कि शहर की लगभग एक चौथाई जनसंख्या इस किले में निवास करती है।

सबसे प्रसिद्ध संरचना चौहता स्कवायर के सामने स्थित महारावल है। इस स्थान का सबसे बड़ा आकर्षण महाराज के संगमरमर सिंहासन है। जवाहर पैलेस जैसलमेर किले के शाही परिवार का निवास था। यह जगह अपने खूबसूरत निर्माण और अलंकृत डिजायन के लिए प्रसिद्ध है। गणेश पोल, रंग पोल, अखय पोल, और हवा पोल इस किल के प्रवेश द्वार है। जो मूर्तिकला और स्थापत्यकला का अद्वितीय नमूना है।

इस किल के सबसे जाने माने स्थानों में राजमहल, जैन और लक्ष्मीकांत मन्दिर तथा कई अन्य मंदिर द्वार और हवेलियाँ है। विश्व विरासत की सूची में शामिल 'सोनार का किला' जैसलमेर स्थापत्यकला का बेजोड़ नमूना है।

वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. चारलाई कलां, कल्याणपुर, बाड़मेर
(राज.)-344026

शेखावाटी मिशन - 100

संयुक्त निदेशक कार्यालय चूरू की अनुकरणीय पहल

❒ अभिनव सरोवा

किसी भी शिक्षक और उसके बच्चों के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण समय बोर्ड परीक्षा से पहले वाला होता है। इस दौरान वो दोनों सामूहिक रूप से अपनी तैयारी को अंतिम रूप देने में तल्लीन रहते हैं। लेकिन कई बार राष्ट्रीय महत्त्व के कार्यों के कारण इस समय में व्यवधान आने लाजिमी हो जाते हैं। लिहाजा बच्चों को प्रत्यक्ष रूप से इसका खामियाजा भुगतना पड़ता है। शिक्षक चाहते हुए भी कुछ कर नहीं पाता है या जो रणनीति उसने बनाई है उस पर काम नहीं कर पाता है। ऐसा ही एक महत्त्वपूर्ण काम है- चुनाव। सत्र 2019-20 की बोर्ड परीक्षा से ठीक पहले पंचायतीराज चुनाव आने से शिक्षा विभाग के कार्मिक चुनाव आयोग की मशीनरी के उपकरण बन जाते हैं।

ऐसे समय में संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू के संयुक्त शिक्षा निदेशक श्री सुरेंद्र सिंह गौड़ और शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग अधिकारी और अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी श्री ओमप्रकाश फगेड़िया के निर्देशन में कक्षा 10 के उर्दू सहित सात विषयों और कक्षा 12 के भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित, जीव विज्ञान, हिंदी साहित्य, हिंदी अनिवार्य और अंग्रेजी जैसे विषयों के विशेषज्ञ एक टीम के रूप मिलकर काम करते हैं। इसी कार्य का प्रतिफल शेखावाटी मिशन 100 नामक पुस्तिका के रूप में सामने आता है। इन पुस्तिकाओं का विमोचन माननीय शिक्षामंत्री श्री गोविंद सिंह डोटासरा द्वारा 26 दिसंबर 2019 को जयपुर से किया गया। विमोचन के अवसर पर श्री सुरेंद्र सिंह गौड़ और श्री ओमप्रकाश फगेड़िया के साथ विषय-विशेषज्ञ भी उपस्थित रहे। शिक्षामंत्री महोदय ने शेखावाटी मिशन-100 को शिक्षा के क्षेत्र में मील का पत्थर बताया। उनका मानना है कि ऐसे लीक से हटकर किए जाने वाले नवाचारी प्रयास शिक्षकों में ऊर्जा का संचार करते हैं और विद्यालय में शिक्षण का बेहतरीन वातावरण बनाते हैं। इसका सीधा लाभ बच्चों को मिलेगा। आपने अपने संदेश में कहा कि 'हमारा प्रत्येक विद्यार्थी स्पष्ट बोले, सही पढ़े और शुद्ध लिखे।' आपने शिक्षा में मात्रात्मक के साथ-साथ गुणात्मक वृद्धि को बेहद आवश्यक बताया। श्री

हिमांशु गुप्ता, निदेशक माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर ने भी चूरू मंडल के इस कार्य की सराहना करते हुए लिखा है कि निश्चित रूप से इसे तैयार करने वाले शिक्षकों को बच्चों की सफलता से आत्मिक सुख और संतोष मिलेगा और वे भविष्य में और अच्छा काम करने को प्रेरित भी होंगे। हमें समय-समय पर ऐसे नवाचारों की जरूरत है। चूँकि निदेशालय द्वारा बोर्ड परीक्षा परिणाम के आधार पर स्टार रैंकिंग प्रदान की जाती है। मिशन 100 की ये पुस्तिकाएँ विद्यालयों की स्टार रैंकिंग को सुधारने में कारगर साबित होगी।

बोर्ड परीक्षा परिणाम में न केवल मात्रात्मक अपितु गुणात्मक सुधार को लक्ष्य कर बनाई गई इन पुस्तिकाओं को शेखावाटी के तीन जिलों के सभी माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों में निशुल्क पहुँचाया गया। बाकी के जिलों के लिए शाला दर्पण और टीचर जंक्शन नामक मोबाइल एप्लीकेशन पर लिंक जारी किया गया है। मूल रूप से ये प्रोजेक्ट सत्र 2017-18 में चूरू के तत्कालीन उपनिदेशक आदरणीय महेंद्र चौधरी जी ने शुरू किया था। उनका लक्ष्य शेखावाटी क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों का बोर्ड परीक्षा परिणाम

शत-प्रतिशत रखना था। आज इस प्रोजेक्ट को विस्तृत कर राज्य के समस्त जिलों में लागू किया जा रहा है। हालांकि मुद्रित प्रति प्रेषित करना सम्भव न हो सका लेकिन सोशल मीडिया के माध्यम से ये पुस्तिकाएँ हर विद्यालय तक पहुँच गई हैं। सोशल मीडिया से प्राप्त जानकारी के मुताबिक अन्य जिलों के शिक्षक साथी इन लिंक्स से पुस्तिकाओं को डाउनलोड करके कक्षा में प्रश्नोत्तर लिखवा रहे हैं। इस कार्य के लिए समस्त संस्था प्रधानों और शिक्षक साथियों का अभिनंदन जो इस मुहिम की सफलता के लिए कार्य कर रहे हैं। इससे बच्चों का लेखन भी सुधरेगा और प्रिंट देने के अनावश्यक खर्च से भी निजात मिल रही है। ये पुस्तिकाएँ पूर्ण रूप से बोर्ड नीलपत्र (ब्लू प्रिंट) पर आधृत हैं। विषयवस्तु को सरल, सहज और सुबोध बनाने के लिए छोटे-छोटे अंशों में विभाजित किया गया है। पिछले वर्षों के प्रश्न-पत्रों का अवलोकन कर तैयार की गई पुस्तिकाओं में परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर शामिल किए गए हैं।

चूँकि सत्र 2019-20 के लिए ये काम अर्द्धवार्षिक परीक्षा के दरम्यान शुरू किया गया लेकिन आगामी सत्र के लिए संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू ने उक्त प्रोजेक्ट को सत्रारम्भ से ही चालू करने का आग्रह किया है। इससे हमें बेहतरीन परिणाम मिलेंगे। इस कड़ी में शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग अधिकारी और अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी, चूरू श्री ओमप्रकाश फगेड़िया ने राज्यभर के संस्था-प्रधानों, विषयाध्यापकों और भाषा-शिक्षकों के लिए कुछ परिकल्पनाएँ प्रस्तुत की हैं; यथा-

1. मैं संस्थाप्रधान/विषयाध्यापक 'शेखावाटी मिशन-100' पुस्तिकाओं का उपयोग

प्रार्थना सभा, बालसभा, खाली कालांश और होम प्रोजेक्ट के रूप में करूँगा।

2. मैं भाषा शिक्षक (हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू) चालू सत्र में तो इन पुस्तिकाओं का उपयोग करूँगा ही साथ ही आगामी सत्र में शुरू से ही कठिन शब्दों को अर्थ सहित लिखवाऊंगा जिससे बालक भाषागत दक्षता प्राप्त कर सके। इससे बालक का वाचन, लेखन और अभिव्यक्ति प्रभावशाली और आकर्षक बन सकेगी। निरंतर अभ्यास, परख और प्रोत्साहन से विद्यार्थी में उच्चस्तरीय भाषायी दक्षता विकसित करूँगा।

3. चूँकि देखने में आया है कि बड़े प्रश्न याद करने में बच्चों को दिक्कत आती है इसके निवारण हेतु विषयवस्तु को छोटे-छोटे अंशों में विभाजित करके बच्चों को लिखवाना कारगर रहेगा। इससे जब कभी हम अवकाश पर हों या किसी कारणवश कक्षा-कक्ष में अध्यापन कार्य न करवा पाएँ तो कक्षा को दो समूहों में विभक्त कर मॉनिटर के माध्यम से कोई क्विज या प्रश्नोत्तरी आयोजित की जा सकती है। इससे कक्षा का अनुशासन भी बना रहेगा और शिक्षण कार्य भी प्रभावित नहीं होगा। छोटे-छोटे प्रश्नों के जवाब देने से बच्चों याद करने में परेशानी भी कम होगी और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा।

4. हम अपने विद्यार्थियों को देश-समाज से जुड़े समसामयिक मुद्दों पर जानकारी देंगे और उन पर लेखन और भाषण कला को विकसित करने का प्रयास करेंगे। आम आदमी के दैनिक जीवन से जुड़ी बातें; मसलन- सिंगल यूज़ प्लास्टिक, दहेज प्रथा, बालविवाह, बालश्रम, रैगिंग, महिला अधिकार, कानून की सामान्य जानकारी और सड़क सुरक्षा इत्यादि का समुचित ज्ञान करवाऊंगा और इन विषयों पर निबंध लेखन, वाद-विवाद और आशु भाषण आदि हेतु प्रेरित करूँगा। इससे बच्चे के मौलिक विचार स्थायी और परिपक्व होंगे। जिस किसी दिन मैं अवकाश पर रहूँ या अन्य कारणवश कक्षा-अध्यापन न करवा पाऊं उस दिन किसी एक विषय पर बच्चों से लेख या निबंध लिखवाऊंगा और यथासमय जाँच कर आवश्यक मार्गदर्शन भी करूँगा।

5. संस्थाप्रधान होने की स्थिति में मैं अवकाश पर जाने वाले शिक्षकों से प्रार्थना-पत्र के साथ अवकाश के दिन के लिए प्रत्येक कक्षा के लिए विषय से सम्बद्ध सामग्री या टॉपिक देने को प्रेरित करूँगा ताकि खाली कालांश में मॉनिटर के माध्यम से शिक्षण कार्य सुचारू रूप से चल सके।

इन कार्यों में चित्र बनाना, आरेख बनाना, डिबेट करना, अंत्याक्षरी करना, पेपर लेना इत्यादि शामिल किए जा सकते हैं।

6. विज्ञान का शिक्षक होने के नाते मैं पेन के साथ-साथ पैन-ड्राइव भी रखूँगा। इसमें विज्ञान विषय से सम्बद्ध आवश्यक सामग्री, वीडियो, ऑडियो इत्यादि सेव करूँगा और बच्चों को दिखाकर अधिगम को स्थायी बनाने का प्रयास करूँगा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करूँगा।

7. संभव हुआ तो बच्चों को डायरी लेखन के लिए भी प्रेरित करूँगा। इससे बच्चों में नियमितता, अनुशासन, लिखने-बोलने की क्षमता का विकास होगा। इससे बच्चों को किसी विषय पर अपने विचार बनाने और समझ विकसित करने का भी लाभ मिलेगा।

8. संस्था-प्रधान होने के नाते मैं सहशैक्षिक गतिविधियों का सुचारू संचालन करवाऊंगा; यथा- विभिन्न जयंती, राष्ट्रीय उत्सव, स्वच्छ भारत मिशन, भाषण, वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ। इसके साथ ही सामाजिक

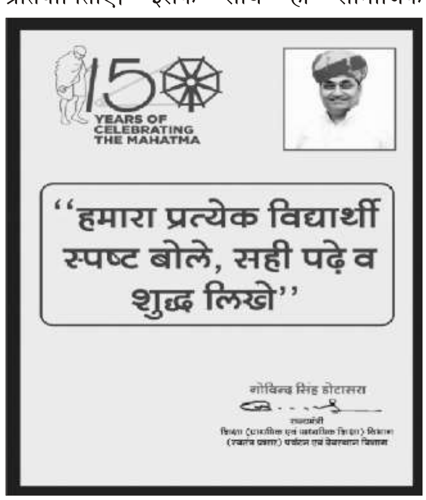

विद्रूपताओं पर नाटक के रूप में मंचन करवाया जाएगा। इससे बच्चों में अभिनय क्षमता का विकास होगा। यदि हमने इन परिकल्पनाओं को संकल्प और चुनौती के रूप में ग्रहण कर व्यवहार में उतार लिया तो वो दिन दूर नहीं जब राजकीय विद्यालय अपनी छाप छोड़ेंगे और हम इसके साक्षी भी होंगे और सारथी भी। मुझे उम्मीद ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास है कि आपका सहयोग निरंतर मिलता रहेगा। इन सब बातों को हम संस्थाप्रधान, विषयाध्यापक और भाषा-शिक्षक के तौर पर एक संकल्प के रूप में अपनाकर भावी पीढ़ी का बेहद संजीदा तरीके से निर्माण कर सकेंगे।

इसके साथ ही दैनिक अखबार दैनिक भास्कर में हर रोज किसी एक विषय पर 15 से 20 प्रश्नोत्तर प्रकाशित किए जा रहे हैं। ये प्रश्नोत्तर प्रार्थना सभा में बच्चों के साथ साझा किए जाते हैं। खाली कालांश में बच्चे स्वयं अखबार में इन प्रश्नों पर चर्चा करते हुए देखे गए हैं। ये प्रश्नोत्तर भी विषय विशेषज्ञों द्वारा निश्शुल्क तैयार किए जा रहे हैं। इन्हें प्रकाशित करने के लिए दैनिक भास्कर का अभिनंदन करते हैं। सीकर के प्रयास संस्थान का भी हार्दिक आभार व्यक्त किया जाना आवश्यक है क्योंकि उनके सहयोग के बिना शेखावाटी मिशन 100 पुस्तिकाओं का प्रकाशन इतने कम समय में होना संभव नहीं था।

चूँकि इस समय बहुत से शिक्षक साथी पंचायत चुनाव कार्य और बोर्ड की प्रायोगिक परीक्षा में व्यस्त हैं। लिहाजा इनकी उपयोगिता और बढ़ गई है। चूरू संयुक्त निदेशक कार्यालय का लक्ष्य बोर्ड परीक्षा में राजकीय विद्यालयों का परीक्षा परिणाम गुणवत्ता के साथ शतप्रतिशत रखने का है।शेखावाटी मिशन 100 की पूरी टीम को उनके इस नेक कार्य के लिए साधुवाद। उनकी सामूहिक टीम भावना और विषय और शिक्षार्थियों के प्रति काम करने का जज्बा देखते ही बनता है। माननीय शिक्षा निदेशक और माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने भी चूरू मण्डल के इस प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। जब सक्षम और उच्च स्तर से प्रोत्साहन और सराहना मिलती है तो काम करने का आनंद द्विगुणित हो जाता है। मुझे खुशी है कि मैं भी इस टीम का एक अदना-सा हिस्सा हूँ। समस्त उच्चाधिकारियों, शिक्षक साथियों का अभिनंदन और बच्चों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

हिंदी शिक्षक, राउमावि-पीथूसर,
झुंझुनूं(राजस्थान) **मो.: 9314911782**

रपट

युवा पीढ़ी स्वामी विवेकानन्द के आदर्शों को अपनाएँ

❒ सवाई सिंह

डूंगरपुर स्काउट गाइड ने उठो, जागो और तब तक मत रूको जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए का संदेश देने वाले युवाओं के प्रेरणास्रोत समाज सुधारक, युग पुरुष स्वामी विवेकानन्द की जयंती राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाई गई। इस अवसर पर स्काउट गाइड ने क्विज प्रतियोगिता में जहाँ अपनी मेधा का परिचय दिया वहीं नाटक के माध्यम से स्वामी विवेकानन्द के कृतित्व पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री अशोक शर्मा उपनिदेशक सामाजिक न्याय विभाग डूँगरपुर, डॉ. ललित कुमार बरण्डा स्काउट मास्टर, दिलीप सिंह चौहान स्काउट सचिव स्थानीय संघ सीमलवाड़ा आदि ने माँ सरस्वती की वंदना के बीच स्वामी विवेकानन्द के चित्र पर पुष्पार्चन कर किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री अशोक शर्मा ने कहा कि किसी भी देश के युवा उसका भविष्य होते हैं। उन्हीं के हाथों में देश की उन्नति की बागडोर होती है। आज भारत युवाओं का देश है, हमारी युवा पीढ़ी को स्वामी विवेकानन्द जी के बताए रास्ते पर चलकर देश के विकास का संकल्प लेना चाहिए। श्री शर्मा ने कहा कि विवेकानन्द जी के विचारों में वह क्राँति और तेज है जो सारे युवाओं को नई चेतना से भर दे। उनके दिलों को भेद दे। उनमें नई ऊर्जा और सकारात्मकता का संचार कर दे। एक किताब, एक कलम, एक बच्चा और एक शिक्षक पूरी दुनिया बदल सकता है। बच्चों आओ स्वामी विवेकानन्द जी के कृतित्व से देश के विकास का संकल्प लें।

राष्ट्रीय युवा दिवस पर डॉ. ललित कुमार बरण्डा ने स्काउट गाइड को संबोधित करते हुए कहा कि स्वामी विवेकानन्द जी ने न केवल हिन्दू धर्म को अपना गौरव लौटाया अपितु विश्व फलक पर भारतीय संस्कृति व सभ्यता का परचम भी लहराया। नरेन्द्र से स्वामी विवेकानन्द बनने का सफर उनके हृदय में उठते सृष्टि व ईश्वर को लेकर सवाल व अपार जिज्ञासाओं का परिणाम था। दिलीप सिंह चौहान स्काउट सचिव स्थानीय संघ सीमलवाड़ा, रेंजर प्रिया खराडी, रोवर मोहम्मद इरफान ने भी स्वामी विवेकानन्द जी के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर स्वामी विवेकानन्द जी पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें रेंजर प्रिय खराडी प्रथम, रोवर मोहम्मद इरफान, बक्सीराम सरपोटा द्वितीय तथा जनमेश को तीसरा स्थान मिला। उच्च स्थान प्राप्त प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन सी.ओ. स्काउट सवाईसिंह ने किया।

सी.ओ. स्काउट,
डूँगरपुर (राज.)

65वीं राष्ट्रीय विद्यालयी तीरंदाजी प्रतियोगिता

17 वर्ष छात्र-छात्रा वर्ग में राजस्थान को 4 गोल्ड व 2 सिल्वर मेडल

❒ सत्यपाल गोदारा

65वीं राष्ट्रीय विद्यालयी तीरंदाजी 17 वर्ष छात्र-छात्रा प्रतियोगिता 24.11.19 से 28.11.19 तक कड़प्पा (आंध्र प्रदेश) में आयोजित हुई। राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए खिलाड़ियों का चयन परीक्षण दिनांक 14.11.19 से 15.11.19 तक हुआ। तत्पश्चात चयनित खिलाड़ियों का पूर्व प्रशिक्षण शिविर दिनांक 16.11.19 से 20.11.19 तक शिविराधिपति जुगल किशोर हर्ष के नेतृत्व में सादुल स्पोर्ट्स स्कूल बीकानेर में आयोजित हुआ।

प्रधानाचार्य व शिविराधिपति जुगल किशोर हर्ष ने बताया कि राजस्थान तीरंदाजी टीम के साथ कड़प्पा (आंध्र प्रदेश) में चीफ डे मिशन सत्यपाल गोदारा के साथ विभागीय पर्यवेक्षक सुनील दत्त रंगा, सामान्य व्यवस्था प्रभारी योगेश व्यास, छात्र प्रशिक्षक महेश चन्द्र, छात्रा प्रशिक्षक प्रशांत पण्डवाला, छात्र मैनेजर आनंद स्वामी व छात्रा मैनेजर अनिता तावंड गए है।

चीफ डे मिशन सत्यपाल गोदारा ने बताया कि 17 वर्ष छात्र वर्ग में राजस्थान को 4 गोल्ड व 2 सिल्वर मेडल मिले। 3 गोल्ड मेडल बीकानेर के हरीश कुमार प्रजापत व चौथा गोल्ड मेडल जयपुर के अर्जुन शर्मा को मिला। हरीश कुमार प्रजापत ने इंडियन राउंड के 30 मीटर में 334 अंक लेकर पहला गोल्ड मेडल जीता। इसी ने इंडियन राउंड के 40 मीटर की व्यक्तिगत स्पर्धा में 335 अंक लेकर दूसरा गोल्ड मेडल जीता। हरीश ने ऑवर ऑल इंडियन राउंड में छत्तीसगढ़ के वीरेन्द्र प्रताप मरावी को हराकर तीसरा गोल्ड मेडल राजस्थान को दिलाया। जयपुर के अर्जुन शर्मा ने ऑवर ऑल रिकर्व राउंड में चंडीगढ़ के दिव्यांश कुमार को हराकर चौथा गोल्ड मेडल जीता। इंडियन राउंड की टीम स्पर्धा में हरीश कुमार प्रजापत (बीकानेर), विशाल ज्याणी (बीकानेर), उदय कुमार (जयपुर) व निखिल सोना (जयपुर) ने सिल्वर मेडल जीता। इसी प्रकार रिकर्व राउंड की टीम स्पर्धा में अर्जुन शर्मा (जयपुर), कपिश सिंह (जयपुर), हर्ष वर्मा (सवाई माधोपुर) व कुनाल बागड़ा (जयपुर) ने सिल्वर मेडल जीता।

चीफ डे मिशन सत्यपाल गोदारा व राज्य दल के साथ गए अन्य सदस्यों ने खिलाड़ियों के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन व 4 गोल्ड मेडल तथा 2 सिल्वर मेडल जीतने पर खिलाड़ियों को शुभकामना देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

राजस्थान तीरंदाजी के बीकानेर पहुँचने पर आवासीय गृह-पति मोहनलाल जीनगर, खेल प्रभारी बोदूराम रेवाड़, हैण्डबॉल कोच आत्माराम भादू, टेबल टेलिस कोच गोपालसिंह, सह खेल प्रभारी शशि शेखर जोशी, सोहनसिंह, राजेश कच्छावा, रतनलाल छलाणी, गिरधारी राम गोदारा, सुभाष चंद्र गोदारा, सुभाष भड़िया, लक्ष्मी चौधरी व बिरमा बिश्नोई ने विजेता खिलाड़ियों का स्वागत किया।

व्याख्याता
सादुल स्पोर्ट्स स्कूल बीकानेर (राज.)
मो: 9413076050

रपट

राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल 'मीरा' एवं 'एकलव्य' पुरस्कार

❒ मोहन गुप्ता मितवा

शिक्षा संकुल के एस.एस.ए. सभागार में राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल द्वारा माह अक्टूबर-नवम्बर 2019 में आयोजित कक्षा 10 एवं कक्षा 12 के परीक्षा परिणामों की घोषणा शिक्षा राज्य मंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा द्वारा कम्प्यूटर क्लिक द्वारा की गई। परीक्षा परिणामों में इस वर्ष कक्षा 12 में पुरुष वर्ग की तुलना में महिला परीक्षार्थियों का परिणाम 4.56 प्रतिशत तथा कक्षा 10 में भी पुरुष वर्ग की तुलना में महिला परीक्षार्थियों का परिणाम 6.91 प्रतिशत अधिक रहा।

इस अवसर पर कक्षा 10 एवं 12 का माह मार्च-मई 2019 की परीक्षा में सर्वोच्च अंक पाने वाले पुरुष वर्ग में क्रमश: श्री त्रिभुवन शर्मा (दिव्यांग) एवं श्री पराक्रम सिंह शेखावत को एकलव्य पुरस्कार तथा महिला वर्ग में मुस्कान प्रदीप अग्रवाल तथा वीनस विश्नोई को मीरा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सम्मान में शिक्षा मंत्री जी की पूर्व घोषणा के अनुरूप दोनों पुरस्कारों में 11,000/- रुपये के स्थान पर पहली बार 21,000/- रुपये की राशि का चैक एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। शिक्षा राज्य मंत्री ने बताया कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर द्वारा आयोजित कक्षा 10 एवं 12 में 75 प्रतिशत व उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाली समस्त बालिकाओं को प्रोत्साहन स्वरूप गार्गी पुरस्कार के रूप में क्रमश: 3,000/- रुपये एवं 5,000/- रुपये तथा प्रमाण पत्र दिए जाते हैं।

इस वर्ष 2019-20 में गार्गी पुरस्कारों के लिए पहली बार आवेदन पत्र शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से ऑनलाईन भरे जाएँगे। शाला दर्पण में NIC के माध्यम से एक विशेष मोड्यूल 'बालिका शिक्षा प्रोत्साहन' बनाया गया है, जिससे उक्त पुरस्कार राशि बालिकाओं के खाते में सीधे स्थानान्तरित की जाएगी एवं प्रमाण-पत्र समारोह में वितरित किए जाएँगे। सत्र 2019-20 में कक्षा 10 की 80996 तथा कक्षा 12 की 64977 कुल 1,45,973 बालिकाओं को लाभान्वित कर रुपये 56.79 करोड़ रुपये की राशि का वितरण किया जाना है। कक्षा 10 की जिन छात्राओं को सत्र 2018-19 में प्रथम किश्त का भुगतान चैक द्वारा किया था, उन्हें इस वर्ष 2019-20 में द्वितीय किश्त का भुगतान पूर्व की भाँति चैक द्वारा ही किया जाएगा।

समापन पर श्री डोटासरा द्वारा वर्तमान सरकार के एक वर्ष में किए गए शैक्षिक विकास की ऐतिहासिक पहल 'साल एक फैसले अनेक' पुस्तिका का वितरण किया गया। पुस्तिका में गत एक वर्ष में विभिन्न पुरस्कारों में बढ़ाई गई राशि का विवरण, छात्रों के शैक्षिक भ्रमण, कक्षा-कक्षों व नवीन भवनों के निर्माण, विद्यालय पुरस्कार योजना का उल्लेख किया गया है। नीति आयोग द्वारा स्कूली शिक्षा रैकिंग में राजस्थान का दूसरा स्थान प्राप्त किए जाने का उल्लेख पुस्तिका में विशेष रूप से किया गया है। पुस्तिका में महात्मा गाँधी की 150वीं जयन्ती वर्ष में महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) की स्थापना राज्य के समस्त 33 जिलों में किए जाने का उल्लेख किया गया है साथ ही आगामी चरण में समस्त 167 ब्लॉक मुख्यालयों पर भी अंग्रेजी माध्यम स्कूल संचालित किए जाने की योजना के बारे में बताया गया है।

समारोह में शिक्षा सचिव श्रीमती मंजू राजपाल, स्टेट ओपन स्कूल के निदेशक श्री राजेश वर्मा, सचिव श्री रामचन्द सिंह बगड़िया तथा अभिभावकगण उपस्थित रहे।

मितवा स्टूडियो, नाहरगढ़ रोड़ जयपुर
मो: 9414265628

पुस्तक समीक्षा

रेत में नहाया है मन

संपादक: डॉ. नीरज दइया, **प्रकाशक :** ज्ञान गीता प्रकाशन, एफ-7, गली नं. 1, पंचशील गार्डन, एक्स, नवीन शाहदरा (दिल्ली-110032
संस्करण : 2019 **पृष्ठ** : 256 **मूल्य** : ₹ 375

आज इस कठिन समय में जब चौतरफा अंग्रेजी का वर्चस्व है या होता जा रहा है, वहाँ अन्य भारतीय भाषाएँ ही नहीं स्वयं हिंदी भी अंग्रेजी के सामने अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए संघर्ष कर रही है। ऐसे में एक जिद की तरह ठेठ राजस्थानी में ही जीने-लिखने वालों के कारण वह समृद्ध है और होती जा रही है। जब हम माटी की गंध और उसके संघर्ष की बात करते हैं, विशेषकर स्वतंत्रता के बाद, तो देखते हैं कि राजस्थानी भाषा के कवियों ने बदलते समय और समाज को उसके यथार्थ के साथ अपनी कविता में अभिव्यक्त किया है। जीवन के चौफेर संघर्ष को उकेरती 'रेत में नहाया है मन' की कविताएँ मानवीय संवाद की कविताएँ हैं। इनमें श्रम की बूँदें हैं तो रेत का उत्सव भी।

आदमी की पीड़ है तो मुखौटे बदलता उसका चेहरा भी। आज के इस मुखौटे की आहट सत्यप्रकाश जोशी ने बहुत पहले सुन ली थी- ला, मेरा मुखौटा दे थोड़ा बाहर जाता हूँ।/ अंग्रेजी के कुछ शब्द डाल दे बटुवे में/ मुझे आदमी का भ्रम बना दे, मैं बाहर जाता हूँ और शारदा कृष्ण की ये पंक्तियाँ- क्या होगा उस दिन/ जब किसी आई-डी प्रूफ के बिना/आदमी आदमी न गिना जाएगा।

जीवन के हर पक्ष का संघर्ष है राजस्थानी कविता में। स्त्री, दलित, रेत, हेत व शोषण। मुकुट मणिराज की कविता उस दलित का आत्मकथ्य है जो आहिस्ता से दृढ़ता के साथ शोषण के खिलाफ खड़ा हो रहा है। और स्त्री? मदन गोपाल लढ़ा के शब्दों में- तुरपाई करती औरत/जीवन के पक्ष में/एक बड़ा सत्याग्रह है।

किसी भी भाषा की कविता के समकक्ष राजस्थानी को रखकर देखा जा सकता है। कन्हैयालाल सेठिया की जो कविताएँ प्रसिद्ध हैं, उसके इतर भी उन्होंने इसमें कई प्रयोग ही नहीं किए बल्कि वे जीवन के यथार्थ को आज के प्रतिप्रेक्ष्य में इस तरह भी देखते हैं- 'यह है/ रामलीला के/ सामान की दुकान/ यहाँ राम और रावण के मुखौटे एक ही दाम।' नारायणसिंह भाटी परंपरा को आधुनिक संदर्भों में देखते हैं, जो भविष्य के लिए जरूरी है- 'मैं रातों को रतजगे इसलिए करता हूँ/कि/ ज्योति की युक्ति कवलित ना हो जाए/ मैं परंपरा का पक्ष इसलिए खोलता हूँ/ कि/ पीढ़ियों के प्राण का वेग सध जाए/ मैं छंदों की बहुलता इसलिए छाँटता हूँ/ कि/ प्रात: की पहचान कर नई कौंपलें निकलें/ मैं आज को प्रत्युत्तर इसलिए देता हूँ/ कि/ आदमी को कल का भरोसा आ जाए।' समय के साथ कविता में भी बदलाव आता है इसकी आहट हमारे पूर्ववर्ती कवियों की कविता में साफ सुनी जा सकती है, नारायणसिंह भाटी की कविता इसका उदाहरण है। वे ही नहीं बल्कि इनके समकालीन सभी कवियों में इसकी अनुगूंजे हैं। यही कारण है कि परवर्ती कवियों में यह अधिक परिपक्व रूप में अभिव्यक्त हुई। आईदानसिंह भाटी के शब्दों में- 'कौन कहता है कि कितने युगों से/ फटी फटी व गहरी धंसी आँखें/ एक बेहतर जीवन के लिए/ हाथ पैर मार रही है।'

'सब कुछ बदल गया/जब बदलता है वक्त/ तब नहीं करता/ किसी मन की परवाह।' नीरज दइया की ये पंक्तियाँ राजस्थानी की इसी बदलती कविता को अभिव्यक्त करती है। क्योंकि बदलाव एकतरफा नहीं चौतरफा होता है। जीवन के हर क्षेत्र में बस उसका रूप बदल जाता है। इसी तरह श्याम सुंदर भारती की एक कविता है- 'दुकानदार/ आज भी उधार तोलता है/ बेचारा कुछ नहीं बोलता है/ उधार ही कितना/ बस फर्क इतना/कि सौदा लेने/पहले बापू जाता था/अब बेटी जाती है।' पारस अरोड़ा की बहुत पहले लिखी यह कविता आज ज्यादा प्रासंगिक है और सटीक है- 'हम जब कभी किसी मंच से/ उठाते हैं हमारी आवाज/ हम अपराधी घोषित हुए हैं।' और अंबिकादत्त- 'जो बोला वह तो नहीं बचा/ जो नहीं बोला/ वह भी नहीं बचा।' असल में किसी भी कविता की कसौटी उसके संदर्भों से उठी आवाज ही होती है जिसकी गूंज सर्वव्यापी ही नहीं भविष्य तक जाती है।

स्त्री अस्मिता की बात आज जिस रूप में की जाती है व स्त्री विमर्श जो एक आंदोलन के रूप में साहित्य में चल रहा है। राजस्थानी में मीरा के समय से यह सशक्त रूप में है। मीरा स्वयं इसकी प्रमाण है। कृष्णा कुमारी राजस्थान में एक ऐसी नारी है जिसको सत्ता के कारण स्वयं पिता द्वारा जहर देकर मार दिया गया। वह स्वयं पिता से जहर का प्याला लेकर मरण स्वीकार करती है ताकि पिता की सत्ता बनी रहे। अर्जुनदेव चारण ने इस पर जो कविता लिखी है उसमें कृष्णा कुमारी अपने पिता से कहती है- 'पुत्रियाँ हैं तो घर है/ घर है तो भरोसा है/ भरोसा है तो प्रीत है/ प्रीत है तो जीवन है/ जीवन है तो साँसें हैं/ साँस है तो आस है/ और इसी आशा के बलबूते/ आप हैं।/ यदि नहीं होतीं हम, तो/ आप सब एक जैसे हो जाते/ फिर किस तरह बचाते यह दुनिया आप।' और निशांत की स्त्री- 'इतनी भाग-दौड़ में भी/ याद रख लेती है वे गीत/ जमाने का इतना जहर/ पी कर भी/ वे उबार लाती हैं/ कंठों में इतना मिठास/ सीधी-सादी औरतें। इतिहास से लेकर आज तक राज घराने से सामान्य स्त्री तक पीड़ा की यह लकीर एक दूसरी के बीच जितनी सामान और कहाँ तक फैली हुई है इससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। राजूराम बिजारणिया और रामस्वरूप किसान स्त्री को घर के संदर्भ में देखते हैं जो गृहस्थ संसार की धुरी है।

'सुबह से शाम तक/ नित फटता जाता है घर/और पीछे-पीछे/सींमती जाती है माँ/ लखदाद है/ माँ की कारीगरी को!' रामस्वरूप किसान घर में सोई स्त्री जो उसकी संगिनी है उसके उस रूप में नहीं देख पाता जिस रूप में उसे देखना चाहिए। क्योंकि खटराग में उसके पास समय नहीं है। इनकी गृहस्थ-जीवन को लेकर बेहतरीन कविता है जिसकी पंक्तियाँ द्रष्टव्य है- 'आ बैठ, बात करें/ एक-दूजे को देखें/ भोगा अवश्य है/ तुम्हारा रोम-रोम/ किंतु देख नहीं पाया/ठुड्डी का तिल/जिसका रंग/मेरी अनदेखी के अंधियारे में जा मिला।'

जीवन की तपती लाय में मानव की सहचर रेत, रूंख से लेकर उस सब पर कविताएँ मिल जाएँगी जो कठोर जीवन को सहज सहने योग्य बना देते हैं- 'रेत का पानी से कितना प्यार होता है/आप शायद नहीं जानते आकाश को ताकती आँखों में/ मेह से कितना नेह होता है/ यह खेजड़े और फोग जानते हैं।' (मंगत बादल) लेकिन एक 'अकथ कथा' प्रमोद कुमार शर्मा की यह भी है कि 'जहाँ ऊगना था रूंख/ वहाँ नहीं थी जमीन/ और जहाँ थी जमीन/वहाँ तक नहीं पहुँचा था बीज।'

इधर की कविता में इतना विस्तार है कि जीवन के हर रूप को उसकी समग्रता में देखने की

कोशिश है आज की राजस्थानी कविता। राजस्थानी के परिप्रेक्ष्य में यह सुखद बात है कि युवा कविता लगातार और श्रेष्ठ लिखी जा रही है। मैं कई ऐसे रचनाकारों को जानता हूँ जो तमाम दबावों के बावजूद राजस्थानी में लिखते ही नहीं, जीते हैं। उनके सामने इसके कारण आजीविका का संकट भी खड़ा होता है पर अपनी भाषा के प्रति जो ललक और प्रेम दिखाई देता है वह एक तरह की आश्वास्थिति है भविष्य के प्रति। मैं जोखिम उठाकार कह सकता हूँ कि हिंदी से भी बेहतरीन राजस्थानी में युवा कविता लिख रहे हैं और यह तभी हो सकता है जब वह भाषा उसके रक्त में घुली हुई हो। डॉ. नीरज दइया के शब्दों में ये वो लोग हैं जो कहते हैं- 'राजस्थानी भाषा मेरे रक्त में मिली हुई है/ यह पंक्ति आपको कविता की पंक्ति नहीं लगती/ तो कोई बात नहीं है.... / कविता से ज्यादा जरूरी होती है भाषा की संभाल/ भाषा की हेमाणी लेकर खड़ा हूँ मैं।'

'रेत में नहाया है मन' संग्रह की तमाम कविताएँ जीवन के पक्ष में खड़ी कविताएँ हैं। वे उस संघर्ष में शामिल है जो आदमी को आदमी बनाए रखने के लिए लड़ा जा रहा है। कविता संघर्ष में भागीदार ही नहीं चेताती भी है- 'चेतो/ चेतो कि तुम्हारी छाती पर कुंडली मार नथुनों के पास/ फन साधे/ बैठा है पीवणा साँप/ पी रहा- भाषा, भरोसा और साँस। (तेजसिंह जोधा)

राजस्थानी कविता की अपनी एक गंध है जो इस संग्रह में देखी जा सकती है। इसके कारण यह हिंदी ही नहीं अन्य भारतीय भाषाओं से भी अलग है। सजग कवि, आलोचक व अनुवादक डॉ. नीरज दइया ने आधुनिक राजस्थानी के सभी महत्त्वपूर्ण कवियों की श्रेष्ठ कविताओं का चयन कर बेहतरीन अनुवाद किए हैं। निश्चित रूप से हिंदी में इसकी गूंज गहरे तक जाएगी।

समीक्षकः **डॉ. सत्यनारायण**
72/5, शक्ति कॉलोनी, रातानाडा,जोधपुर
(राज.) -342011
मो : 9414132301

अन्तर्यात्रा एक योगी की

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट, **प्रकाशक :** गाँधी सेवा सदन, राजसमंद **पृष्ठ** : 336 **मूल्य :** ₹ 375 **संस्करण :** 2019

'अन्तर्यात्रा एक योगी की' एक महापुरुष के जीवन वैशिष्ट्य को उकेरती एक ऐसी कृति है जिसमें निर्माण के बीज हैं, आस्था के दीप हैं, भक्ति का पैगाम है, विद्या का आलय है, सृजन की गाथा है, अन्तर्मुखता के स्वर है, हिमगिरि की उतुंगता का संस्पर्श है। यह एक ऐसे दिव्य पुरुष की दिव्यता की गाथा है, जिसने अपने पुरुषार्थ के प्रदीप्त से अपने भाग्य की रेखा स्वयं लिखी थी। गुरु तुलसी ने जिस पुरुषार्थी व्यक्तित्व की तीक्ष्ण मेधा का अंकन किया। वह एक क्षण में मुनि नथमल से महाप्रज्ञ नहीं बने बल्कि जिनके अन्तः की अनन्त शक्ति का उजास भास्वरित हुआ और उनके पुरुषार्थ की लौ प्रज्वलित हो उठी तब कहीं महाप्रज्ञ का अलंकरण मिला। यह कृति ऐसे अन्तर्मुखता के धनी व्यक्तित्व की महागाथा है जिसे उकेरा है उनके ही समर्पित, निष्ठावान शिष्य डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने। अणुव्रत जिनके रोम-रोम में रचा-बसा है, कुछ पारिवारिक परिवेश से तो कुछ अपनी कर्मठता से। काका देवेन्द्र कर्णावट ने आचार्य तुलसी के अणुव्रत आन्दोलन को विचार से और प्रसार से विस्तार दिया। इसी विस्तार को जिनके बालमन ने दृष्टि दर्शन किया, महसूस किया और एक दिन स्वयं अपने सशक्त कन्धों पर उस मशाल को लेकर आगे बढ़े। चूँकि लम्बे समय से आचार्य तुलसी और महाप्रज्ञ के हर इंगित को आकार देने की कोशिश जिन्होंने की ऐसे डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अपनी अनुभूतियों के वातायन से इस कृति को जनबोधगम्य बना दिया।

यह कृति आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन वैशिष्ट्य की सर्जना करती है। यहाँ दीक्षा गुरु कालू गणी के युग में बालमुनि की चपलता और सरलता का अंकन हुआ है तो शिक्षा गुरु तुलसी की छत्रछाया में खिलने का अवसर भी उन्हें मिला। तुलसी बगिया का वह पौधा है जो एक दिन वट वृक्ष बन गया तो तुलसी पाठशाला का वह शिष्य गुरु की गुरुता का ऐसा प्रतिरूप बन गया कि गुरु ने अपना आचार्य पद उसे सौंप निश्चिन्त हो गए। ऐसी निश्चिन्तता तभी होती है जब व्यक्तित्व की विराटता पर विश्वास हो जाता है ऐसे ही विश्वास के योग्य अखण्ड व्यक्ति का नाम है आचार्य महाप्रज्ञ। उस महापुरुष की महागाथा को कालू युग, तुलसी युग एवं महाप्रज्ञ युग में अभिव्यक्ति देकर उस विराट पुरुष की विराटता का दिग्दर्शन युग को कराने की सफल कोशिश लेखक द्वारा हुई है। इस व्यक्तित्व की महनीयता को उकेरने में लेखक की कल्पनाशीलता का कहीं भी दर्शन नहीं होता है, अगर दर्शन होता है, तो लेखक की यथार्थता का, अनुभविता का और निकटस्थता का। वर्षों वर्ष जिनके समीप में रहकर उनके इंगित को आकार देने की कोशिश की भला उन्हें उकेरने में कल्पनाशीलता की कहाँ जरूरत है?

महाप्रज्ञ के निर्माण से लेकर चिरविश्रान्ति तक की गाथा की लेखक ने 136 आलेखों में इस प्रकार लिपिबद्ध किया है कि प्रत्येक पाठक को पढ़ने की शुरूआत मात्र करनी होती है। आगे की उत्सुकता में वह आद्योपान्त कृति का कब पारायण कर लेता है उसे पता तक नहीं चलता है। यह लेखक के लेखनी का चमत्कार है, जिसने महाप्रज्ञ के जीवन को उकेरने में इतनी सहजता, सरलता और सरसता बरती है कि हर वय का पाठक इस कृति को अपने लिए समझता हुआ प्रतीत होता है। यह लेखक की सफलता भी है और अपने गुरु की अभ्यर्थना का एक नया तरीका भी है। महाप्रज्ञ की 2001 से 2008 तक सप्तवर्षीय अहिंसा यात्रा का चित्रण इस प्रकार हुआ मानों लेखक स्वयं इस यात्रा का सहयात्री रहा हो (रहे भी है)। कृति का परिशिष्ट बहुत महत्त्वपूर्ण है। यहाँ महाप्रज्ञ के अहिंसा दर्शन का अनूठा चित्रण है। इसके अन्तर्गत महाप्रज्ञ के अहिंसा चिन्तन को गहराई देता हुआ अहिंसा के विकास सूत्र, अहिंसा का अर्थशास्त्र, सापेक्ष अर्थशास्त्र का स्वरूप एवं महाप्रज्ञ द्वारा अनुसंधानित अहिंसा प्रशिक्षण की अवधि को यथोचित स्थान दिया गया है। महाप्रज्ञ के आशुकवित्व के पठन मात्र से ही आशुकविता के प्रति पाठक की रुचि स्वतः जाग्रत हो उठती है। महाप्रज्ञ के साहित्य की सूची प्रस्तुत कर लेखक ने महाप्रज्ञ के जीवन-दर्शन पर अनुसंधान करने वालों की स्फुरणा को गति दी है और अन्त में लगभग 22 पृष्ठों में देश के तमाम पत्र-पत्रिकाओं में स्थान प्राप्त महाप्रज्ञ के आलेखों को प्रस्तुत कर अनुसंधित्सुओं के लिए एक स्थान पर संदर्भ सूची का प्रस्तुतीकरण भी उपयोगी है।

कुल मिलाकर 336 पृष्ठों में महाप्रज्ञ की जन्म शताब्दी पर उनके जीवन वैशिष्ट्य को प्रस्तुत कर लेखक ने न केवल सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की है अपितु आम जनमानस को उस विराट व्यक्तित्व को पढ़ने, समझने, गुनने से कुछ बनने की प्रेरणा भी मिलती है। सहज, सरल, सरस और बोधगम्य कृति सभी स्तर के पाठकों को संबोध प्रदान करने वाली है। आवरण पृष्ठ की भावमुद्रा मानो वर्तमान को निकट से देखने की प्रेरणा देती है। निस्संदेह यह कृति पठनीय, मननीय एवं संग्रहणीय है।

समीक्षक : **प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'**
निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, नागौर (राज.)

बाल शिविरा

अपनी राजकीय शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

बेटी की पुकार

सुन लो तुम बेटी की पुकार।
करो तुम इसका सत्कार।।

बेटी है जीवन का आधार।
कर लो तुम इसका सत्कार।।

अपमान करो ना बेटी का।
दुःख दर्द हमारे लेती का।।

सुन लो तुम बेटी कि पुकार।
करो तुम इसका सत्कार।।

बेटी तो है गुलाब का फूल।
काटाँ इसे मत समझो तुम।।

जो काँटा इसे समझता है।
भूल भटक वह जाता है।

प्रार्थना है तुमसे बारम्बार।।
सुन लो तुम बेटी की पुकार।

करो तुम इसका सत्कार।।

बेटी प्यार फैलाती ऐसे।
फूल सुंगध फैलाते जैसे।।

नही शत्रुता में है इतना दम।
बेटी बढ़ाती नित नए कदम।।

सुन लो तुम बेटी की पुकार।
करो तुम इसका सत्कार।।

हरमन कौर
कक्षा-12th
रा.उ.मा.वि., मानकसर
जिला-हनुमानगढ़ (राज.)

अध्यापक

अध्यापक भगवान का रूप होते हैं। अध्यापिकाएँ माँ का स्वरूप होती हैं।

अध्यापकों को कभी हमसे रूठने न देना, क्योंकि अगर वो रूठे तो सारा जग छूटे।।

इसलिए सभी कहते हैं कि अध्यापक भगवान का रूप होते हैं। अध्यापिकाऐं माँ का स्वरूप होती हैं।

माँ ने हमें जन्म दिया, जग दिखाने के लिए, अध्यापिकाओं ने हमें शिक्षा दी ज्ञान पाने के लिए इसलिए सबके मुहँ से एक ही बात निकलती है कि अध्यापक भगवान का रूप होते हैं। अध्यापिकाएँ माँ का स्वरूप होती हैं।

हमें अपने ज्ञानी होने पर ज्यादा घमण्ड नहीं करना चाहिए अगर हमें ज्ञान देने वाले अध्यापक न होते तो हम अज्ञानी रह जाते।

इसलिए सबके होठों पर एक ही बात होती है कि अध्यापक भगवान का रूप होते हैं। अध्यापिकाएँ माँ का स्वरूप होती हैं।

हरमन कौर
कक्षा-12th, रा.उ.मा.वि., मानकसर,
जिला-हनुमानगढ़ (राज.)

मेरा मान तिरंगा

सारा देश करे तुझ पर मान ओ तिरंगे
तू ही लाज है हमारी तू ही शान ओ तिरंगे
सारा मुल्क .....
आजादी की लड़ाई में न हिन्दू न
मुसलमान था।
हर हिन्दुस्तानी बस तेरे लिए कुर्बान था
दुश्मनों की गोलियों से चोले उनके रंगे
इसीलिए तू हमारी है पहचान ओ तिरंगे
सारा देश करे .....

फरजाना,
कक्षा-12th,
रा.उ.मा.वि. मानकसर, हनुमानगढ़ (राज.)

गुरु

गुरु पाऊँ हर ऊँचाई को
मैं इतना बनूँ महान गुरु पाऊँ हर .....
हृदय में प्रेम लिए तेरा करूँ
सदा सम्मान तुम्हारा गुरु
तेरी मेहनत से ही फैलेगा
दुनिया में मेरा नाम गुरु
मैं जो कुछ हूँ तेरी कृपा है
करूँ शत-शत तुम्हें प्रणाम गुरु
मैं कोयला था तूने परख कर हीरा बनाया
इस बुझे हुए दीपक को
तेरी लौ ने जलाया
माँ के बिना जहान अधूरा है
चाँद तारों के बिना आसमान अधूरा है
सीख लो गुरु का सम्मान करना मित्रों
क्योंकि गुरु के बिना ज्ञान अधूरा है

फरजाना,
कक्षा-12th,
रा.उ.मा.वि. मानकसर, हनुमानगढ़ (राज.)

माँ

नो मास गर्भ,
प्रसव पीड़ा,
जिसने सही,
है वह माँ, वह है माँ।
गीले में सो,
सूखे में सुलाई,
अमृतमय दूध,
धारा पिलाई,
है वह माँ, वह है माँ।
सह कर,
सर्दी गर्मी,
छुपा गोद,
कोमल त्वचा बचाई,
है वह माँ, वह है माँ।
दादा दादी,
नाना नानी,
रिश्तों की,
विज्ञान सिखाई,
है वह माँ, वह है माँ।
वत्स पर आए,
ना कोई बला,
नजर से बचाने
काजल टिकी लगाई,
है वह माँ, वह है माँ।
सपनों भरा,
संसार बना,
शुरू करवा दी,
तेरी पढ़ाई लिखाई,
है वह माँ, वह है माँ।
'राम' कहे यह,
कविता पढ़कर,
जिसकी कमी से,
आँखे भर आई,
है वह माँ, वह है माँ।

राम चन्द्र,
राजकीय प्राथमिक विद्यालय,
11 आरजेडी, रोजड़ी (घड़साना), श्रीगंगानगर

अहिंसा और युवा

बहुत हो गया जुल्म, अब विरोध करो।
बेबस-लाचार राष्ट्र के नाम पर,
यूँ न मरो।।
बहुत हुई हिंसा, करके प्रतिकार
अब अहिंसा की लाठी उठानी है।
राष्ट्र-रक्षार्थ जो कसम खाई,
उसे अंजाम तक पहुँचानी है।।
रुको मत,ठहरो मत,
अनवरत पाँव बढ़ाओ
मंजिल दूर नहीं अब हर
जगह तिरंगा फहराओ।।
वीर-वीरांगनाओं की भूमि
पर अहिंसा का दीप जलाया है।
जो कर ना सका कोई वह
बापू तूने करके दिखलाया है।।
थर-थर काँप उठा सिंहासन
आयी जब अहिंसा की आँधी है।
रक्त की हर बून्द राष्ट्रसमर्पित
नाम उसी का महात्मा गाँधी है।।
उठो नौजवानों अब आने वाला
वक्त भी तुम्हारा है।
मौन रहकर विरोध करो
यह संकल्प ही हमारा है।।
मैं तुम्हें अहिंसा का पाठ पढ़ाने आया हूँ।
मैं हूँ 'देश का युवा' देश बचाने आया हूँ।।

नवीन कुमार जोशी,
कक्षा-12, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
मिंडाना, चित्तौड़गढ़ (राज.)

सृष्टि

किसकी यह कृति, नाम है सृष्टि।

ऊँचे पर्वत, बहता पानी,
थार सुहाना, कहीं तल मैदानी।

सूरज का घेरा, कभी रात काली,
मुस्कुराते तारे, साँझ की लाली।
सोना-चाँदी, हीरे-मोती,
मिलती यहाँ, धातु खादानी।

कहीं बंजर धरा, कहीं फसलें लहराती,
कहीं बूँद की तरस, कहीं अतिवृष्टि।
किसकी यह कृति, नाम है सृष्टि।

जीव-जंतु, नर-नारी,
कहीं जन शुन्य, कहीं भीड़ भारी।
पेड़-पौधे, सजीव-निर्जीव,
देखो कितनी, मिलती प्रजाति।

जो भी भाया, पटल पर दिखाया,
इसके पीछे है, कोई परम शक्ति।
किसकी यह कृति, नाम है सृष्टि।

राम चन्द्र,
राजकीय प्राथमिक विद्यालय,
11 आरजेडी, रोजड़ी (घड़साना), श्रीगंगानगर

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है। -वरिष्ठ संपादक

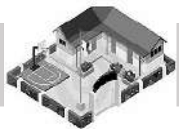

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

खेरपुरा में संविधान दिवस मनाया

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खेरपुरा में संविधान दिवस मनाया गया। छात्रों को संविधान विषयक जानकारी दी गई। रोवर स्काउट लीडर जितेंद्र शर्मा ने बताया कि भारतीय संविधान दिवस के मौके पर छात्र छात्राओं को संविधान का सम्मान करने की शपथ दिलाई गई। व्याख्याता दिनेश कुमार भट्ट द्वारा संविधान विषय पर छात्रों के साथ चर्चा की गई। छात्रों की संविधान के प्रति उत्सुकता को विभिन्न उदाहरण देकर समझाया गया। वरिष्ठ अध्यापक श्री कृष्णकांत शर्मा द्वारा छात्रों को संविधान की मूल अर्थ को समझाते हुए मौलिक अधिकार मौलिक कर्त्तव्य आदि पर विचार व्यक्त किए। इसी विद्यालय में सामुदायिक गतिशीलता प्रशिक्षण के अंतर्गत दिनांक 12 व 13.12.2019 तक दो दिवसीय एसएमसी एसडीएमसी. सदस्यों का प्रशिक्षण शिविर स्थानीय विद्यालय में आयोजित किया गया। इसमें अधीनस्थ विद्यालयों सहित खेरपुरा गाँव के सदस्यों ने 2 दिन का प्रशिक्षण संस्थाप्रधान के नेतृत्व में केआरपी श्री दिनेश कुमार भट्ट एवं श्री श्याम रेगर ने प्रशिक्षण प्रदान किया। प्रशिक्षण के दौरान व्याख्याता सर्वश्री हरीश खत्री एवं कृष्णकांत शर्मा, उमराव लाल बाकोलिया, लक्ष्मीकांत भट्ट आदि ने प्रशिक्षण में सहयोग किया।

जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर छात्रा का सम्मान

बाड़मेर–एकता ट्रस्ट एवं अजाक संघ राजस्थान द्वारा राज्य स्तरीय समारोह में बालोतरा की छात्रा रितिका पुत्री महेंद्र कुमार को सम्मानित किए जाने के उपलक्ष्य में राजकीय कन्या महाविद्यालय बालोतरा में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य अर्जुन पूनिया ने कहा कि मरू क्षेत्र में प्रतिभाओं की कमी नहीं है। केवल मार्गदर्शन कर प्रतिभाओं को आगे लाने की आवश्यकता है। छात्रा रितिका ने बारहवीं कक्षा में वाणिज्य वर्ग में बाड़मेर जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा राज्य स्तर पर पुरस्कार प्राप्त कर जिले का नाम रोशन किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर के जिलाध्यक्ष श्री सालगराम परिहार ने छात्रा को प्रशस्ति पत्र, साहित्य एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। सहायक आचार्य हेमलता ने माला पहनाकर छात्रा का उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर डॉ. गुलाब दास वैष्णव सहित महाविद्यालय का स्टाफ एवं छात्राएँ उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर संजय माथुर ने किया।

जोधपुरः साइकिल एवं भामाशाहों द्वारा 236 बच्चों को स्वेटर वितरण

जोधपुर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मलार (फलोदी) में उपखंड अधिकारी श्रीमान यशपाल आहूजा, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी मदनलाल सुथार की उपस्थिति में भामाशाह श्री मधुकर मौखा अध्यक्ष महावीर इंटरनेशनल फलोदी, भामाशाह श्री आकाश जैन व्यवसायी, भामाशाह श्री किशनाराम पंवार अध्यक्ष कर्मचारी कल्याण कोष इगानप फलोदी, श्री किशनाराम मेघवाल प्रधानाध्यापक रामावि सगराली नाड़ी लोहावट, भामाशाह श्री जगदीश जयपाल वरिष्ठ अध्यापक मलार द्वारा विद्यालय के 236 बच्चों एवं आँगनवाड़ी के 34 बच्चों को निशुल्क स्वेटर वितरण किया गया इस अवसर पर उपखंड अधिकारी श्रीमान यशपाल आहूजा ने बताया ऐसे आयोजन निरंतर होते रहने चाहिए। दान करने से धन हमेशा बढ़ता है और ऐसे कार्यक्रम से दूसरों को भी प्रेरणा मिलती है तथा लोग विद्यालय से जुड़ते हैं। इस अवसर पर मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्री मदनलाल सुथार ने बताया कि इन भामाशाह द्वारा बहुत पुण्य का कार्य किया गया। सर्दी के इस मौसम में इन बच्चों को स्वेटर मिलने से बहुत लाभ होगा। भामाशाह श्री मधुकर मोखा ने बताया कि प्लास्टिक के खतरे बहुत हैं और इस प्लास्टिक का कैसे निपटान किया जाए, इसे वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया। उन्होंने बच्चों के कॅरियर के संबंध में मार्गदर्शन भी किया और बताया कि आप अपने सपने हमेशा बड़े देखें और सपनों को पूरा करने के

लिए प्रयास और निरंतरता बनाए रखें। भामाशाह श्री किशनाराम पंवार द्वारा बताया गया कि विद्यालय के बच्चे देश का भविष्य है और आगे चलकर इन्हें ही देश संभालना है इसलिए इनका नैतिक विकास भी बहुत आवश्यक है। भामाशाह श्री आकाश जी जैन द्वारा स्वेटर वितरण के साथ ही सभी बच्चों को बिस्किट वितरण किए गए। आज ही उपखंड अधिकारी श्रीमान यशपाल आहूजा की उपस्थिति में कक्षा नवम की छात्राओं को राज्य सरकार द्वारा प्रदत्त निशुल्क साइकिल का वितरण किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन श्री जगदीश जयपाल वरिष्ठ अध्यापक ने किया। प्रधानाचार्य श्री मोखराम विश्नोई द्वारा सभी अधिकारियों, भामाशाह एवं आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर सर्वश्री सोनाराम विश्नोई, मोहन लाल जीनगर, प्रमित्र सिंह, शिवपाल, नारायण सिंह, श्रीमती हिमानी पंवार, सत्यनारायण सिंह राजपुरोहित, भंवरलाल मेघवाल, ओंकार लाल पालीवाल, दमयंती जोशी, कपिल बोहरा, कासम खान, शोभा बोहरा, राणाराम, श्यामसुंदर तंवर, प्रियांशु जयपाल सहित अनेक अतिथि उपस्थित रहे।

पाली: शिक्षिका ने भामाशाह के रूप में मिशाल पेश की

पाली– राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय लाम्बिया, जैतारण, पाली में कार्यरत शिक्षिका सुश्री गणपत चौधरी द्वारा विद्यालय में कक्षा 1 से 10 तक के विद्यार्थियों को 271 ऊनी स्वेटर वितरित की गई जिनकी लागत लगभगर 51,000 रुपए है साथ ही विद्यालय में एक 14,000 रुपए की लागत का प्रिन्टर भी भेंट कर मिशाल पेश की। संस्थाप्रधान एवं ग्रामवासियों ने सुश्री गणपत चौधरी का इस सहयोग पर सम्मान करते हुए आभार व्यक्त किया।

बाराँ : कॅरियर डे का आयोजन

बाराँ– बाराँ जिले के राजकीय माध्यमिक विद्यालय ठूँसरा में स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर कैरियर डे का आयोजन संस्थाप्रधान श्री रघुवीर प्रसाद शर्मा की अध्यक्षता में माँ शारदा व स्वामी विवेकानंद के चित्र पर तिलक लगाकर व मालार्पण द्वारा किया गया। छात्रों को विभिन्न कॅरियर अवसरों की जानकारी देने के लिए कॅरियर कॉर्नर भी लगाया गया जिसमें कला, विज्ञान, कॉमर्स, खेल, संगीत, स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों में जाने के अवसर की जानकारी वार्ता विशेषज्ञों ने दी। इन वार्ताकारों में वरिष्ठ अध्यापक श्री जयप्रकाश शर्मा, श्री नन्दलाल नागर, श्रीमती सावित्री मीणा, श्रीमती प्रेमलता मीना, श्री राजेश मीणा, श्री बृजराज सिंह, श्री केसरीलाल मेघवाल, श्री रामकल्याण बैरवा प्रमुख थे। कॅरियर डे प्रभारी श्रीमती प्रेमलता मीना के निर्देशन में लगाए गए कॅरियर कॉर्नर से जानकारी प्राप्त कर छात्रों को बहुत खुशी हुई। इस अवसर पर निबंध प्रतियोगिता के साथ साथ प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी जिसमे छात्रों को 5 दलों पृथ्वी, जल, वायु, आकाश व अग्नि में विभाजित किया गया। इस प्रतियोगिता में जल दल की छात्राओं कामना व फिजा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया जिन्हें पुस्तक पुरस्कार के रूप में दी गई। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता अंग्रेजी के वरिष्ठ अध्यापक श्री तरुण मित्तल ने करवाई। अंत में छात्र संसद की प्रधानमंत्री भगवती शर्मा ने सभी का धन्यवाद किया।

सिरोही: वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह-2020 सम्पन्न

सिरोही–दत्ताणी गाँव में स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय का वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह-2020 का आयोजन विद्यालय परिसर में किया गया। इस समारोह मे मुख्य अतिथि श्री वीराराम मेघवाल, विशिष्ट अतिथि श्री अमर सिंह देवड़ा, एपीसी श्री कांतीलाल खत्री एवं अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्री पूनम सिंह सोलंकी और अध्यक्षता प्रधानाचार्य श्रीमती अलका सिसोदिया द्वारा की गई। समारोह का शुभारम्भ अतिथिगणों द्वारा माँ शारदे की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन कर किया गया। तत्पश्चात अतिथिगणों का शाला परिवार द्वारा माल्यार्पण, साफा पहनाकर व स्मृति चिह्न प्रदान कर स्वागत व अभिनन्दन किया गया। राउमावि. व अधीनस्थ विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा दीपमंत्र, सरस्वती वंदना, स्वागत गीत प्रस्तुत किए गए। बालिकाओं ने आयो रे शुभ दिन, ओ शहीदों, चंदन है इस देश की माटी, देश की शान है तिरंगा आदि देश भक्ति गीतों का गायन प्रस्तुत किए। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में सतरंगी राजस्थान, घूमर, भांगड़ा पर नृत्य प्रस्तुतियों से कार्यक्रम को चरम पर पहुँचाया जिनके माध्यम से भारतीय संविधान एवं भारतीय संस्कृति की

जानकारी दी गई। राउमावि. व अधीनस्थ विद्यालयों में बोर्ड परीक्षाओं, खेल क्षेत्र में श्रेष्ठ रहे छात्र-छात्राओं को तथा वार्षिकोत्सव के प्रतिभागियों को अतिथिगणों द्वारा स्मृति चिह्न देकर पुरस्कृत कर उत्साहवर्धन किया गया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर अपने उद्बोधन में प्रधानाचार्या श्रीमती अलका सिसोदिया ने सभी अतिथियों व अभिभावकों तथा एसडीएसी. सदस्यों का आभार जताते हुए शाला की संक्षिप्त प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। कार्यक्रम में दत्ताणी नोडल क्षेत्र के समस्त विद्यालयों के शिक्षक एवं विद्यार्थी ने उपस्थित रहे एवं कार्यक्रम में भाग लिया। मंच का संचालन श्री कल्याणसिंह, श्री पुरुषोत्तम कुमार एवं श्री रोहित आदिवाल ने किया।

सूरतगढ़ : वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार समारोह-2020 का आयोजन

श्रीगंगानगर- राजकीय माध्यमिक विद्यालय, पदमपुरा, सूरतगढ़ में आयोजित वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार समारोह-2020 का आयोजन 3 जनवरी 2020 को किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती रीतु सेठी पीईईओ. एवं प्रधानाचार्य राउमावि. संगीता (सूरतगढ़) ने की व मुख्य अतिथि श्री अमृतपाल सिंह एसीबीइओ-द्वितीय सूरतगढ़ रहे। पंचायत क्षेत्र पदमपुरा के समस्त राजकीय विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने मय स्टाफ उपस्थित रह कर सहभागिता निभाते हुए इस वार्षिकोत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में गायन एवं नृत्य के साथ शानदार प्रस्तुतियाँ दी। कार्यक्रम में परीक्षाओं में रहे श्रेष्ठ अंक अर्जित करने वाले विद्यार्थियों एवं भामाशाहों का सम्मान अतिथिगणों द्वारा किया गया। आयोजनकर्त्ता संस्थाप्रधान श्री सहेल सिंह ने कार्यक्रम के समापन अवसर पर सभी का आभार व्यक्त किया।

बून्दी : कैथूदा में 106 जर्सियों का वितरण

बूंदी- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कैथूदा, तालेड़ा, बूंदी में भामाशाह चम्बल होस्टल एसोसिएशन कुन्हाड़ी द्वारा 106 विद्यार्थियों को जर्सियों का वितरण किया गया। अग्रवाल समाज ऐसोसिएशन नदीपार क्षेत्र कुन्हाड़ी के कोषाध्यक्ष श्री बृजेन्द्र कुमार गर्ग द्वारा राजकीय प्राथमिक विद्यालय बंजारा बस्ती केथूदा के बालकों को 40 जोड़ी जूते, 80 जोड़ी मोजें तथा भामाशाह श्री अजय नाहर द्वारा दो पानी के केम्पर भेंट किए गए। इस अवसर पर संस्था के संरक्षक श्री अनूप कुमार सिंघल, अध्यक्ष श्री शुभम अग्रवाल, महामंत्री श्री सुनील विजय, कोषाध्यक्ष श्री सतवीर सिंह, विकास जैन एवं एसएमसी अध्यक्ष श्री श्याम मालव, सदस्य श्री गिरिराज मालव एवं पं.स. सदस्य श्री सालगराम यादव तथा अन्य ग्रामवासी मौजूद रहे। संस्थाप्रधान श्री भागीरथ बसवाल ने सभी भामाशाहों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री महावीर प्रसाद काबरा, प्र.अ. बंजारा बस्ती कैथूदा ने किया। अन्य संस्थाप्रधान सर्वश्री चन्द्रशेखर शर्मा जाल की झोंपड़ियाँ, सर्वश्री दिनेश शर्मा, निर्मला नामा, राधा, गायत्री मालव, शंकर, लक्ष्मण बंजारा आदि उपस्थित रहे।

डूँगरपुर : 111 स्काउट गाइड राज्यपाल अर्वाड से सम्मानित

डूंगरपुर राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड राज्य मुख्यालय के तत्वावधान में गत 9 से 13 जनवरी तक जयपुर में जगतपुरा स्थित राज्य प्रशिक्षण केन्द्र में आयोजित राज्य पुरस्कार अवार्ड वितरण समारोह में डूँगरपुर से 111 स्काउट, गाइड, रोवर व रेंजर को राज्यपाल अवार्ड से सम्मानित किया गया। सी.ओ.स्काउट श्री सवाईसिंह ने बताया कि मुख्य पुरस्कार वितरण समारोह में ललित कुमार बरण्डा रोवर, रेंजर राखी गडाह जनजाति ओपन रोवर क्रू डूंगरपुर एवं भव्य पूंजोत, रितिक फलोज, कैलाश रोत, सुनिल खराडी राउमावि. बरबोदनिया को राज्यपाल महोदय ने राज्य पुरस्कार अवार्ड प्रदान किया। इस अवसर पर फ्लोवर किडस सागवाडा ईको क्लब के स्काउट हिमांक पाटीदार, धवल शर्मा, जलज पाटीदार, ध्रुव पाटीदार ने स्काउट मास्टर श्री शैलेश जोशी के दिशा निर्देशन में डूँगरपुर जिले की ओर से वर्षपर्यन्त ईको क्लब द्वारा किए गए कार्यो की प्रदर्शनी लगाई गई। जिसमें पर्यावरण पवन चक्की मॉडल लगाया गया। जिसका राज्यपाल महोदय द्वारा अवलोकन किया गया तथा स्काउट द्वारा लगाई ईको क्लब पर्यावरण प्रदर्शनी की सराहना की गई। 15 जनवरी 2020 को ही शहीद पार्क में आर्मी दिवस को शहीद प्रतिमाओं पर माल्यार्पण कर एवं मौन रखकर मनाया गया। इस अवसर पर स्काउट मास्टर डॉ. ललित कुमार बरण्डा एवं राजस्थान पुलिस कांस्टेबल श्री पारसमल व श्री श्रवण कुमार ने युवाओं को आर्मी भर्ती की जानकारी प्रदान की।

पोकरण : चाईल्ड हैल्पग्रुप द्वारा स्वेटर वितरण

जैसलमेर-राजकीय उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय व्यास कॉलोनी, पोकरण में दिनांक 7 जनवरी 2020 को चाईल्ड हैल्पग्रुप द्वारा स्वेटर वितरण का कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें सभी विद्यालय के बालक-के बालिकाओं को ऊनी स्वेटर वितरित किए गए। हेल्प ग्रुप के सम्माननीय सदस्य सर्वश्री जगदीश शर्मा, विजयसिंह सोलंकी, कमलेश चाण्डक, गजानन गुचिया, महेश गिरी, विक्रम गिरी, विक्रमसिंह भाटी, वरदान शर्मा ने स्वेटर वितरण किए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री नारायण सिंह राठौड़, बाडमेर जैसलमेर विभाग सेवा प्रमुख श्री चिरंजीलाल सोनी से.नि. बैंक प्रबन्धक श्री गणपत लाल गर्ग,

श्री जुगलकिशोर गौड़, श्री चनणाराम गर्ग, श्री कांता प्रसाद गाँधी, श्री अमृतलाल बंधु व अनिल शर्मा उपस्थित थे। कार्यक्रम का सफल संचालन अध्यापक श्री जुगलकिशोर जीनगर द्वारा किया गया। अंत में संस्थाप्रधान श्री गुमानाराम सेन एवं अध्यापिका श्रीमती सुशीला विश्नोई द्वारा भामाशाह संस्था का आभार व्यक्त किया गया।

झालावाड़ : हरिगढ़ विद्यालय में मकर सक्रांति उत्सव मनाया

झालावाड़–राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय हरिगढ़ में मकर संक्रांति उत्सव मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी मोहन लाल राठौर एवं पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी प्रमोद कनेरिया के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर झालावाड़ केन्द्रीय सहकारी बैंक के सेवानिवृत्त बैंक मैनेजर श्री वीरेंद्र सक्सेना अपनी पत्नी नीरू सक्सेना के साथ विद्यालय में उपस्थित होकर ग्यारह हजार रुपये लागत की साठ जर्सियाँ बालिकाओं को वितरित की। साथ ही अन्य भामाशाहों द्वारा चालीस जर्सियों का वितरण किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित श्री प्रमोद कनेरिया ने परीक्षा में ए प्लस ग्रेड लाने वाली आठवीं की बालिकाओं को आठ सौ एक व पाँचवीं की बालिकाओं को पाँच सौ एक रुपये पुरस्कार में प्रदान करने की घोषणा की। कार्यक्रम में उपस्थित भामाशाह का सम्मान प्रधानाध्यापक प्रेम दाधीच द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर किया गया।इस आयोजन में सर्वश्री सरोज, रामसिया, सियाराम, मोहनसिंह, प्रियंका, कहकशा, दीपक, ओमसेन, पृथ्वीराज द्वारा बालिकाओं को कॉपी, पेन, पेन्सिल निशुल्क वितरण की गई। सभी उपस्थित भामाशाहों का प्रेम दाधीच द्वारा धन्यवाद दिया गया।

बीकानेर: कलावर्ग के विद्याथी का विज्ञान मॉडल राज्य स्तर पर तृतीय

बीकानेर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लालमदेसर बड़ा, नोखा, बीकानेर के कक्षा–बारहवीं (कला वर्ग) के छात्र राजाराम गोदारा के विज्ञान मॉडल (प्रादर्श प्रतियोगिता) को राज्य स्तर पर तृतीय स्थान मिला। इस राजकीय विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती उषा रानी हेमकार के अनुसार इस सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में स्थित राजकीय विद्यालय के छात्र लगातार 5 वर्षों से विज्ञान मेले में राज्य स्तर पर प्रतिनिधित्व करते हैं। वर्ष 2019–20 का राज्य स्तरीय विज्ञान मेले का

आयोजन राउमावि. सिहासन में हुआ। जिसमें छात्र राजाराम ने उपविषय– औद्योगिक विकास में अपशिष्ट जल शुद्धिकरण संयत्र का मॉडल बनाकर अपना प्रस्तुतीकरण दिया। इस वैज्ञानिक प्रतियोगिता में छात्र कला वर्ग का विद्यार्थी होते हुए भी राज्य स्तर पर मॉडल को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ जिससे छात्र ने अपनी ग्रामीण प्रतिभा का लोहा मनवाया। छात्र के इस मॉडल की विशेष बात यह रही कि छात्र ने इसमें अशुद्ध जल की बड़ी अशुद्धियों से लेकर छोटी–छोटी अशुद्धियों को पृथक करने, अम्लीय अशुद्धियों एवं तेलीय (चिकनाईयुक्त अशुद्धियों) को भी विभिन्न स्तरों पर फिल्टरों के माध्यम से पृथक कर जल को पूर्णत: शुद्ध करके बताया। इस प्रकार छात्र का यह पुन: चक्रण (Re-Cycle) मॉडल जल को शुद्ध कर पुन:उपयोग (Re-Use) लेने के लिए वरदान साबित होगा तथा इस प्रकार के जल शुद्धिकरण संयत्रों की स्थापना से जल के वैश्विक संकट से निजात मिलेगी।

बीकानेर : सामुदायिक बाल सभा का आयोजन

बीकानेर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शिवनगर में सामुदायिक बाल सभा का आयोजन कार्यवाहक प्रधानाचार्य व्याख्याता श्री अनुज अनेजा की अध्यक्षता में विद्यालय परिसर में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती के दीप प्रज्वलित कर की गई। बाल सभा को संबोधित करते हुए कार्यक्रम अधिकारी श्री मोहरसिंह सलावद ने आगामी दिनों में आयोजित होने वाली बोर्ड परीक्षाओं में टॉपर कैसे बना जाएँ के बारे में विस्तार से जानकारी दी। श्री सलावद ने कहा कि आप सबसे पहले अध्ययन कैसे करे और किस प्रकार करना चाहिए के बारे में तय करे उसके बाद कितने समय पढ़ना है। बाल सभा में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें प्रथम से लेकर तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में सर्वश्री मोहरसिंह सलावद, तेजपाल कोडेचा, सुजानसिंह राठौड़, रणछोड़ सिंह सोढ़ा, दयाराम, बहादुर सिंह, प्रेमसिंह, गणेशाराम आदि मौजूद रहे। इसी विद्यालय में अन्य कार्यक्रम में शाला में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रधानाचार्य श्री रूपेंद्र सिंह की अध्यक्षता में स्वेटर वितरण किए गए। श्री सलावद ने बताया कि विद्यालय में सर्दी को देखते हुए जरूरतमंद 30 बच्चों को स्वेटर वितरण किए गए। स्वेटर वितरण कार्यक्रम में शाला परिवार के सदस्य मौजूद रहे।

संकलन: प्रकाशन सहायक

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

अंतरिक्ष में छलांग के साथ चाँद छूने की कोशिश होगी

इसरो–इसरो के अंतरिक्ष मिशन के तहत गगनयान की पहली मानव रहित उड़ान व सैन्य मोर्चे पर स्पेस और साइबर एजेंसियों का गठन किया। 5 जी स्पेक्ट्रम की जिसमें संचार सेवाओं की शुरूआत आदि प्रमुख हैं। यह अंतरिक्ष यात्रियों को स्पेस मिशन पर भेजने के तहत पहली मानवरहित उड़ान होगी। 2022 तक अंतरिक्ष में मानव मिशन भेजने का फैसला किया है। इससे पहले दो मानव रहित उड़ानें होनी हैं जो 2020 के नवंबर-दिसम्बर में गगनयान की पहली मानव रहित उड़ान होगी और गगनयान अंतरिक्ष का चक्कर लगाकर वापस लौटेगा। नए साल में इसरो ने चंद्र मिशन को आगे बढ़ाते हुए चंद्रयान-3 की भी घोषणा की।

दृष्टिहीनता का भी इलाज किया जा सकेगा

तेल अवीव– दिमाग को पता है कि कैसे प्राकृतिक और कृत्रिम दृष्टि के बीच सामंजस्य बनाकर जानकारी का प्रसंस्करण किया जाए। एक हालिया शोध के अनुसार दिमाग दोनों तरह की दृष्टि में समन्वय बनाकर दृष्टिहीनता की समस्या को दूर कर सकता है। इससे उम्र से संबंधित माक्यूलर डिजेनेरेशन (एएमडी) नामक बीमारी को ठीक किया जा सकता है। पत्रिका करेंट बायोलॉजी में प्रकाशित शोध के अनुसार एएमडी पश्चिमी देशों में लाखों लोगों में दृष्टिहीनता का कारण बनता है। पश्चिमी देशों में इस कारण से 50 साल की उम्र के ऊपर के लोगों में दृष्टिहीनता की समस्या होती है। हालांकि फिलहाल एएमडी का इलाज मौजूद नहीं है। हालिया समय में कृत्रिम रेटिना प्रत्यारोपण के क्षेत्र में आए आधुनिक बदलाव के बाद इसके इलाज की दिशा में कदम उठाए गए है। आँखों की रेटिना के अंदर मौजूद लाइट रिसेप्टर रोशनी को सोखते हैं। इसके बाद जुटाई गई जानकारी प्रसंस्करण कर उसे दिमाग तक पहुँचा दिया जाता है।

हृदय की बीमारियों के लिए नया इलाज खोजा

वॉशिंगटन– शोधकर्त्ताओं ने एक हालिया शोध में एक ऐसे संभावित इलाज का तरीका खोज निकाला है जो हृदयाघात के बाद वाले दिल की बीमारियों के इलाज में कारगर साबित होगा। यह शोध वेस्टमीड इंस्टीट्यूट फॉर मेडिकल रिसर्च और यूनिवर्सिटी ऑफ सिडनी ने किया और इसे पत्रिका साइंस ट्रांसलेशन मेडिसिन में प्रकाशित किया गया है। शोध में बताया गया है कि प्रोटीन थेरेपी, जिसमें इंसान की प्लेटलेट्स से मिले ग्रोथ फैक्टर एबी (आरएचपीडीजीएफ-एबी) का इस्तेमाल किया गया। इससे हृदयाघात के बाद दिल की सेहत में सुधार देखा गया। हृदयाघात के बाद दिल के ऊतकों में घाव हो जाते हैं जिससे दिल की कार्यप्रणाली को नुकसान पहुँचता है। शोधकर्त्ताओं ने पाया कि हृदयाघात के मरीजों को जब आरएचपीडीजीएफ-एबी दिया गया तो ऊतकों में हुए घाव कम हो गए। इससे दिल के अंदर रक्त वाहिकाओं के निर्माण की प्रक्रिया तेज हुई और हृदय गति में आने वाली असामान्यताएँ दूर हुई।

दुनिया की पहली स्मार्ट हाईस्पीड ट्रेन शुरू हुई

बीजिंग– चीन ने 56,496 करोड़ रुपए की लागत से दुनिया की पहली स्मार्ट और हाईस्पीड ट्रेन शुरू की है। यह ट्रेन पूरी तरह से स्वचालित और ड्राइवर रहित है। 350 किलोमीटर की रफ्तार से चलने वाली इस ट्रेन में 5जी सिग्नल, वायरलेस चार्जिंग और स्मार्ट लाइटिंग समेत सभी सुविधाएँ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से जुड़ी हैं। बीजिंग से झांगजियाकौ के बीच 174 किलोमीटर का सफर इस ट्रेन ने 10 ठहरावों के साथ 47 मिनट में पूरा किया।

फल-फूल के रसायन कैंसर रोकेंगे

गोरखपुर– फल-फूल के रसायन और एटीफंगल दवा में इस्तेमाल होने वाले रसायन को मिलाकर बनी दवा खराब डीएनए में सुधार कर सकती है। इससे कैंसर का इलाज भी हो सकेगा। गोरखपुर के दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभाग ने यह फॉर्मूला खोजा है। प्रो. उमेश यादव के निर्देशन में दो शोधार्थियों ने पाँच साल तक यह रिसर्च की। इस शोध को एल्जेवियर के प्रतिष्ठित इंटरनेशनल जर्नल ने मान्यता दी है। शोध के निष्कर्षों पर जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय नई दिल्ली की बायोसाइंस लैब में टेस्ट शुरू हो गए हैं। डीएनए में स्थित जीन में परिवर्तन से कैंसर होता है। जीन की संरचना या व्यवहार बदलने पर शरीर उसे खुद ही ठीक करता है लेकिन जब एक साथ तमाम जीन में परिवर्तन हो तो उसे ठीक कर पाना शरीर की क्षमता से बाहर होता है। जीन परिवर्तन के चलते डीएनए खराब हो जाता है और शरीर की कोशिकाओं में असामान्य विकास होने लगता है। इसे ही कैंसर कहा जाता है।

दिमागी बीमारियों का तोड़ निकालेगा 'ब्रह्मा'

नई दिल्ली– देश के वैज्ञानिकों ने पहली बार ऐसा ब्रेन टेम्पलेट विकसित किया है जो भारतीय लोगों के मस्तिष्क की रचना के बारे में जानकारी देगा। इस ब्रेन टेम्पलेट की मदद से सिजोफ्रेनिया, अल्जाइमर, पार्किंसंस और अवसाद जैसे रोग की पहचान शुरूआती स्तर पर ही की जा सकेगी। हरियाणा के मानेसर में नेशनल ब्रेन रिसर्च सेंटर (एनबीआरसी) में न्यूरोइमेजिंग और न्यूरोस्पेक्ट्रोस्कोपी लैबोरेटरीज (एनआईएनएस) के वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री प्रवत मंडल के नेतृत्व में वैज्ञानिकों की एक टीम ने इस मस्तिष्क टेम्पलेट 'ब्रह्मा' को विकसित किया है। यह तकनीक दिमाग से जुड़ी बीमारियों की पहचान करने के लिए दिमाग के तनाव के स्तर और पीएच का उपयोग करती है। ब्रेन टेम्प्लेट मानसिक रोग की स्थिति में इंसान के मस्तिष्क की कार्यक्षमता को समझने के लिए विभिन्न मस्तिष्क छवियों का एक सकल प्रतिनिधित्व है, जो यह बताता है कि किसी खास स्थिति में मरीज का दिमाग किस तरह काम करता है।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

हमारे भामाशाह

> भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-व. संपादक**

राजसमंद

श्रीमती कस्तूरी बाई हजारी लाल जाट रा.उ.मा.वि. लोढ़ियाणा, पं.स. आमेट को श्री रतन लाल रेगर (अध्यापक) द्वारा 25,000 रुपये की लागत से निम्न सामग्री प्राप्त हुई- अम्बेडकर की तस्वीर एक जिसकी लागत 450 रुपये, आदर्श वाक्य फ्लेक्स बेनर फ्रेम दो लागत 360 रुपये, दीवार घड़ी एक लागत 350 रुपये, लोहे की सीढ़ी एक लागत 3,718 रुपये, पीपा पेटियाँ तीन लागत 300 रुपये, हारमोनियम एक लागत 10,000 रुपये, ढोलक एक लागत 2,000 रुपये, मजीरा जोड़ी दो लागत 400 रुपये, खरताल जोड़ी एक लागत 180 रुपये, खंजरी एक लागत 120 रुपये, मंजूषा एक लागत 2,500 रुपये, एल्यूमिनियम परात एक लागत 969 रुपये, स्टील तगारा एक लागत 652 रुपये, स्टील डिब्बे चार लागत 473 रुपये, चूहा पिंजरा एक लागत 100 रुपये, टी. स्पून बालकों हेतु 120 लागत 780 रुपये, स्टील धामा चार लागत 550 रुपये, स्टील चम्मच तीन लागत 175 रुपये, स्टील बाल्टी एक लागत 300 रुपये, आटा डिब्बा एक लागत 550 रुपये, ताले छोटे दो लागत 72 रुपये।

उदयपुर

रा.उ.मा.वि. जावड़ तह. मावली को जनसहयोग से निम्न सामग्री प्राप्त 20 टेबल-स्टूल लोहे की जिसकी लागत 20,000 रुपये, 25 डेस्क प्राप्त जिसकी लागत 15,000 रुपये, मल्टीमीडिया स्पीकर प्राप्त जिसकी लागत 8,500 रुपये, व्यास एकेडमी सीनियर सैकण्डरी स्कूल गडवाडा, भानसोल तह. मावली जिला उदयपुर से प्राप्त 25 टेबल-स्टूल लोहे की जिसकी लागत 35,000 रुपये।

बाड़मेर

रा.उ.मा.वि. दीनगढ़ पं. स. धनाऊ में श्री केशाराम सियाग (शा.शि.) द्वारा 6,21,121 रुपये से निम्न कार्य मुख्य प्रवेश द्वार, माँ शारदे प्रतिमा, स्लाइडिंग गेट, सिंगल गेट, रेम्प, उद्घाटन, अल्पहार एवं पारितोषिक राशि इत्यादि कार्य करवाए गए।

अलवर

रा.उ.मा.वि. बड़ौदामेव को सुश्री फत्तीमन द्वारा 20-20 लीटर के 10 केम्पर विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 6,200 रुपये, स्थानीय विद्यालय के स्टाफ के सहयोग से कक्षा 01 से 05 तक 125 बच्चों को गर्म जर्सी वितरण किया गया जिसकी लागत 18,000 रुपये तथा अन्य भामाशाहों से 2,00,000 रुपये विद्यालय को प्राप्त हुए।

भरतपुर

रा.उ.प्रा.संस्कृत विद्यालय कबई (नदबई) को श्री कर्मवीर सिंह अध्यापक से एक एचपी लेपटॉप 15.5, की बोर्ड माउस सहित प्राप्त जिसकी लागत 23,000 रुपये, श्री ज्ञान प्रकाश शर्मा से एक ऑफिस आलमारी प्राप्त जिसकी लागत 7,000 रुपये, श्री हेमसिंह (प्रधानाध्यापक) से एक लोहे की आलमारी सैट प्राप्त जिसकी लागत 16,000 रुपये, श्री कुलदीप सिंह (अध्यापक) से स्टील की गैस भट्टी रेगुलेटर सहित प्राप्त जिसकी लागत 1,500 रुपये तथा एक कम्प्यूटर टेबल प्राप्त जिसकी लागत 2,200 रुपये, श्री प्रताप सिंह से एक पंखा प्राप्त जिसकी लागत लागत 1,400 रुपये, श्री जदवीर सिंह (अध्यापक) से एक इलेक्ट्रोनिक बैल सिस्टम प्राप्त जिसकी लागत 2,600 रुपये तथा जिओ वाईफाई डिवाइस प्राप्त जिसकी लागत 1,000 रुपये, सर्व श्रीमती ममता कुमारी (अध्यापक), कुसुमलता (अ.), लक्ष्मी कुमारी (अ.) प्रत्येक से दो-दो कुर्सी प्राप्त जिसकी प्रत्येक की लागत 1,200-1,200 रुपये, श्री सत्येन्द्र सिंह निवासी दुधेरी से टीएलएम हेतु 3,600 रुपये नकद प्राप्त, श्री सतीश शर्मा से एक ओरियंट पंखा प्राप्त जिसकी लागत 1,500 रुपये।

सीकर

रा.उ.प्रा.वि भानीपुरा, नेहरों की ढाणी, पं. स. श्री माधोपुर को श्री जगदीश बोदूजी व श्री सांवर जी नेहरा द्वारा विद्यालय भवन रंग-रोगन करवाया गया जिसकी लागत 25,000 रुपये एवं दो कक्षा-कक्षों की छत मरम्मत करवाई गई जिसकी लागत 29,000 रुपये, सर्वश्री मुरलीधरजी, गोपालजी, रामचन्द्र जी, शंकरलाल जी नेहरा द्वारा कम्प्यूटर मय प्रिन्टर विद्यालय को सप्रेम भेंट जिसकी लागत 40,000 रुपये, सर्वश्री रामनाथजी, गोपालजी, बनवारी जी धायल द्वारा विद्यालय की छात्राओं को पोशाक एवं समस्त छात्र-छात्राओं को जूते-जुराब समस्त ग्रामवासियों के सहयोग से 30 छात्र हेतु फर्नीचर विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 30,000 रुपये तथा विद्यालय स्टाफ द्वारा एक ऑफिस चेयर भेंट जिसकी लागत 7,000 रुपये एवं दो विजिटर चेयर जिसकी लागत 5,000 रुपये, श्री कैलाश बगड़िया से दो स्पीकर प्राप्त जिसकी लागत 12,000 रुपये।

पाली

रा.बा.मा.वि. लम्बिया जैतारण को सुश्री गणपत चौधरी द्वारा विद्यालय में कक्षा 1 से 10 तक 271 ऊनी स्वेटर भेंट जिसकी लागत 51,000 रुपये तथा विद्यालय को एक प्रिंटर भेंट जिसकी लागत 14,000 रुपये।

चित्तौड़गढ़

रा.प्रा.वि महुड़ी बाला घर (गुन्दलपुर) को के.टी.आर.एस. मित्र मण्डल के रोहित जणवा एवं उनके मित्रों द्वारा विद्यार्थियों को आधुनिक तरीके से शिक्षण कार्य हेतु एक कम्प्यूटर सेट भेंट किया।

भीलवाड़ा

रा.उ.मा.वि. कुराड़िया तह. जहाजपुर को श्री सुरेश कुमार चौधरी से रंग रोगन हेतु 59,000 रुपये नकद प्राप्त हुआ, श्री घीसालाल गुर्जन (से.नि.प्र.अ.) से 5,000 रुपये नकद प्राप्त, श्री रामलाल मीणा (पूर्व सैनिक) द्वारा 30 टेबल-स्टूल विद्यालय को सप्रेम भेंट, विद्यालय के समस्त स्टाफ से 16 टेबल-स्टूल प्राप्त।

राजसमन्द

रा.उ.मा.वि., गलवा को श्री सम्पत खखड़ (प्रवासी-मुम्बई) द्वारा 100 टेबल एवं 100 स्टूल लोहे की विद्यालय को सप्रेम भेंट जिसकी अनुमानित लागत 1,50,000 रुपये।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : फरवरी, 2020 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादकः अनिल कुमार अग्रवाल, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

चित्रवीथिका : फरवरी, 2020

निदेशक श्रीमान हिमांशु गुप्ता, संयुक्त निदेशक नूतन बाला कपिला व अति. निदेशक रचना भाटिया प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशक राजस्थान, के मुख्य प्रासाशनिक भवन में बसंत पंचमी पर माता सरस्वती का अधिकारीगण तथा कार्मिकों के साथ सामुहिक पूजन करते हुए।

राजकीय यशवन्त उच्च माध्यमिक विद्यालय अलवर में आयोजित 47 वीं राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता 2019-20 निदेशालय बीकानेर के दल नायक आनन्द सिंह व विजेता कार्मिक ।

छात्र - ईशान कक्षा -12 विषय- जल संरक्षण राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लक्ष्मण डूंगरी, जयपुर

राजकीय सार्दुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर में 65 वीं राष्ट्रीय विद्यालयी तीरंदाजी (17वर्ष)कड़प्पा, आन्ध्रप्रदेश में छात्र-छात्रा वर्ग में राजस्थान टीम को 4 गोल्ड व 2 सिल्वर मेडल प्राप्त विजेता विद्यार्थीगण।

रा.उ.मा.वि.ऊँटवालिया (नागौर) के भामाशाह लक्ष्मीदेवी बालचन्द मोदी परमार्थ ट्रस्ट द्वारा विद्यालय के मुख्य दरवाजे का निर्माण मय लौहे का गेट का निर्माण करवाया जिसकी अनुमानित लागत 2.5लाख रुपये (अक्षरे ढाई लाख रुपये मात्र) है।

रा.उ.मा.वि. भीमरलाई, बालोतरा में गणतंत्र दिवस पर ध्वारोहण सरपंच श्री घेवाराम प्रजापत व प्रधानाचार्य श्री मोहनाराम चौधरी ने किया भामाशाह श्री मालाराम भूंकर ने100 टेबल स्टूल भेंट की तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

डूंगरपुर में स्काउट गाइड द्वारा राष्टीय युवा दिवस के अवसर पर स्वामी विवेकानन्द जी पर पोस्टर प्रतियोगिता का अयोजन किया। अन्य आयोजन पर प्रदर्शनी अवलोकन व शहीद दिवस पर श्रद्धाजंलि का अयोजन भी किया गया। जिनका संचालन सी.ओ. स्काउट श्री सवाई सिंह ने किया।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22

शिविरा पत्रिका (मासिक) • फरवरी, 2020
प्रकाशन तिथि : 2 फरवरी, 2020 पृष्ठ 52 • प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : **वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334011**